Weather Report
अधिकतम तापमान: 32.0c
न्यूनतम तापमान: 21.0c
हवा गति: 11 कि./घं.
जयपुर सूर्योदय समय
सुबह: 6.06

दैनिक
संजीवनी टुडे
sanjeevnitoday.com
समय के साथ बढ़ता अखबार

वर्ष: 11 अंक: 77 जयपुर, रविवार, 25 अगस्त 2024 पृष्ठ:8 मूल्य: ‘1.50

अब होगी सुर्खियों की बात संजीवनी टुडे के साथ
जन्मदिवस, वैवाहिक वर्षगांठ एवं नियुक्ति बधाई संदेश
मात्र 1100/- में
साईज 8X8 cm
संजीवनी टुडे
e-mail: sanjeevnitoday@gmail.com

केंद्र सरकार ने यूनिफाइड पेंशन स्कीम को मंजूरी दी

23 लाख केंद्रीय कर्मचारियों को फायदा, एक अप्रैल 2025 से लागू होगी

संजीवनी टुडे

नई दिल्ली। केंद्र सरकार न्यू पेंशन स्कीम की जगह अब केंद्रीय कर्मचारियों के लिए यूनिफाइड पेंशन स्कीम लेकर आई है। केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव ने शनिवार, 24 अगस्त को इसकी जानकारी दी। उन्होंने बताया कि कैबिनेट बैठक में इसे मंजूरी दी गई। ठघ्ट्ट एक अप्रैल 2025 से लागू होगी। यूपीएस से 23 लाख केंद्रीय कर्मचारियों को फायदा होगा। कर्मचारियों के पास यूपीएस या एनपीएस में से कोई भी पेंशन स्कीम चुनने का ऑप्शन रहेगा। राज्य सरकार चाहें तो वे भी इसे अपना सकती हैं। अगर राज्य के कर्मचारी शामिल होते हैं, तो करीब 90 लाख कर्मचारियों को इससे फायदा होगा। आखिरी वेतन की 50% पेंशन मिलेगी। 10 वर्ष से अधिक और 25 वर्ष से कम में रिटायर हुए तो आनुपातिक रूप से लाभ मिलेगा। कर्मचारी का योगदान 10% और सरकार का 18.5% होगा। एनपीएस की तरह बाजार से जुड़ा निवेश नहीं होगा, जबकि ओपीएस की तरह डीआर का प्रावधान रहेगा। एनपीएस वाले कर्मचारी भी शामिल हो सकेंगे। गणना मृत्यु के वक्त आखिरी महीने की बेसिक सैलरी से होगी। यूपीएस का फायदा वे भी ले सकेंगे, जो 2004 के बाद एनपीएस के तहत रिटायर हुए हैं। एरियर सरकार ब्याज के साथ देगी। ब्याज पीपीएफ के बराबर दर से मिलेगा।

बैठक में पीएम भी शामिल हुए

कैबिनेट की मीटिंग से पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने केंद्रीय कर्मचारियों के नेताओं के साथ अपने आवास पर बैठक की। कार्मिक मंत्रालय ने इसके संबंध में 21 अगस्त को एक नोटिस जारी किया गया था। ये घोषणा ऐसे समय पर हुई है, जब 2 राज्यों जम्मू-कश्मीर और हरियाणा में विधानसभा चुनाव होने हैं। पिछले 10 साल में यह पहली बैठक रही, जिसमें प्रधानमंत्री और केंद्रीय कर्मचारियों की नेशनल काउंसिल यानी जॉइंट कंसल्टेटिव मशीनरी के सदस्य शामिल हुए। बैठक में ओल्ड पेंशन स्कीम, न्यू पेंशन स्कीम और 8वें वेतन आयोग को लेकर चर्चा हुई। ये खर्च साल दर साल बढ़ता रहेगा। इसका बोझ कर्मचारी पर पड़ेगा? कर्मचारियों का योगदान 10% बना रहेगा। सरकार अपना योगदान 14% से बढ़ाकर 18.5% करेगी। वह हर 3 साल में समीक्षा करेगी कि क्या इसे बढ़ाया जाए। फैमिली पेंशन की सुविधा क्या है? कर्मचारी की मौत पर फैमिली पेंशन मिलेगी। जीवनसाथी को बेसिक सैलरी की 60% पेंशन मिलेगी।

न्यू पेंशन स्कीम से कैसे अलग है यूपीएस

इस योजना के न्यू पेंशन स्कीम और ओल्ड पेंशन स्कीम से किस तरह अलग होने के सवाल पर पूर्व कैबिनेट सेक्रेटरी टीवी सोमनाथन ने जवाब दिया कि यूपीएस पूरी तरह कॉन्ट्रिब्यूटरी फंडेड स्कीम है। (मतलब इसमें भी कर्मचारियों को एनपीएस की तरह 10% कॉन्ट्रिब्यूट करना पड़ेगा।) जबकि ओल्ड पेंशन स्कीम अनफंडेड कॉन्ट्रिब्यूशनरी स्कीम थी। (इसमें कर्मचारियों को किसी भी तरह का कॉन्ट्रीब्यूशन नहीं करना होता था।) लेकिन एनपीएस की तरह हमने इसे बाजार के भरोसे न छोड़कर फिक्स पेंशन की एश्योरटी दी है। यूपीएस में एनपीएस और एनपीएस दोनों के लाभ शामिल हैं। न्यू पेंशन स्कीम में कर्मचारी को अपनी बेसिक सैलरी का 10% हिस्सा कॉन्ट्रिब्यूट करना होता है और सरकार 14% देती है। अब सरकार अपनी तरफ से कर्मचारी की बेसिक सैलरी का 18.5 % कॉन्ट्रिब्यूट करेगी। कर्मचारी के 10% हिस्से में कोई बदलाव नहीं होगा। सोमनाथन ने बताया कि एनपीएस के तहत 2004 से अब तक रिटायर हो चुके और अब से मार्च, 2025 तक रिटायर होने वाले कर्मचारियों को भी इसका लाभ मिलेगा। जो पैसा उन्हें पहले मिल चुका है या वे फंड से निकाल चुके हैं, उससे एडजस्ट करने के बाद भुगतान किया जाएगा। सरकार की तरफ से कॉन्ट्रिब्यूशन 14% से 18.5% बढ़ाए जाने पर पहले साल 6250 करोड़ रुपए का अतिरिक्त खर्च आएगा।

असम गैंगरेप, मुख्य आरोपी की डूबने से मौत

कस्टडी से भागकर तालाब में कूदा, सुबह साढ़े 3 बजे क्राइम सीन पर लेकर जा रही थी पुलिस

संजीवनी टुडे

गुवाहाटी। असम के नगांव जिले में 14 साल की नाबालिग से गैंगरेप के मुख्य आरोपी तफजुल इस्लाम की शनिवार (24 अगस्त) को डूबने से मौत हो गई। वह पुलिस हिरासत से भागने के दौरान तालाब में कूद गया था। नगांव के सुपरिटेंडेंट ऑफ पुलिस स्वप्ननील डेका ने बताया कि आरोपी को शुक्रवार (23 अगस्त) को गिरफ्तार किया गया था। आज सुबह 3:30 बजे उसे घटनास्थल पर क्राइम सीन रिक्रिएट करने के लिए लेकर जा रहे थे। एसपी के मुताबिक, आरोपी ने एक पुलिसकर्मी पर हमला किया और हिरासत से भागकर तालाब में कूद गया। पुलिसकर्मी भी घायल हो गया और उसे अस्पताल में भर्ती कराया गया।पुलिस ने तुरंत सर्च ऑपरेशन शुरू किया। मौके पर एसडीआरएफ की टीम भी पहुंची। लगभग दो घंटे तलाश के बाद आरोपी का शव तालाब से बरामद किया गया। मृतक आरोपी के गांव बोरभेटी में लोगों ने उसके अंतिम संस्कार में भाग नहीं लेने का फैसला किया है। लोगों ने गांव के कब्रिस्तान में उसे दफनाने की इजाजत भी नहीं दी। गांव के एक बुजुर्ग मोहम्मद शाहजहां अली चौधरी ने न्यूज एजेंसी ष्ठक्र को बताया कि ग्रामीणों ने शनिवार सुबह बैठक कर तीन फैसले लिए हैं। हमने गांव के कब्रिस्तान में उसे दफनाने की अनुमति नहीं देने, उसके जनाजा (दफनाने की प्रकिया) में शामिल नहीं होने और उसके परिवार का सामाजिक बहिष्कार करने का फैसला किया है। बुजुर्ग ने कहा, गांव के युवक के अपराध ने हमें शर्मसार कर दिया है। हम उसे सामुदायिक कब्रिस्तान में दफनाने की इजाजत नहीं दे सकते। घटना के विरोध में गांव की मस्जिद से एक मार्च भी निकाला गया। नगांव के ढींग में गुरुवार (22 अगस्त) की शाम 14 साल की लड़की से तीन लोगों ने रेप किया था। पीड़ित अपनी साइकिल से ट्यूशन से घर लौट रही थी। इसी दौरान मोटरसाइकिल सवार तीन लोगों ने उसे घेर लिया और उसके साथ गलत काम किया। रेप के बाद आरोपी पीड़ित को एक तालाब के पास सड़क किनारे घायल और बेहोश हालत में छोड़कर भाग गए। स्थानीय लोगों ने उसे देखा और अस्पताल में भर्ती कराया। पुलिस को भी सूचना दी गई।

उदयपुर-जयपुर में तेज बारिश, हाईवे पर भरा पानी

जालोर में भारी बरसात में 5 लोग बहे,1 की मौत; पाली में नदी में बहा बुजुर्ग, लोगों ने बचाया

संजीवनी टुडे

जयपुर। राजस्थान के अलग-अलग इलाकों में तेज बारिश का दौर जारी है। राजधानी जयपुर में शनिवार शाम करीब 5 बजे मौसम बदला और तेज बरसात हुई। उदयपुर के खेरवाड़ा में दो घंटे हुई बारिश से हाईवे पर पानी भर गया। जालोर जिले में सुबह भारी बारिश हुई।तेज बारिश के कारण पहाड़ी में स्थित सुंधा माता मंदिर के रास्ते पर तेज बहाव के साथ पानी आ गया। अचानक आए पानी में 5 लोग बह गए। इसमें 1 महिला की मौत हो गई, वहीं एक लापता है। 3 को मौके पर मौजूद लोगों ने बचा लिया। धौलपुर के बसेड़ी में सेल्फी लेते समय पार्वती नदी में गिरे युवक को बचाने गए युवक की डूबने से मौत हो गई। पाली में सोजत से 8 किलोमीटर दूर सियाट गांव के बेरा बंदिया के पास सुकड़ी नदी की रपट पर एक बुजुर्ग बह गया। बेड़ा बंदिया निवासी शेषाराम (65) शनिवार दोपहर 2 बजे नदी पार कर रहा था। इस दौरान पानी के तेज बहाव में बहने लगा। इस दौरान पास में ही मौजूद युवाओं ने बुजुर्ग को बाहर निकाला। इससे पहले शुक्रवार को जोधपुर, धौलपुर, पाली, भीलवाड़ा समेत कई जिलों में तेज बारिश हुई। आज राज्य के 31 जिलों में बारिश का अलर्ट है। मौसम विशेषज्ञों के मुताबिक बंगाल की खाड़ी के साथ अरब सागर में लो-प्रेशर सिस्टम बनने से राजस्थान में अगले तीन-चार दिन भारी बारिश का दौर बना रहेगा। सुंधा माता मंदिर के रास्ते के दोनों तरफ पहाड़ी है। भारी बारिश के बाद पानी पहाड़ियों से रास्ते पर आ गया। जालोर में तेज बारिश के बाद झरना उफान पर आ गया। गुजरात और आसपास के कई लोग बारिश के दौरान यहां घूमने पहुंचे थे। उदयपुर के खेरवाड़ा में शनिवार दोपहर बाद दो घंटे हुई बारिश से हाईवे पर पानी भर गया। उदयपुर के झाड़ोल-ओगणा क्षेत्र में तेज बारिश हुई। इसके बाद काडा नदी बहने लगी। झरने में बही महिला के बाल पुल में लगे पाइप से उलझ गए और उसका शव काफी देर तक वहीं लटका रहा। बारिश थमने के बाद स्थानीय लोगों ने रेस्क्यू ऑपरेशन शुरू किया। महिला का शव निकाल लिया गया है।

दो सिस्टम बनने से तेज होगी बारिश

मौसम विज्ञान केन्द्र जयपुर के निदेशक राधेश्याम शर्मा ने बताया- इस समय भारत में दो लो-प्रेशर सिस्टम बने हैं। एक सिस्टम पश्चिम बंगाल के उतरी भागों और झारखंड के ऊपर है। इस कारण जयपुर, भरतपुर, कोटा, अजमेर, उदयपुर संभाग के अनेक स्थानों पर हल्के से मध्यम और कहीं-कहीं भारी बारिश की संभावना है। कोटा-उदयपुर संभाग में 25-26 अगस्त को कहीं-कहीं अति भारी बारिश होने और पश्चिमी राजस्थान के बीकानेर, जोधपुर संभाग के कुछ भागों में भारी बारिश की संभावना है।

एससी/एसटी एक्ट तभी लगेगा जब अपमान में जाति का जिक्र

सुप्रीम कोर्ट ने आरोपी को जमानत दी, दलित विधायक को माफिया डॉन कहा था

संजीवनी टुडे

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि अगर किसी अनुसूचित जाति-जनजाति के व्यक्ति को उसकी जाति का नाम लिए बगैर अपमानित किया गया है, तो यह मामला एससी/एसटी (अत्याचार निवारण) अधिनियम 1989 के तहत अपराध नहीं होगा। जस्टिस जेबी पारदीवाला और जस्टिस मनोज मिश्रा की बेंच ने एक ऑनलाइन मलयालम न्यूज चैनल के एडिटर शाजन स्कारिया को अग्रिम जमानत देते हुए यह फैसला सुनाया। स्कारिया पर 1989 एक्ट की धारा 3(1)(ट) और 3(1)(ठ) के तहत केस दर्ज हुआ था। उन पर आरोप था कि उन्होंने एससी समुदाय से आने वाले कुन्नाथुनाड के सीपीएम विधायक पीवी श्रीनिजन को माफिया डॉन कहा था। इस मामले में ट्रायल कोर्ट और केरल हाईकोर्ट ने उन्हें गिरफ्तारी से पहले जमानत देने से इनकार कर दिया था। 70 पेज का फैसला लिखते हुए जस्टिस पारदीवाला ने कहा कि केवल उन मामलों में जानबूझकर अपमान या धमकी दी जाती है, जो छुआछूत की प्रथा या ऊंची जातियों के निचली जातियों/अछूतों पर अपनी श्रेष्ठता साबित करने के लिए होते हैं।

कोर्ट ने कहा- वीडियो का एससी/एसटी समुदाय के लोगों से लेना-देना नहीं

आरोपी स्कारिया की तरफ से एडवोकेट सिद्धार्थ लूथरा और गौरव अग्रवाल ने दलीलें रखीं। जिसे मानते हुए सुप्रीम कोर्ट ने कहा- एससी/एसटी समुदाय के किसी सदस्य का जानबूझकर किया गया हर अपमान और उसे दी गई धमकी जाति आधारित अपमान नहीं माना जाएगा। हमें ऐसा कुछ नहीं मिला जो साबित करे कि स्कारिया ने यूट्यूब वीडियो में एससी/एसटी समुदाय के खिलाफ दुश्मनी या नफरत को बढ़ावा देने की कोशिश की है। वीडियो का एससी या एसटी के सदस्यों से कोई लेना-देना नहीं है। उनका निशाना केवल शिकायतकर्ता (श्रीनिजन) ही था। इन्हें 1989 एक्ट में अपमान या धमकी कहा जा सकता है। बेंच ने कहा कि अपमानित करने का इरादा वही है, जिसे कई विद्वानों ने हाशिए पर पड़ी जातियों के लिए बताया है। यह कोई साधारण अपमान या धमकी नहीं है जिसे अपमान माना जाए और जिसे 1989 के अधिनियम के तहत दंडनीय बनाने की मांग की गई है। माफिया डॉन के संदर्भ का हवाला देते हुए कोर्ट ने कहा- निंदनीय आचरण और अपमानजनक बयानों को देखते हुए, अपीलकर्ता (स्कारिया) के बारे में केवल यह कहा जा सकता है कि उसने आईपीसी की धारा 500 के तहत मानहानि का अपराध किया है।

पुणे में प्राइवेट कंपनी का हेलिकॉप्टर क्रैश, पायलट और तीन यात्री घायल

संजीवनी टुडे

भारी बारिश के बीच तकनीकी खराबी से हादसा होने की आशंका

पुणे। पुणे के पौड इलाके में शनिवार को एक हेलिकॉप्टर क्रैश हो गया। यह हेलिकॉप्टर मुंबई से हैदराबाद जा रहा था। इसमें पायलट और तीन यात्री सवार थे। हादसे में पायलट जख्मी हुआ है, उसे अस्पताल में भर्ती कराया गया है। बाकी तीनों लोगों को ज्यादा चोट नहीं आई हैं। पुणे रूरल पुलिस के सुपरिंटेंडेंट पंकज देशमुख ने बताया कि यह हेलिकॉप्टर मुंबई की ग्लोबल वेक्ट्रा हेलिकॉर्प कंपनी का था। आशंका है कि हेलिकॉप्टर तकनीकी खराबी की वजह से क्रैश हुआ। हादसे के पीछे भारी बारिश को भी वजह माना जा रहा है। हेलिकॉप्टर का मॉडल इड 139 है। पायलट का नाम कैप्टन आनंद है, जबकि तीन पैसेंजर्स धीर भाटिया, अमरदीप सिंह और एसपी राम हैं। ग्लोबल वेक्ट्रा हेलिकॉर्प कंपनी का हेलिकॉप्टर इड 139 पुणे के पौड गांव के पास क्रैश हुआ। हादसा होते ही गांववाले मौके पर पहुंचे और रेस्क्यू ऑपरेशन शुरू किया। क्रैश में हेलिकॉप्टर झाड़ियों के पास आकर गिरा और बुरी तरह डैमेज हो गया। हेलिकॉप्टर का सारा सामान घटनास्थल पर बिखरा पड़ा हुआ है। हादसे के बाद गांववालों ने चारों लोगों को हेलिकॉप्टर से बाहर निकाला। पायलट को अस्पताल ले जाया गया। लोगों ने खटिया पर लिटाकर घायलों का रेस्क्यू किया। महाराष्ट्र के महाड में 3 मई को शिवसेना (उद्धव गुट) की नेता सुषमा अंधारे का हेलिकॉप्टर क्रैश हुआ था। सुषमा अंधारे बारामती में महिला मेले में शामिल होने जा रही थीं। उनके हेलिकॉप्टर में चढ़ने से पहले ही हेलिकॉप्टर का बैलेंस बिगड़ गया और वो क्रैश हो गया। हादसे में कोई घायल नहीं हुआ। पुलिस ने बताया था कि क्रैश की वजह साफ नहीं है। जांच की जा रही है।

बदलापुर यौन शोषण केस, शरद पवार ने काली पट्टी बांधी

उद्धव बोले- कोर्ट ने महाराष्ट्र बंद पर रोक लगाई, लेकिन हमारी आवाज नहीं दबा सकती

संजीवनी टुडे

मुंबई/पुणे। बदलापुर यौन शोषण केस को लेकर महाविकास अघाड़ी शनिवार को विरोध प्रदर्शन कर रही है। एनसीपी के चीफ शरद पवार और उनकी बेटी सुप्रिया सुले पुणे में प्रदर्शन कर रहे हैं। उन्होंने हाथ पर काली पट्टी भी बांधी हैं। मुंबई में प्रदर्शन के दौरान उद्धव ठाकरे ने कहा- जब सरकार को लगा कि महाराष्ट्र बंद रहेगा तो उन्होंने अपने समर्थकों को कोर्ट में भेज दिया। हमारा मामला पिछले 2 साल से सुप्रीम कोर्ट में है। हमें तो तारीख पर तारीख मिलती है। कल कोर्ट ने दिखा दिया कि कोर्ट इतनी जल्दी फैसला ले सकता है। कोर्ट ने हमारे महाराष्ट्र बंद पर रोक लगाई, लेकिन कोर्ट हमारी आवाज नहीं रोक सकती। दरअसल, एमवीए ने बदलापुर मामले को लेकर महाराष्ट्र बंद का ऐलान किया था, लेकिन शुक्रवार को बॉम्बे हाईकोर्ट ने इस बंद पर रोक लगा दी। इसके बाद ख्ठ्ठइ ने शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शन करने का फैसला किया। ठाणे के बदलापुर के आदर्श स्कूल में 13 अगस्त को 2 बच्चियों के साथ यौन शोषण हुआ था। केस में पुलिस की लापरवाही की बात सामने आई थी, जिसे लेकर एमवीए ने महाराष्ट्र बंद का ऐलान किया था।

संजय राउत बोले- हमारी आवाज यूक्रेन तक जाएगी, जहां घ्ख्र घूम रहे

संजय राउत ने प्रदर्शन से पहले कहा- विरोध प्रदर्शन के जरिए हमारी आवाज यूक्रेन तक जाएगी, जहां घ्ख्र मोदी घूम रहे हैं। पीएम वहां की समस्या के साथ जुड़े हुए हैं। हमारी महाराष्ट्र की मां-बच्चियों पर अत्याचार हो रहा है, इसलिए हमने बंद की घोषणा की थी, लेकिन कोर्ट के फैसले का हम सम्मान करते हैं। पुणे में प्रदर्शन के दौरान सुप्रिया सुले ने कहा- मैंने ऐसी असंवेदनशील सरकार कभी नहीं देखी। मुंबई में कांग्रेस की महिला कार्यकर्ताओं ने भी मुंह पर काली पट्टी बांधकर नारेबाजी की। तेज बारिश के बीच मुंबई में शिवसेना भवन के सामने कांग्रेस कार्यकर्ता प्रदर्शन के लिए जुटे।उद्धव ने प्रदर्शन के दौरान कहा- एक तरफ बहनों पर अत्याचार हो रहा है और दूसरी तरफ ये लोग राखी बांध रहे हैं। हमने जो शक्ति एक्ट बनाया था, उसे राष्ट्रपति के पास भेज दिया गया है। मैं राष्ट्रपति से अपील करना चाहता हूं कि जो शक्ति एक्ट आपके ऑफिस में भेजा गया है, उस पर ध्यान दें उस कानून को लागू करवाएं। शरद पवार की बेटी और एनसीपी सांसद सुप्रिया सले ने कहा- प्रदेश में महिलाओं के खिलाफ अत्याचार की घटनाएं बढ़ रही हैं। लोगों में पुलिस का कोई डर नहीं है। मैं सरकार की निंदा करता हूं। मैंने इतनी असंवेदनशील सरकार कभी नहीं देखी। जब तक आरोपियों को गिरफ्तार नहीं किया जाता, हम विरोध करना बंद नहीं करेंगे। महाराष्ट्र विधानसभा के नेता प्रतिपक्ष और कांग्रेस नेता विजय वेडट्टीवार ने कहा- राज्य में कानून व्यवस्था की स्थिति नहीं है। हम सरकार के खिलाफ प्रदर्शन कर रहे हैं और महिलाओं के खिलाफ हो रही घटनाओं की ओर सरकार का ध्यान आकर्षित करने की कोशिश कर रहे हैं। लोगों के आंदोलन के बावजूद अगर राज्य में ऐसी घटनाएं हो रही हैं।

पीएम मोदी का आज महाराष्ट्र-राजस्थान दौरा

जलगांव में 11 लाख लखपति दीदीओं को सर्टिफिकेट बांटेंगे

संजीवनी टुडे

जलगांव/जोधपुर। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी रविवार (25 अगस्त) को महाराष्ट्र दौरे पर हैं। वे आज जलगांव पहुंचेंगे। यहां लखपति दीदी कार्यक्रम में शामिल होंगे। पीएम 11 लाख लखपति दीदीयों को सर्टिफिकेट बांटेंगे। साथ ही प्रधानमंत्री स्वयं सहायता समूहों को रिवॉल्विंग फंड और लगभग पांच हजार करोड़ का लोन भी जारी करेंगे। प्रधानमंत्री के जलगांव दौरे को लेकर मंत्री गिरीश महाजन ने शनिवार को कहा, कल प्रधानमंत्री मोदी जलगांव का पहला दौरा करेंगे। उनके तीसरे कार्यकाल में लखपति दीदी बनी करीड़ डेढ़ लाख महिलाएं कार्यक्रम में शामिल होंगी। महाराष्ट्र के अलावा पीएम मोदी राजस्थान भी जाएंगे। यहां वे जोधपुर में राजस्थान हाईकोर्ट के एक समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में शामिल होंगे। मोदी हाईकोर्ट संग्रहालय का उद्घाटन भी करेंगे। पीए मोदी शनिवार को ही पोलैंड-यूक्रेन के दौरे से वापस लौटे हैं। यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमिर जेलेंस्की ने कहा है कि अगर भारत और वहां के लोग रूस के प्रति अपना रवैया बदल लें तो यह जंग खत्म हो सकती है। तय कार्यक्रम में अनुसार, पीएम मोदी रविवार शाम को करीब 4 बजे जोधपुर एयरपोर्ट पहुंचेंगे। यहां से हाईकोर्ट परिसर में कार्यक्रम पर स्थल पर पहुंचेंगे। दोनों के बीच की दूरी करीब 4 किलोमीटर है। करीब दो घंटे तक इस कार्यक्रम में रहने के बाद पीएम मोदी दिल्ली के लिए रवाना हो जाएंगे। इसे लेकर पीएम ने अपने ड्ड अकाउंट से पोस्ट भी किया है। उन्होंने राजस्थान हाईकोर्ट को इसके लिए बधाई भी दी है। जोधपुर कलेक्टर गौरव अग्रवाल ने बताया- शहर में 2 घंटे तक पीएम नरेंद्र मोदी का कार्यक्रम रहेगा। उन्होंने बताया- हाईकोर्ट के प्लेटिनम जुबली समापन समारोह में शिरकत करेंगे। सुरक्षा व्यवस्था माकूल है। शहर में गश्त और सुरक्षा व्यवस्था को भी बढ़ा दिया गया है। इससे पहले प्रधानमंत्री मोदी 5 अक्टूबर 2023 को जोधपुर दौरे पर आए थे। तब पीएम ने जोधपुर में 5900 करोड़ रुपए की परियोजना का लोकार्पण और शिलान्यास किया था।

शाह बोले-मार्च 2026 तक देश से खत्म हो जाएगा नक्सलवादः कहा

रूथलेस रणनीति से वामपंथी उग्रवाद पर होगा अंतिम प्रहार, छत्तीसगढ़ में बना एक्शन प्लान

संजीवनी टुडे

रायपुर। केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने मार्च 2026 तक देश से नक्सलवाद खत्म करने की बात कही है। छत्तीसगढ़ के रायपुर में शनिवार को वामपंथी उग्रवाद पर उन्होंने समीक्षा की। इसके बाद उन्होंने कहा कि, अब समय आ गया है कि वामपंथी उग्रवाद की समस्या पर एक मजबूत रणनीति के साथ रुथलेस रणनीति के साथ अंतिम प्रहार किया जाए। समीक्षा बैठक में 7 राज्यों अफसरों के साथ शाह ने करीब 4 घंटे तक बातचीत की। मीटिंग में अलग-अलग राज्यों के डीजीपी, पैरा मिलिट्री फोर्स के चीफ और राज्य सरकार के सचिवों को बुलाया गया था। बैठक के बाद शाह ने कहा कि, वामपंथी उग्रवाद लोकतंत्र व्यवस्था के लिए चैलेंज है। अमित शाह ने बताया कि, आज की मीटिंग में छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने कुछ फैसले लिए हैं। जो लोग वामपंथी उग्रवाद के लंबे समय के प्रभाव के कारण निरक्षर रह गए हैं, उनको साक्षर बनाया जाएगा। चाहे उनकी आयु कोई भी हो। इसके लिए छत्तीसगढ़ सरकार और भारत सरकार का गृह मंत्रालय एक अभियान चलाएगा।

मीटिंग में इंफ्रास्ट्रक्चर पर भी फोकस

शाह ने कहा कि, नक्सल प्रभावित जिलों में केंद्र और राज्य सरकार की सभी योजना का सौ फीसदी काम हो इसे लेकर बैठक में चर्चा हुई। नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में इंफ्रास्ट्रक्चर के जो प्रोजेक्ट है उसकी प्रगति और प्रगति के रास्ते में जो अड़चन है इसको दूर करने के लिए हमने मीटिंग की है। भारत सरकार बस्तर से बीजापुर और दंतेवाड़ा से लेकर धमतरी तक कुरुक्षेत्र के विकास के लिए कटिबद्ध है। साथ ही शाह ने कहा कि, तेंदूपत्ता की खरीदी की पॉलिसी में भी हम परिवर्तन करेंगे और इसके साथ-साथ गत्रह के तर्ज पर ट्टत्रह बनाकर इसे ताकतवर बनाएंगे। जो दोष सिद्धी का प्रमाण है उसे भी बढ़ाएंगे। गृहमंत्री शाह ने कहा कि छत्तीसगढ़ सरकार सरेंडर पॉलिसी को भी अपडेट कर रही है, एक-दो महीने में इसकी घोषणा होगी। शाह ने कहा कि, मेरी सभी वामपंथी उग्रवाद में लिप्त युवाओं से अपील है कि भारत सरकार आपके और आपके क्षेत्र के विकास के लिए प्रतिबद्ध है। हथियार छोड़िए और एक नए युग का आगाज हुआ है इसको आप सभी मजबूती दीजिए। मैं आशा करता हूं कि हमने जो लक्ष्य तय किया है।

खबरें फटाफट

'अजीओ' पर लॉन्च हुआ ब्रिटिश फैशन ब्रांड 'एसोस'

संजीवनी टुडे

मुंबई। भारत के प्रमुख फैशन ई-टेलर 'अजीओ' ने ब्रिटिश फैशन ब्रांड 'एसोस' को भारत में पहली बार लॉन्च किया है। ग्लोबल फैशन में अपनी खास पहचान बनाने वाला यह ब्रांड अब भारतीय ग्राहकों के लिए विशेष रूप से अजीओ पर उपलब्ध होगा। एसोस ने अपने एसोस डिज़ाइन, एसोस एडिशन, एसोस ल्यूक्स और मिस सेलफ्रिज जैसे ब्रांड्स के 3000 से अधिक विकल्प पेश किए हैं, जिन्हें हर महीने नए कलेक्शन के साथ बढ़ाने का लक्ष्य है। अजीओ के सीईओ, विनीथ नायर ने कहा, ''भारत में अंतरराष्ट्रीय फैशन की बढ़ती मांग के बीच एसोस का आगमन सही समय पर हुआ है। यह कदम अजीओ की ब्रांड पोर्टफोलियो को और मजबूत करेगा।'' एसोस के सीईओ, जोस एंटोनियो रामोस ने कहा, ''अजीओ के माध्यम से भारतीय बाजार में प्रवेश कर हम बेहद उत्साहित हैं।'' एसोस के इस लॉन्च के साथ, अजीओ ने अपने अंतरराष्ट्रीय ब्रांड्स के पोर्टफोलियो को दोगुना कर दिया है।

भाजपा सदस्यता अभियान को लेकर बैठक कल

संजीवनी टुडे

राजगढ़(अलवर)। भारतीय जनता पार्टी मंडल राजगढ़ की सदस्यता अभियान को लेकर बैठक का मण्डल अध्यक्ष राहुल दीक्षित की अध्यक्षता में 26 अगस्त को प्रात 11 बजे तुषार मैरिज गार्डन कारोठ रोड राजगढ़ पर होगी। कार्यक्रम संयोजक प्रदीप शर्मा ने बताया कि कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जिला उपाध्यक्ष विष्णु शर्मा, राजगढ़-लक्ष्मणगढ़ के भाजपा प्रत्याशी बन्नाराम मीणा,जिला मंत्री मीना सैनी होंगी। बैठक में जिला पदाधिकारियों अभियान के प्रमुख उद्देश्यों जैसे दस करोड़ प्लस सदस्य बनाना, राष्ट्र निमार्ण की प्रतिज्ञा -विकसित भारत 2047, सर्व व्यापी भाजपा, सर्व स्पर्शी भाजपा - समाज के प्रत्येक वर्ग तक पहुंचना जैसे विषय पर चर्चा की जाएगी। कार्यक्रम में सभी भाजपा मण्डल पदाधिकारी जिला पदाधिकारी जनप्रतिनिधियों व समस्त भाजपा कार्यकर्ताओ को आमंत्रित किया गया है।

चैक अनादरण मामले में अभियुक्त को 24 लाख 33 हज़ार रुपये किया जुर्माना और 6 महीने की सजा

संजीवनी टुडे

चाकसू। यहां शनिवार को न्यायालय न्यायिक मजिस्ट्रेट क्रम 19 चाकसू पीठासीन अधिकारी कंचन सिंह राजावत ने चैक अनादरण मामले में फैसला सुनाते हुए आरोपी को 6 महीने की सजा और 24,33,000/- रुपए जुर्माना बतौर प्रतिकर परिवादी को अदा करने के आदेश फरमाए गए हैं। वहीं परिवादी के अधिवक्ता अमित बाहेती एडवोकेट ने बताया कि अभियुक्त बृजमोहन पारीक ने परिवादी महेश कुमार से वर्ष 2014 में 15 लाख रुपए नकद उधार लिए गए थे जिसकी अदायगी बाबत दिए गए चैक के रिटर्न हो जाने पर धारा 138 परक्राम्य लिखित अधिनियम 1881 के अपराध के आरोप में दोषसिद्ध किया जाकर उक्त प्रकरण में परिवादी के हक में फैसला सुनाते हुए अभियुक्त के विरुद्ध न्यायालय ने उक्त सज़ा का आदेश दिया गया है।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर धूमधाम से मनाया

संजीवनी टुडे

राजगढ़(अलवर)। शनिवार को कस्बे के समीपवर्ती गोठ गांव में स्थित जी.एस.पब्लिक स्कूल गोठ में कृष्ण जन्माष्टमी कार्यक्रम बड़ी धूमधाम से आयोजित किया गया। विद्यालय के निदेशक महेंद्र मीना ने बताया कि विद्यालय के नन्हे मुन्ने बच्चों के द्वारा श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व बड़ी श्रद्धा व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। बच्चों के द्वारा श्रीकृष्ण व राधा का रूप धारण कर सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दी। कार्यक्रम में विधालय के निदेशक महेंन्द्र मीना और रत्तीराम, वंशिका, कमलेश,दुर्गा, हिमानी, सलोनी, भूपेश, नन्दकिशोर, मुकेश पण्डा आदि लोग मौजूद रहें। कार्यक्रम के अंत में सभी बच्चों को फल वितरित किए गए।

भिवाड़ी में ज्वैलर की हत्या मामले में बदमाशों का सुराग नहीं, व्यापारी सड़क़पर, विधायक बालक नाथ को खरी-खोटी सुनाई

संजीवनी टुडे

अलवर। भिवाड़ी में ज्वेलर की गोली मारकर हत्या करने वाले बदमाशों का 15 घंटे बाद भी सुराग नहीं लग सका है। आरोपियों के एनकाउंटर की मांग को लेकर व्यापारियों ने स्टेट हाईवे-919 बंद किया। नाराज व्यापारियों ने मौके पर पहुंचे भाजपा विधायक बाबा बालकनाथ का भी घेराव किया और उन्हें खुब सुनाई। करीब 6 घंटे बाद दोपहर 3 बजे व्यापारियों ने धरना खत्म कर दिया। पुलिस ने आरोपियों को पकडऩे के लिए 72 घंटे का समय मांगा जिस पर सहमति बन गई। मंत्री संजय शर्मा ज्वैलर के रेवाड़ी स्थित घर पर गए ओर सांत्वना दी। शुक्रवार शाम को शहर के समतल चौक में कमलेश ज्वेलर्स में 5 बदमाशों ने लूट के बाद फायरिंग की थी। घटना में शोरूम मालिक जयसिंह (48) की मौत हो गई। वहीं, उनके भाई और गार्ड के भी गोली लगी थी। आरोपी करीब चार-पांच मिनट में पूरी वारदात कर हरियाणा की ओर भाग गए। शोरूम में घुसते ही मालिक पर किए वार शुक्रवार शाम करीब 7 बजे स्विफ्ट कार से पांच नकाबपोश ज्वलेरी शोरूम पहुंचे। उन्होंने शोरूम में एंट्री के साथ ही मालिक जयसिंह पर डंडे से ताबड़तोड़ वार किए। इसके बाद उसके बेटे वैभव और स्टाफ को भी मारपीट कर बंधक बना लिया। इससे पहले एक बदमाश ने बाहर खड़े गार्ड से मारपीट कर उसकी राइफल छीन ली। सभी को बंधक बनाकर दो बदमाशों ने तीन मिनट के भीतर लाखों की ज्वेलरी दो बैगों में भर ली। ज्वेलरी भरकर भागने की तैयारी कर रहे आरोपियों पर अचानक बाहर से जयसिंह के भाई मधुसूदन ने हमला कर दिया। इस बीच जयसिंह और स्टाफ के लोग भी बदमाशों पर टूट पड़े। अचानक हमले से घबराए पांचों बदमाश भागने लगे तो सभी ने उनका पीछा किया। छीना झपटी में जवेलरी से भरा एक बैग शोरूम में ही गिर गया। जबकि एक बैग लेकर वो बाहर की ओर भागे। कार में बैठने के दौरान एक आरोपी ने जयसिंह के सीने और कंधे पर गोली मार दी। उनके भाई मधुसुदन के भी सीने पर बदमाशों ने गोली मारी। वहीं, गार्ड पर भी फायरिंग की गई। पुलिस के अनुसार कुल 7 राउंड फायरिंग हुई थी। घायल जयसिंह को आसपास के दुकानदारों ने कार से हॉस्पिटल पहुंचाया, लेकिन रास्ते में उनकी मौत हो गई। वहीं, गार्ड सुजान सिंह को मारी गोली उनके कंधे से होती हुई रीढ़ की हड्डी में फंस गई। उन्हें गुरुग्राम रेफर किया गया है। जयसिंह के भाई मधुसुदन का भिवाड़ी में ही इलाज किया जा रहा है। उनके सीने से गोली निकाली गई है। हमले में जयसिंह के बेटे वैभव के सिर पर भी चोट आई है।

मौके पर पहुंचे पुलिस अधिकारियों ने बताया कि बदमाशों को पकडऩे के लिए दूसरे राज्यों में टीमें भेजी गई हैं। पुलिस ने बताया कि कि वारदात को अंजाम देने के बाद बदमाश चौकी के सामने ही हरियाणा भागे हैं। घटना स्थल से करीब डेढ़ किलोमीटर भिवाड़ी पुलिस थाना और दो किलोमीटर एसपी ऑफिस है। इसके बाद शहर के बीचोबीच लूट की वारदात से व्यापारियों में नाराजगी है। वारदात स्थल के पास की दुकान में शॉपिंग कर रही यूआईटी थाने की महिला हेड कॉन्स्टेबल ने घायलों की मदद की। शोर-शराबा सुनकर मौके पर पहुंची कविता की कार से घायल जयसिंह और मधुसुदन को गोपीनाथ हॉस्पिटल पहुंचाया गया। वहीं, अन्य घायलों को कॉन्स्टेबल ने लोगों की मदद से टेंपो के जरिए हॉस्पिटल भेजा। हमले के दौरान शोरूम के बाहर खड़े लोग वीडियो बनाते रहे, लेकिन किसी ने मदद नहीं की। परिवार से जुड़े लोगों का कहना है कि पूरा घटनाक्रम करीब 5 मिनट तक चला, सड़क़पर भीड़ भी जमा थी, लेकिन फिर भी बदमाश फरार हो गए। मृतक जयसिंह का घर शोरूम की ऊपरी मंजिल पर ही है। वहीं, उनके एक और भाई की भी ज्वेलरी शॉप है जो कुछ दूरी पर ही है। शनिवार सुबह हाईवे पर प्रदर्शन कर रहे व्यापारियों से मिलने पहुंचे तिजारा विधायक बाबा बालकनाथ को भी उनकी नाराजगी का सामना करना पड़ा। शनिवार सुबह से भिवाड़ी के बाजार घटना के विरोध में बंद रहा। व्यापारी सोना-तावडू हाईवे के बीच में बैठ गए। जिला प्रशासन और पुलिस के अधिकारी उनको समझाने पहुंचे, लेकिन वे आरोपियों के एनकाउंटर की मांग पर अड़े रहे। हाईवे से निकलने वाले ट्रैफिक को दूसरे रास्तों से डायवर्ट किया गया। व्यापारियों का कहना था कि उनका धरना कार्रवाई पूरी नहीं होने तक जारी रहेगा। हालांकि करीब 6 घंटे बाद दोपहर 3 बजे व्यापारियों ने धरना खत्म कर दिया। पुलिस ने आरोपियों को पकडऩे के लिए 72 घंटे का समय मांगा, जिस पर सहमति बन गई। घटना को लेकर पूर्व सीएम अशोक गहलोत ने सोशल मीडिया पर पोस्ट किया- भिवाड़ी में हुई डकैती एवं हत्या की घटना बेहद गंभीर है।

भाजपा के राज में अलवर सहित राजस्थान प्रदेश बना अपराधिस्तान नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली

कानून का इकबाल हुआ खत्म, भिवाड़ी के दो ही दिन के मामलों ने कानून व्यवस्था की खोली पोल

संजीवनी टुडे

अलवर/ जयपुर। नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली ने कहा कि अलवर सहित राजस्थान अब अपराधिस्तान बन चुका है। जूली बोले भिवाड़ी में एक दिन पहले आतंकवादियों का नेटवर्क और दूसरे दिन ही ज्वेलर्स की गोली मारकर हत्या ने कानून व्यवस्था की पोल खोल कर रख दी है। उन्होंने कहा कि यह गोलीकांड नहीं बल्कि राज्य सरकार की असफलता की कहानी है। उन्होंने कहा कि पिछले आठ माह में पूरे प्रदेश में अराजकता का जो माहौल पनपा है उससे प्रदेश का बच्चा-बच्चा सहमा हुआ है। जूली बोले बदमाशों में कानून नाम का खौफ खत्म हो गया है, बदमाश ऐसी वीभत्स घटनाओं को अंजाम देकर चले जाते हैं और पुलिस हाथ पर हाथ धरे बैठी रहती है। उन्होंने कहा कि घटना के 20 घंटे से ज्यादा बीत जाने के बाद भी अभी पुलिस खाली हाथ है। जूली बोले मीडिया रिपोर्ट के अनुसार बदमाश घटना को अंजाम देकर पुलिस चौकी के सामने से भागे थे। जूली ने आरोप लगाया कि विधानसभा और लोकसभा चुनाव में राजस्थान की भोली भाली जनता से भ्रामक बातें कर भाजपा ने सरकार तो बना ली लेकिन इस सरकार की विफलताओं पर अब प्रदेश का हर आदमी खून के आंसू रो रहा है।

उन्होंने कहा कि व्यापारियों से सरेआम लूट हो रही है तो कभी गोली मारकर उनकी हत्या की जा रही है।राइजिंग राजस्थान जैसे इवेंट कर आंकड़ों का मायाजाल दिखाकर व्यापारियों को निवेश के लिए प्रदेश में बुलाया जा रहा है पर ऐसे जंगलराज जैसी स्थिति में कौन व्यापारी राजस्थान में आने की हिम्मत करेगा। जूली बोले भिवाड़ी को औद्योगिक नगरी की पहचान दी परंतु अब यहां कभी आतंकवादी पकड़े जा रहे हैं तो कभी सरेआम व्यापारी से लूट और हत्या हो रही है। प्रदेश के मुख्यमंत्री दिल्ली यात्राओं पर व्यस्त हैं उनका प्रदेश की प्राथमिकताओं पर ध्यान ही नहीं है इसलिए राजस्थान में गृहमंत्री की नियुक्ति नितांत आवश्यकता है। जूली ने भिवाड़ी के घटना स्थल पर पहुंचकर पूरी जानकारी ली इसके बाद मृतक ज्वेलर्स के गांव पहुंचकर परिजनों को सांत्वना दी।

डॉ.हनुमान बराला के जन्मदिन पर 454 युवाओं ने जोश के साथ किया रक्तदान, जन्मदिन पर बधाई देने के लिए उमडे हजारों लोग

संजीवनी टुडे

चौमूं। प्रदेश कांग्रेस कमेटी राजस्थान के सचिव, हेल्पिंग हैण्ड्स सोसायटी के संरक्षक एवं उत्तरी राजस्थान में चिकित्सा के क्षेत्र में सिरमोर चौमूं के बराला हॉस्पिटल एण्ड रिसर्च सेंटर के निदेशक एवं जन–जन के लाडले डॉ. हनुमान बराला के 46वें जन्मदिन पर शुभकामनाएं देने हजारों लोगों का हुजूम उमड पडा। डॉ.बराला जिन्हें यूथ आइकॉन के रूप में जाना जाता है की लोकप्रियता का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि उनके जन्मदिन पर दूर–दराज के गांवों व शहरों से हजारों की संख्या में बुजुर्ग व युवा जिनमें सैकडों की संख्या में महिलाएं भी शामिल थी ने व्यक्तिगत रूप से उपस्थित होकर उन्हें बधाई दी। इस अवसर पर प्रदेश व स्थानीय कांग्रेस के कई वरिष्ठ नेताओं और कार्यकर्ताओं ने भी डॉ.हनुमान बराला को शुभकामनाएं दी और उनके दीर्घायु एवं उज्जवल भविष्य की कामना की। इस दौरान बधाई देने आए लोगों ने उनके नेतृत्व की प्रशंसा करते हुए कहा कि डॉ.हनुमान का समर्पण और मेहनत ही उन्हें एक सच्चा जननेता बनाती है। इधर डॉ.हनुमान का 46वें जन्मदिन पर बीती रात से ही उन्हें बधाई देने वालों का तांता लगा रहा। सुबह 8 बजे से ही डॉ.हनुमान प्रदेश के कोने–कोने से बराला हॉस्पिटल में आए लोगों से भेंट कर उनकी बधाई स्वीकार करते रहे। इस दौरान डॉ.हनुमान ने अपने शुभचिंतकों की ओर से लाए गए दो दर्जन केक कांटे। इस दौरान हजारों लोगों ने डॉ.बराला को ट्विटर, व्हाट्सएप, फ़ेसबुक, इंस्टाग्राम के माध्यम से भी बधाई एवं शुभकामनाएं प्रेषित की। इस दौरान लोगों ने माल्यार्पण, साफा, प्रतिक चिन्हन व मुंह मिट्ठा कराकर डॉ.हनुमान को जन्मदिन की बधाई देकर दीर्घायु की कामना की। बधाई देने आने वालों का सिलसिला देर रात तक जारी रहा। इस दौरान डॉक्टर्स, शिक्षक, जनसेवा में जुड़े लोगों ने डॉ.बराला को बधाई दी।

जन्मदिन पर आयोजित रक्तदान में 454 यूनिट रक्त एकत्रित

इधर डॉ.हनुमान के प्रशंसकों की ओर से आयोजित किए गए स्वैच्छिक रक्तदान शिविर में 454 यूनिट रक्त एकत्र किया गया। बराला हॉस्पिटल परिसर में डॉ.हनुमान बराला के सानिध्य में आयोजित हुए रक्तदान शिविर में रक्तदाताओं की हौंसला अफजाई करने दूर–दराज से हजारों लोग पहुंचे। जिसमें महिलाएं भी पीछे नहीं रही और महिलाओं ने भी उत्साह के साथ रक्तदान शिविर में हिस्सा लेकर रक्तदान किया। इस मौके पर डॉ.हनुमान बराला ने कहा कि रक्तदान जैसा कोई दान नहीं हैं क्योंकि रक्त की एक एक बूंद किसी असहाय की जिंदगी बचा सकती है। इस दौरान डॉ.हनुमान व अतिथियों ने रक्तदान करने वाले रक्तदाताओं को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया। डॉ.हनुमान बराला ने रक्तदान शिविर के सफल आयोजन के लिए कार्यकर्ताओं का तहेदिल से आभार जताया और कहा कि आज वे अपने माता-पिता एवं भाईयों एवं सभी के आशीर्वाद व सहयोग से इस मुकाम पर पहुंचे हैं। इस मौके पर डॉ.हनुमान ने चिकित्सा के क्षेत्र के साथ-साथ सभी क्षेत्रों में जरूरतमंदों के लिए हमेशा तत्पर रहने की बात कही। कार्यक्रम में चौमूं, शाहपुरा, आमेर, जालसू, रेनवाल आदि क्षेत्र के हजारों की तादात में लोगों ने शिरकत की। डॉ.हनुमान बराला ने अपने जन्मदिन की शुरूआत सुबह हॉस्पिटल पहुंच अपने माता-पिता के चित्र के समक्ष पुष्प अर्पित कर वंदन कर किया। साथ ही बडे भाई डॉ.ग्यारसी लाल बराला, डॉ.बी.एल.बराला, डॉ.श्रवण बराला का आशीर्वाद लिया।

सुंधामाता पर्वत पर तेज बारिश, पानी के वेग के साथ बहे पांच यात्री

संजीवनी टुडे

भीनमाल। सुंधामाता पर्वतीय क्षेत्र में शनिवार को तेज मूसलाधार बारिश से पांच यात्री पानी के साथ बह गए जानकारी के अनुसार गुजरात व डूंगरपुर से दर्शन के लिए सुंधा माता आए हुए थे।रामदेवरा दर्शन के बाद सुंधामाता के दर्शन के लिये आये थे।वहीं सुबह दर्शन कर चीढियो से नीचे उतर रहे थे। तभी अचानक पानी का वेग बढ़ने से झरने वहीं चीढियो में पानी तेज वेग से बहने लगा पानी का बहाव इतना तेज था कि दर्शन कर नीचे उतर रहे यात्री इसकी चपेट में आकर बह गए जानकारी मिलते ही सुंधामाता चौकी स्टाफ,चामुंडामाता ट्रस्ट के कर्मचारी व दुकानदारों ने मौके पर पहुंच कर रेस्क्यू कर घायलों को बाहर निकाल कुल पांच लोग थे।जिसमें एक महिला श्रद्धालु की मौत हो गई।वही तीन घायल हो गए वही एक को काफी खोजने के बाद भी नहीं मिला। प्रशासन की ओर से रेस्क्यू जारी है।एसडीआरएफ़ टीम एंव सिविल डिफ़ेन्स टीम का सर्व ऑपरेशन जारी है। वही घायलों को जसवंतपुरा सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पर लाया गया।जहां उपचार कर उन्हें आगे रेफर किया गया। जानकारी मिलते ही सुंधापर्वत एसपी ज्ञानचंद यादव,अतिरिक्त जिला कलेक्टर दौलतराम चौधरी,ध पुलिस उप अधीक्षक अन्नराजसिंह राजपुरोहित, थानाधिकारी प्रतापसिंह,उपखंड अधिकारी रामलाल मीणा,आरआई सीपी सेन, पटवारी मौके पर भी कर निरिक्षण किया।

हादसे में यह हुए घायल

दर्शन कर आ रही लक्ष्मी देवी पत्नी प्रेमचंद जाति अहारी उम्र 45 साल निवासी गटाऊ तहसील दौवड़ा जिला डूंगरपुर पानी के तेज बहाव आने से मौके पर ही मौत हो गई।वही लक्ष्मी देवी पत्नी काऊआ जाति रोत उम्र 50 साल निवासी महुदी जिला डूंगरपुर, भावेश पुत्र कालुभाई उम्र 23 निवासी रूपवती तहसील विरमगाव जिला अहमदाबाद गुजरात व बालू सिंह पुत्र दीप सिंह जाति सोडा राजपूत निवासी बेरिया की मुआदी तहसील महूदा जिला खेड़ा गुजरात तीन जने घायल हो गए।जिन्हे उपचार के लिए जसवंतपुरा के सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र पर लाया गया।वही घायल भावेश के पैर हाथ में गंभीर चोट आने से उन्हें प्राथमिक उपचार कर गुजरात रैफर किया गया।

ट्रस्ट कर्मचारियों एंव दुकानदारो ने किया रेस्क्यू-

दर्शन कर लौट रहे पांच श्रद्धालु के बहने की खबर मिलते ही ट्रस्ट के व्यवस्थापक जितेन्द्रसिंह राठौड़, पुलिसकर्मी महिपालसिंह, रामनिवास,भंवरसिंह रावणा राजपूत, हड़मतसिंह देवल,ईश्वर सिंह देवड़ा, भगाराम देवासी, अर्जुनसिंह सोलंकी, शिवसिंह बड़गांव, कांतिनाथ, किरण राणा, खंगाराराम, हड़मताराम राणा, अशोकगिरी, बाबू देवासी, श्रवणसिंह ने तत्परता दिखाते हुए घायलों को बाहर निकाला वही समाचार लिखे जाने तक पानी के साथ बहे एक की तलाश जा रही है। एसडीआरएफ टीम ने किया सर्व ऑपरेशन-सुचना के बाद ही जालोर से सिविल डिफ़ेन्स टीम मौके पर पहुंच झरने में तलाश की गई। उसके बाद एसडीआरएफ टीम भी मौके पर पहुंच सर्व ऑपरेशन शुरू किया पर समाचार लिखते जाने तक कुछ हाथ नहीं लगा। एसडीआरएफ टीम में हैड कांस्टेबल मोतीसिंह,श्यामलाल, फुसाराम, रामलाल, सुरेश कुमार, रमेशकुमार, बीरबलराम, दिलीप, दिलीपसिंह, सुभाष, रामकुमार सहित सिविल डिफ़ेन्स टीम के सदस्य मौजूद रहे।

इनका कहना है...

एसपी ज्ञानचंद यादव ने बताया कि शनिवार सुबह 9 बजे के करीब सुंधामाता पहाड़ी क्षेत्र में भारी बारिश हुई। जिसमें बारिश के दौरान दर्शन के लिए पहाड़ी के ऊपर जो लोग आ रहे थे।जिसमें पांच श्रद्धालु तेज पानी के बहाव में बह गए जिसमें एक महिला की मौत हुई है मौके पर पहुंची पुलिस टीम एवं एसडीआरएफ टीम की की ओर से स्थानीय लोगों की मदद एवं मंदिर ट्रस्ट के लोगों की सहायता से तीन घायल लोगों को सुरक्षित बाहर निकाल दिया गया एवं एक अन्य लापता है।जिसकी तलाश जारी है पानी के बहाव में बहने से एक महिला की मौत हुई है। एसपी ज्ञानचंद यादव ने बताया कि फिलहाल अन्य कोई नुकसान की प्रथम दृष्टि या कोई जानकारी नहीं मिली है इसके अलावा पहाड़ी से पानी के तेज बहाव से मिट्टी और लकड़िया आई है। नीचे पास में जहां रास्ते में दुकान लगती है वहां आवागमन कुछ अवरोध हुआ है बाकी पहाड़ी क्षेत्र पर आने वाली सीढ़ियों पर पानी के तेज बहाव से श्रद्धालुओं को नुकसान पहुंचा है।

ज्ञानचंद यादव-पुलिस अधीक्षक जालोर

घटना दुःखद है मुझे जैसे ही इस घटना की जानकारी मिली मैने तुरंत व्यवस्थापक जितेंद्रसिंह सहित स्टाफ को मौके पर भेजा। ट्रस्ट के स्टाफ एंव दुकानदारों के सहयोग से 3 यात्रियों का रेस्क्यू कर बाहर निकाला।

ईश्वरसिंह देवल
अध्यक्ष (चामुंडामाता ट्रस्ट)

पीएम-कुसुम-कम्पोनेन्ट बी योजना के तहत कृषि कनेक्शन हेतु लगा सकते है सौर ऊर्ज़ा पम्प संयंत्र

सौर ऊर्ज़ा पम्प संयंत्र लगाने पर मिल रहा है 60 प्रतिशत अनुदान

संजीवनी टुडे

पीएम-कुसुम-कम्पोनेन्ट बी योजना के तहत कृषि कनेक्शन हेतु लगा सकते है सौर ऊर्ज़ा पम्प संयंत्र

अलवर । कृषि विद्युत कनेक्शन के अभाव में डीजल इंजन चलित पंप से खेतों में सिंचाई कर रहे किसानों के लिए प्रधानमंत्री किसान ऊर्ज़ा सुरक्षा एवं उत्थान महाभियान (पीएम-कुसुम) स्टैण्ड अलोन सौर ऊर्ज़ा पम्प परियोजना (कम्पोनेन्ट बी) एक सुनहरा अवसर है। बिजली कटौती एवं कृषि कनेक्शन में होने वाली देरी से छुटकारा मिलने के साथ ही केन्द्र एवं राज्य सरकार द्वारा दिए जा रहे अनुदान का लाभ उठाते हुए सौर ऊर्ज़ा पंप संयंत्र लगाने का मौका इस योजना के माध्यम से किसानों को मिल रहा है। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा प्रदेश के किसानों को पीएम कुसुम योजना से लाभान्वित कराने हेतु विद्युत विभाग को दिये गए निर्देश के तहत सभी पात्र किसानों को जागरूक कर इस योजना से जोड़े ताकि किसानों को हर मौसम में निर्बाध विद्युत मिल सके तथा परम्परागत विद्युत निर्ममे लगने वाले कोयले की बचत हो सके जिससे पर्यावरण संरक्षण होगा और किसानो सस्ती विद्युत मुहैया हो सकेगी।

क्या है पीएम कुसुम कम्पॉनेट बी योजना

पीएम-कुसुम-कम्पोनेन्ट बी के तहत कृषकों को 3, 5 एवं 7.5 हॉर्स पावर क्षमता के सौर ऊर्ज़ा पंप संयंत्र लगाने पर 60 प्रतिशत अनुदान दिया जा रहा है। इसमें 30 प्रतिशत अनुदान केन्द्रीय मद से जबकि 30 प्रतिशत राज्य मद से है। अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति के कृषकों को राज्य मद से 45 हजार रूपए प्रति कृषक प्रति संयंत्र अतिरिक्त अनुदान मिलेगा। पंप संयंत्र की कुल लागत की 40 प्रतिशत राशि कृषक द्वारा स्वयं वहन की जाती है। कृषक अपनी हिस्सा राशि का 30 प्रतिशत तक बैंक से ऋण प्राप्त कर सकते हैं। सौर ऊर्ज़ा पंप संयंत्र के लिए भारत सरकार के नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्ज़ा मंत्रालय से निर्धारित दरों पर अनुबंधित/सूचीबद्ध फर्म द्वारा स्थापित किए जाने पर ही अनुदान देय होगा। आपूर्तिकर्ता फर्म का चयन कृषक द्वारा किया जाएगा। अनुदान राशि का

भुगतान उद्यान विभाग द्वारा संबंधित आपूर्तिकर्ता फर्म को दो चरणों में किया जाता है। अनुबंधित फर्म द्वारा सौर ऊर्ज़ा पंप संयंत्र कृषक के खेत पर स्थापित किए जाने का सत्यापन कमेटी द्वारा सत्यापन किए जाने के पश्चात पंप संयंत्र की 90 प्रतिशत (40 प्रतिशत कृषक हिस्सा एवं 50 प्रतिशत अनुदान राशि) राशि का भुगतान देय होगा। शेष राशि का भुगतान दूसरे चरण में होगा। पीएम कुसुम योजना कंपोनेंट-बी के तहत वर्ष 2023-24 के लिए राज्य के समस्त जिलों में कुल मिलाकर एक लाख सौर ऊर्ज़ा पंप संयंत्र स्थापित करने का लक्ष्य तय किया गया है।

आवेदन की प्रक्रिया एवं स्वीकृति

सौर ऊर्ज़ा पंप संयंत्र के लिए कृषकों द्वारा राजकिसान साथी पोर्टल पर ई-मित्र या स्वयं अपनी एसएसओ आईडी से आवेदन कर सकते है। पोर्टल पर प्राप्त आवेदनों की ऑनलाइन छंटनी जिला कार्यालयों द्वारा की जाएगी एवं तकनीकी सर्वे के लिए आवेदन संबधित फर्म को भेजा जाएगा। फर्म द्वारा कृषक के जलस्त्रोत का तकनीकी सर्वे कर सर्वे रिपोर्ट एवं संयंत्र का कोटेशन पोर्टल पर अंकित कर उद्यान विभाग के जिला कार्यालय को ऑनलाइन प्रस्तुत किया जाएगा। जिला कार्यालय द्वारा कृषक की ऑनलाइन प्रशासनिक स्वीकृति जारी की जाएगी। स्वीकृति जारी होने के बाद कृषक द्वारा उसके हिस्से की 40 प्रतिशत राशि राजकिसान साथी पोर्टल पर दिए गए लिंक के माध्यम से ई-मित्र अथवा ईसीएस/डीडी के माध्यम से जिला हॉर्टीकल्चर डवलपमेंट सोसायटी के बैंक खाते में जमा कराई जाएगी। राशि जमा होने के बाद जिला उद्यान कार्यालय द्वारा ऑनलाइन कार्यादेश जारी किया जाएगा। फर्म द्वारा सोलर पंप संयंत्र स्थापित कर पंप का विस्तृत विवरण राजकिसान साथी पोर्टल पर डाला जाएगा। संयंत्र का बिल जारी कर स्केन किया जाएगा साथ ही फर्म द्वारा संयंत्र का बीमा कराया जाएगा जिसकी प्रति ऑनलाइन पोर्टल पर स्केन की जाएगी। जिला हॉर्टीकल्चर डवलपमेंट सोसायटी स्तर से संयंत्र स्थापना के 7 दिन में संयंत्र का निर्धारित मोबाइल एप से भौतिक सत्यापन किया जाएगा। आवश्यक दस्तावेज - ऑनलाइन आवेदन से पहले कृषक सुनिश्चित करें कि उनके पास जनाधार कार्ड, भूमि की जमाबंदी या पासबुक की प्रतिलिपि (भू-स्वामित्व), सिंचाई जल स्त्रोत उपलब्धता एवं विद्युत कनेक्शन नहीं होने का शपथ ऑनलाइन स्वघोषित उपलब्ध है।

योजना की पात्रता

योजना में यथासम्भव लघु एवं सीमान्त कृषकों को प्राथमिकता दी जाएगी। कृषक के पास न्यूनतम 0.4 हैक्टेयर भूमि का भू-स्वामित्व होना आवश्यक है। अधिसूचित अनुसूचित जनजाति क्षेत्र के जनजाति कृषकों के पास 3 व 5 एचपी क्षमता के पंप संयंत्र के लिए 0.2 हैक्टेयर भूमि का स्वामित्व होना आवश्यक है। विद्युत कनेक्शन विहिन कृषक जिनके भू-स्वामित्व में सिंचाई हेतु जल संग्रहण ढांचा, डिग्गी, फार्म पौण्ड एवं जलहौज निर्मित हों उन्हें शपथ पत्र प्रस्तुत करना होगा। कृषक द्वारा जल स्त्रोत उपलब्ध होने एवं डीजल चलित संयंत्र से सिंचाई करने का स्व-घोषित शपथ पत्र भी प्रस्तुत किया जाएगा। पात्र कृषक द्वारा कृषि एवं उद्यानिकी फसलों में सिंचाई हेतु ड्रिप मिनि स्प्रिंकलर माइक्रो स्प्रिंकलर संयंत्र उपयोग में लेना आवश्यक है। लाभांवित कृषकों की सूची उद्यान विभाग द्वारा विद्युत विभाग को भेजी जाएगी। जिन कृषकों के पास पहले से कृषि विद्युत कनेक्शन है या सौर ऊर्ज़ा पंप संयंत्र परियोजना के अंतर्गत पहले अनुदान प्राप्त कर लिया है वे इस योजना के तहत पात्र नहीं होंगे। पीएम कुसुम-कंपोनेंट बी योजना भारत सरकार के नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्ज़ा मंत्रालय के तत्वाधान में राज्य सरकार के उद्यान विभाग द्वारा क्रियान्वित की जा रही है।

खबरें फटाफट

बड़ी सादड़ी में 2 दिन बंद रहेगी मंडीः सोमवार को जन्माष्टमी के मौके पर रहेगा अवकाश, 27 अगस्त को खुलेगी मंडी

■ संजीवनी टुडे

बड़ी सादड़ी। बड़ी सादड़ी कृषि मंडी में रविवार से सोमवार तक 2 दिन अवकाश रहेगा। जिसके कारण नीलामी कार्य बंद रहेगा। मंडी अध्यक्ष जीवनलाल नागौरी ने किसानों से अपील की है कि वे इस दौरान मंडी में अपना अनाज लेकर न आएं। मंडी सचिव पंकज पारख ने जानकारी दी कि 25 अगस्त को रविवार और 26 अगस्त को जन्माष्टमी के उपलक्ष्य में मंडी में अवकाश रहेगा। मंडी अध्यक्ष जीवन लाल नागोरी ने किसानों से अपील की है कि वे इन 2 दिनों में अपना अनाज मंडी लेकर न आएं, क्योंकि नीलामी कार्य इन दिनों नहीं होगा। मंडी 27 अगस्त, मंगलवार से वापस चालू हो जाएगी।

बेटे के हत्यारे पिता और भाई को किया गिरफ्तारः रक्षाबंधन की रात को हुआ था झगड़ा, कुल्हाड़ी मार कर किया था मर्डर

■ संजीवनी टुडे

उदयपुर। जिले के झाड़ोल थाना क्षेत्र के मोहम्मद फलासिया के घाटा फला में रक्षाबंधन की रात को पिता-पुत्र में हुए झगड़े के बीच बेटे की हत्या के मामले में पुलिस ने पिता और भाई को गिरफ्तार किया है। थानाधिकारी रतन सिंह ने बताया की इस मामले में पुलिस ने आरोपी देवा पुत्र कुकिया डूंगरी व उसके पुत्र पिंटू लाल को गिरफ्तार कर कोर्ट में पेश किया जहा से उन्हें कोर्ट ने रिमांड पर भेज दिया। रिमांड पूरा होने पर दोनों को जेल भेज दिया गया। उन्होंने बताया कि रक्षाबंधन की रात को थाना क्षेत्र के मोहम्मद फलासिया गांव के घाटा फला में रहने वाले लक्ष्मण लाल डूंगरी से घर के सामने ही रहने वाले पिता देवा गाली गलौज करने लगे। मध्य रात्रि तक लगातार झगड़े के बीच लक्ष्मण गुस्से में पिता से बात करने घर से बाहर निकला और पिता के घर के आंगन में चला गया। पिता देवा और उसका छोटा भाई पिंटू ने लक्ष्मण पर कुल्हाड़ी से हमला कर दिया। गंभीर घायल लक्ष्मण ने वही दम तोड़ दिया। इधर शोर सुनकर मृतक की पत्नी सुशीला मौके पर पहुंची और ग्रामीणों को बुलाया। बाद में सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची। मृतक की पत्नी की रिपोर्ट पर पुलिस ने मामला दर्ज किया था। रिपोर्ट में शराब के नशे में पति के साथ झगड़ा करने का आरोप लगाया गया है।

राहगीर से की गई लूट का खुलासा, 02 अभियुक्त गिरफ्तार व एक नाबालिग डिटेन

■ संजीवनी टुडे

बावलवाडा। दिनांक 01.08.2024 को श्री छगन लाल पिता श्री जीवराज निवासी पादरा नानकी थाना पहाडा, उदयपुर ने रिपोर्ट पेष की कि दिनांक 22.07.2024 को मै मेरे ससुराल मगरा से आ रहा था। उसी दौरान करीब 10.00 पीएम के आसपास गोहावाडा से बावलवाडा रूट पर कुठडीया घाटी स्टेशन के समीप दो-तीन लोग धारदार हथियार लेकर बीच रास्ते पर खड़े थे। जिन्होने मुझे रोका और मेरे साथ मारपीट कर मेरा मोबाईल, बाईक का हेलमेट व 6850 रूपये लूट कर ले गये। वगैरा रिपोर्ट पर प्रकरण दर्ज कर अनुसंधान प्रारम्भ किया गया। जिला पुलिस अधीक्षक, उदयपुर श्री योगेश गोयल के निर्देशानुसार श्रीमती अंजना सुखवाल अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक, खेरवाडा व श्री राजीव राहर वृताधिकारी वृत ऋषभदेव के सुपरविजन में श्री कर्णवीर सिंह थानाधिकारी, बावलवाडा मय टीम ने घटना का खुलासा करते हुये प्रकरण में 02 आरोपियों को प्रोडेक्शन वांरट से गिरफ्तार किया व एक नाबालिग को राजकीय संप्रेषण गृह से डिटेन कर लूटा गया मोबाईल व हेलमेट बरामद किया जाकर अग्रिम अनुसंधान जारी है।

गिरफ्तार मुल्जिम का नाम पता

01. वनराज पिता कन्हैयालाल निवासी बरोठी भीलान, बावलवाडा जिला उदयपुर।

02. प्रदीप पिता ईष्वरलाल निवासी असारीवाडा थाना पहाड़ा जिला उदयपुर।

बी एल मेहरड़ा को राष्ट्रीय स्तर पर सामर्थ्य ग्लोबल अवार्ड -2024 से सम्मानित किया जाएगा

■ संजीवनी टुडे

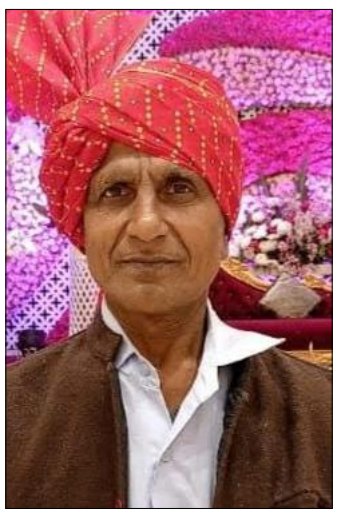

विराटनगर। समाजसेवी डॉ. अंबेडकर विचार मंच के प्रदेश महासचिव एवं समर्पण संस्था के उपाध्यक्ष विराट नगर निवासी बनवारी लाल मेहरड़ा को समाज सेवा के विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनिय, सराहनीय व उत्कृष्ट कार्य करने पर राजस्थान के झालावाड़ की "सामर्थ्य सेवा संस्थान" द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर "सामर्थ्य ग्लोबल अवार्ड - 2024" से सम्मानित किया जाएगा।

मेहरड़ा को यह राष्ट्रीय अवार्ड सम्मान आगामी 1 सितंबर 2024 को " राजस्थान इंटरनेशनल सेंटर - जयपुर "(टऋए) में राजस्थान सरकार के उप मुख्यमंत्री डॉ. प्रेमचंद बैरवा,उप मुख्यमंत्री दिया कुमारी एवं कैबिनेट मंत्री श्रीमान अविनाश गहलोत - सामाजिक न्याय अधिकारिता विभाग एवं डॉ. मंजू बाघमार राज्य मंत्री- सार्वजनिक निर्माण विभाग, महिला एवं बाल विकास विभाग एवं बाल अधिकारिता विभाग राजस्थान सरकार के हाथों यह पुरस्कार प्रदान किया जाएगा। बी एल मेहरड़ा को यह राष्ट्रीय अवार्ड गरीब ,असहाय, जरूरतमंद परिवारों की सेवा करने व उनके बच्चों को निःशुल्क पढ़ाने, समर्पण संस्था के द्वारा ऐसे बच्चों को गोद लेकर उन्हें पाठय सामग्री व फीस चैक देने , वस्त्र वितरण करने ,महिलाओं पर हो रहे अत्याचारों के प्रति आवाज उठाकर उन्हें उचित न्याय दिलवाने, राज्य सरकार व केंद्र सरकार की भावी योजनाओं की जानकारी देकर उन्हें उचित लाभ दिलवाने , रक्तदान शिविर, नेत्रदान शिविर, वृक्षारोपण करना,पंक्षियो हेतु पंरिडे लगाना,गरीब बच्चों की सहायता करने के साथ-साथ दहेज प्रथा, मृत्यु भोज, नशा मुक्ति, बाल विवाह , अंधविश्वास व रूढ़ीवादी विचारधाराओं को खत्म करने का प्रयास करते रहने पर यह अवार्ड दिया जा रहा हैं । बी एल मेहरड़ा को यह राष्ट्रीय अवार्ड मिलने पर समाज के अनेको गणमान्य व्यक्तियों, सामाजिक संस्थाओं व संगठनों ने खुशी जाहिर करते हुए बधाई व शुभकामनाएं दी है।

बजट घोषणा के बाद भी हेमचंद्र विक्रमादित्य के पैनोरमा का निर्माण नहीं होने से ग्रामीणों में रोष

वन एवं पर्यावरण मंत्री से मिलकर दिया ज्ञापन

■ संजीवनी टुडे

राजगढ़(अलवर)। प्राचीन काल में अलवर जिले की राजधानी माचाड़ी के सपूत अन्तिम हिन्दू सम्राट हेमचंद्र विक्रमादित्य के पैनोरमा के निर्माण के लिए राजस्थान सरकार द्वारा बजट घोषणा करने के बावजूद भी अभी तक निर्माण कार्य शुरू नहीं होने से स्थानीय निवासियों में रोष हैं। माचाड़ी पंचायत समिति सदस्य कमलेश मीना के प्रतिनिधि एवं सम्राट हेमचंद्र विक्रमादित्य पैनोरमा निर्माण संघर्ष समिति के अध्यक्ष मोहर सिंह मीना ने शनिवार को वन एवं पर्यावरण मंत्री संजय शर्मा को ज्ञापन देकर निवेदन किया कि माचाड़ी के सपूत सम्राट हेमचंद्र विक्रमादित्य उर्फ हेमू के जन्म स्थान माचाड़ी में लगभग 500 साल बाद पैनोरमा निर्माण हेतु जमीन आवंटित हो चुकी हैं। राजस्थान धरोहर प्राधिकरण ने निविदा प्रक्रिया जारी कर कार्य आदेश भी जारी कर दिया हैं। लेकिन अभी तक ठेकेदार द्वारा कार्य शुरू नहीं किया गया है। अतः शीघ्र कार्य शुरू करवाये जाने हेतू निवेदन किया। साथ ही 7 अक्टूबर को हेमू की दिल्ली विजय के उपलक्ष्य में विजय दिवस मनाने तथा माचाड़ी में सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित करने की मांग की। इसी दिन महान स्वतंत्रता सेनानी पं भवानी सहाय शर्मा की भी पुण्य तिथि हैं। अतः अलवर जिले के इन दोनों महान एवं ऐतिहासिक व्यक्तियों की याद में कुश्ती दंगल, मेला, खेलकूद प्रतियोगिता इत्यादि के साथ साथ भव्य एवं रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया जाना चाहिए। वन मंत्री संजय शर्मा ने इन मांगों को गंभीरता पूर्वक सुनकर उचित एवं सकारात्मक कार्रवाई का आश्वासन दिया।

शारीरिक अक्षमता की पूर्ति के लिये जिन्हे उपकरण की आवश्यकता है एडिप योजना 2 सितंबर से लगने वाले शिविर में अवश्य करवाए परीक्षण

■ संजीवनी टुडे

सलूंबर। सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग सलूंबर द्वारा जिले के दिव्यांजनों से एडिप योजना के तहत परीक्षण शिविर आयोजित किया जाएगा। जिला कलेक्टर जसमीत सिंह संधू ने आदेश जारी कर बताया कि सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग द्वारा दिव्यांगजन एडिप योजना का लाभ लेने के लिये दिव्यांजन जिनको शारीरिक अक्षमता की पूर्ति के लिये उपकरण की आवश्यकता है तथा जिन्हे पिछले तीन साल तक किसी भी प्रकार के उपकरण का लाभ विभाग द्वारा नही मिला है,वे सभी दिव्यांजन 2 सितंबर से 7 सितंबर तक जिले के विभिन्न ब्लॉक में लगने वाले शिविर में अपना परीक्षण करा कर पंजीयन करा सकेंगे। सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग के हेमन्त खटीक ने बताया कि दिव्यांगजन पंजीकरण के लिये भारतीय नागरिक होना आवश्यक है। पहचान प्रमाण पत्रऽ आधार कार्ड द्य दिव्यांग प्रमाण पत्र ऽयूडीआईडी कार्ड/ यूडीआईडी पंजीकरण संख्या। आय प्रमाण पत्र ऽसभी स्त्रोतों से मासिक आय 22500 प्रति माह से कम हो वह राजस्व विभाग, एमपी, एमएलए, प्रधान द्वारा प्रदूत आय प्रमाण पत्र प्रस्तुत कर सकते हैं। लाभार्थी ने वर्षों के दौरान भारत सरकार/राज्य सरकार या अन्य सामाजिक योजना के अन्तर्गत किसी शासकीय/अशासकीय/अन्य संस्था से कोई उपकरण प्राप्त न किया गया है। (मोटराइजड ट्राईसाईकिल / स्मार्ट फोन को छोडकर, जिसे 5 वर्षो के दौरान प्राप्त न किया हो) जिला कलक्टर ने बताया कि जिले के विशेष योग्यजन के लिए जिले में पहली बार विशेष योग्यजन को उपकरण वितरण के लिए शिविर द्वारा चिन्हित किया जाएगा और उन्हें पात्रता अनुसार राहत प्रदान की जायेगी।

फुटबॉल संघ में अवैध चुनाव के विरोध में उठी आवाज

अलग-अलग क्लबों ने की जांच रिपोर्ट देने और संघ की सदस्यता निरस्त करने की मांग

■ संजीवनी टुडे

चित्तौड़गढ़ जिला फुटबॉल संघ में हुए अवैध चुनाव की जांच रिपोर्ट देने और वर्तमान जिला फुटबॉल संघ की सदस्यता निरस्त करने की मांग की। चित्तौड़गढ़ जिला फुटबॉल संघ के विवाद को लेकर अलग-अलग क्लबों के प्रतिनिधि राजस्थान फुटबॉल संघ के प्रदेश अध्यक्ष मानवेंद्र सिंह जसोल और सचिव दिलीप सिंह शेखावत से मुलाकात की। सभी ने संघ में हुए अवैध चुनाव की जांच रिपोर्ट देने और वर्तमान जिला फुटबॉल संघ की सदस्यता निरस्त करने की मांग की। यूनिटी क्लब के जेपी दशोरा ने बताया कि राजस्थान फुटबॉल संघ के प्रदेश अध्यक्ष मानवेंद्र सिंह जसोल और सचिव दिलीप सिंह शेखावत से मिलने का मौका मिला। जिले के फुटबॉल संघ की विवादित समिति द्वारा संविधान के विरुद्ध जाकर अवैध चुनाव कराए गए। जिसकी जानकारी पहले भी संघ को दी गई थी। इसी संबंध में राजस्थान फुटबॉल संघ ने जांच कमेटी बनाई थी। जांच भी हुई लेकिन कोई कार्रवाई नहीं हुई। इस मुलाकात में मानवेन्द्र सिंह ने सभी पदाधिकारियों और राष्ट्रीय स्तर के फुटबॉल खिलाड़ियों को पूरे मामले की जांच कर न्याय का खिलाड़ियों को पूरे मामले की जांच कर न्याय का आश्वासन दिया है। बता दें कि तत्कालीन समय में तदर्थ समिति ने 13 क्लबों के विरूद्ध 22 नए क्लबों का गठन कर दिया था और फर्जी चुनाव करा लिए थे, जिसे लेकर खिलाड़ियों में आक्रोश व्याप्त है और यही कारण है कि पिछले 2-3 सालों से जिले में फुटबॉल का स्तर लगातार गिरता जा रहा है। इस मुलाकात के दौरान सनराईज क्लब के शाहिद हुसैन, यूनिटी क्लब के जेपी दशोरा, इलेवन स्टार क्लब के तालिद मोहम्मद, अब्दूला, मोहम्मद रजा, युवराज सिंह, विक्रमसिंह, गोविन्द, सिराज मोहम्मद, फरीद मोहम्मद, राहूल कीर, कमल सिंह, जाहीद, हिमांशु सहित विभिन्न क्लबों के पदाधिकारी और खिलाड़ियों के करीब तीन दर्ज से अधिक प्रतिनिधि मौजूद रहे।

लिटिल फ्लावर स्कूल में दही हांडी कार्यक्रम का आयोजन

■ संजीवनी टुडे

राजगढ़(अलवर)। लिटिल फ्लावर इंग्लिश मीडियम स्कूल में शनिवार को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव बड़े धूमधाम से मनाया। विद्यालय में दही हांडी कार्यक्रम का आयोजन किया गया। विद्यालय के निदेशक हेमंत कुमार सैनी ने बताया कि शनिवार को लिटिल फ्लावर इंग्लिश मीडियम स्कूल में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी उत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया। जिसमें स्कूल के नन्हे मुन्ने बच्चों ने बढ़ चढ़ कर भाग लिया। इस दौरान बच्चों ने मनमोहक अनेक झांकियां प्रस्तुत की गई। इस दौरान विद्यालय में दही हांडी कार्यक्रम का आयोजन किया गया। दही हांडी फोड़ने वाले बच्चों को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। इस मौके पर संस्था के निदेशक हेमंत कुमार सैनी, गीता सैनी, मुक्ता सैनी, संतोष सैनी, बबीता सैनी, पूजा शर्मा, सरिता गुप्ता, संध्या गुप्ता, तनु शर्मा, अनु टेलर, यशवंत कुमार सैनी, परशुराम शर्मा, सतीश शर्मा, उमाशंकर सैनी सहित स्कूली बच्चे उपस्थित रहे। आपको बता दें राजगढ़ कस्बे में लिटिल फ्लावर इंग्लिश मीडियम स्कूल में बच्चों को शिक्षा के साथ-साथ सांस्कृतिक कार्यक्रम, खेलकूद सहित अनेक गतिविधियों में भाग लेने हेतु प्रोत्साहित किया जाता है। विद्यालय में विभिन्न नवाचारों द्वारा शिक्षण कार्य कराया जाता है।

मुख्यमंत्री आयुष्मान आरोग्य शिविर का हुआ आयोजन

■ संजीवनी टुडे

अलवर। मुख्यमंत्री आयुष्मान आरोग्य शिविर का आयोजन प्रदेश सरकार की ओर से किया जा रहा है। सामुदायिक स्वास्थ्य अधिकारी नरेश कुमार बडगूजर ने बताया कि शनिवार को आयुष्मान आरोग्य मंदिर ,भजेड़ा ,किशनगढ़ बास, खैरथल तिजारा में शिविर का आयोजन किया गया। उन्होंने बताया कि प्रदेश के गरीब एवं बुजुर्ग नागरिकों को प्रत्येक वर्ष चार मेडिकल जांच निशुल्क उपलब्ध कराने के उद्देश्य से इन शिविरों का आयोजन किया जा रहा है। उन्होंने कहा शिविर में विशेषज्ञ चिकित्सक अपनी सेवाएं दे रहे हैं। उन्होंने बताया कि मुख्यमंत्री आयुष्मान आरोग्य शिविर में गर्भावस्था एवं बच्चों के जन्म के समय देखभाल, नवजात एवं शिशु स्वास्थ्य देखभाल, बचपन एवं किशोर अवस्था स्वास्थ्य देखभाल, परिवार नियोजन गर्भ निरोधक सेवाएं एवं अन्य प्रजनन स्वास्थ्य देखभाल, संचारी रोगों का प्रबंध, तीव्र सरल बीमारी एवं मामूली बीमारियों के लिए सामान्य ओपीडी, गैर संचारी बीमारियों की स्क्रीनिंग रोकथाम नियंत्रण एवं प्रबंध, सामान्य नेत्र एवं नाक, कान, गला रोग सेवाएं, सामान्य मुख स्वास्थ्य सेवाएं, प्रोढ़ एवं उपशामक स्वास्थ्य देखभाल, जलने एवं आघात सहित आपातकाल चिकित्सा सेवाएं, मानसिक स्वास्थ्य रोगों की स्क्रीनिंग एवं बुनियादी प्रबंधन शामिल है। शिविर में सुरेश बाई एएनएम,बीना,दर्शना,ललिता, अनीता आशा सहयोगिनी उपस्थित रही।

सीनियर वेटलिफ्टिंग प्रतियोगिता में जयपुरिया विद्यालय की अनुष्का शर्मा को सिल्वर

■ संजीवनी टुडे

जयपुर। निंबाहेड़ा चित्तौड़गढ़ में 21 अगस्त से 5 दिवसीय आयोजित राज्य स्तरीय सब जूनियर जूनियर एवं सीनियर वेटलिफ्टिंग प्रतियोगिता में जयपुर की अनुष्का शर्मा ने सिल्वर मेडल एवं तनिष्क शर्मा ने कांस्य मेडल प्राप्त किया। निंबाहेड़ा चित्तौड़गढ़ में आयोजित सब जूनियर जूनियर एम सीनियर वेटलिफ्टिंग स्पर्धा में तीसरे दिन अनुष्का शर्मा ने 64 किलो भार वर्ग में स्नैच स्पर्धा में 54 किलो ग्राम एवं क्लीन एंड जर्क स्पर्धा में 66 किलोग्राम वजन कुल 120 किलो उठाकर रजत पदक प्राप्त किया। साथ ही तनिष्क शर्मा ने 81 किलो भार वर्ग में स्नैच स्पर्धा में 94 किलो एवं क्लीन एंड जर्क स्पर्धा में 105 किलो कूल 199 किलो वजन उठाकर कांस्य पदक प्राप्त किया। मीडिया कोडिनेटर नन्द किशोर शर्मा ने बताया कि दोनों खिलाड़ी आनंद राष्ट्रीय व्यायाम शाला जयपुर में नियमित अभ्यास से प्राप्त हुई।

पुलिस कमिश्नर से मिला 8 सदस्यीय प्रतिनिधि मंडल, वार्ता विफल

बाबूलाल बैरवा आत्महत्या मामले में प्रदर्शन कारियों ने निकाला कैंडल मार्च, आरोपियों की गिरफ्तारी तक जारी रहेगा प्रदर्शन

■ संजीवनी टुडे

जयपुर। भांकरोटा पुलिस चौकी में पंखे से झूल कर आत्महत्या करने वाले हैड कांस्टेबल बाबूलाल बैरवा मामले पर सरकार अभी तक कोई समाधान नहीं निकाल पाई है वही प्रदर्शनकारी अभी भी अपनी मांगों पर अड़े हुए है। प्रदर्शन कर रहे रवि मेघवाल व धर्मेंद्र जाटव ने बताया कि हमारा प्रदर्शन जब तक जारी रहेगा तब तक पीड़ित परिवार को न्याय नहीं मिल जाता उन्होंने बताया कि हमारी पहली मांग यही है कि चारो आरोपियों को गिरफ्तार किया जाए इससे कम हमे कुछ भी मंजूर नहीं है। मोर्चरी के बाहर हजारो की भीड़ प्रदर्शन मे जुटी हुई है वही शनिवार शाम को प्रदर्शन कारियों ने कैडंल मार्च निकालते हुए अपराधियों की शीघ्र गिरफ्तारी की मांग करते हुए नारेबाजी की। गौरतलब है कि तीन दिन बीत जाने के बाद भी सरकार का कोई प्रतिनिधि धरना स्थल पर नहीं पहुंचा है जिससे प्रदर्शन कर रहे लोगों मे आक्रोश व्याप्त है। वही सोशल मीडिया पर लोग बैरवा समाज के विधायकों व सांसदों को उक्त मामले में मदद नहीं करने को लेकर अपनी भड़ास निकाल रहे है।

न्यूरोथैरेपी चिकित्सा बेरोज़गारी तथा बीमारी दोनों को मिटाने में कारगरः आचार्य लोकेश

■ संजीवनी टुडे

नई दिल्ली। आरोग्य पीठ द्वारा आयोजित न्यूरोथैरापी दिवस एवं दीक्षांत समारोह को संबोधित करते हुए जैन आचार्य लोकेश ने कहा कि जब देश की आधी से अधिक आबादी ग़रीबी रेखा के नीचे जीवन व्यतीत कर रही हो तथा 70% आबादी ग्रामीण भारत में रहती हो ऐसे में महंगा उपचार सभी के लिये संभव नहीं है। न्यूरोथैरेपी बिना दवा, बिना मशीन के सरल, सफल, कम खर्च तथा निरापद होने के कारण लोगों के रोग उपचार तथा रोज़गार दोनों के लिए कारगर है। आचार्य लोकश ने न्यूरोथैरापी को देश विदेश में फैलाकर स्वस्थ भारत समृद्ध भारत योजना में योगदान देने के लिए रामगोपाल दीक्षित के प्रयासों की सराहना की। सांसद एवं लोक सभा की पेनल ऑफ़ चेयर पर्सन सन्ध्या राय ने कहा कि पंचायत स्तर तक न्यूरोथैरेपी केंद्र खोलने से होगा लोगों का भला, इसके लिए लोगों को जागरूक करना बहुत ज़रूरी है आरोग्य पीठ द्वारा न्यूरोथैरेपी दिवस एवं सप्तम दीक्षांत समारोह के अवसर पर पूसा कैंपस में आयोजित कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए उन्होंने कहा कि मैंने स्वयं आचार्य दीक्षित जी के यहाँ न्यूरोथैरेपी से ट्रीटमेंट लिया है जिसके बहुत सुखद परिणाम मुझे देखने को मिले, मुझे लगा कि यह ट्रीटमेंट तो मेरे संसदीय क्षेत्र में भी लोगों को मिलना चाहिए। उन्होने भिड़ मध्य प्रदेश के लोगों के लिए भी ट्रीटमेंट एवं ट्रेनिंग कैंप लगाने के लिए आचार्य से आग्रह किया। इस अवसर पर आरोग्य पीठ के संस्थापक एवं न्यूरोथैरेपी विशेषज्ञ आचार्य रामगोपाल दीक्षित द्वारा लिखित पुस्तक पञ्चविधि निदान का अतिथियों द्वारा लोकार्पण भी किया गया। कार्यक्रम के विशिष्ठ अतिथि सीबीएसई के सचिव आईएएस हिमांशु गुप्ता ने कहा न्यूरोथैरेपी भारत की स्कूली शिक्षा का अंग बन सकती है इसमें बहुत कम खर्च में युवाओं को रोज़गार मिलने की असीम संभावनाएं हैं।उन्होंने कहा गत वर्ष दिल्ली के सरकारी विद्यालयों में आरोग्य पीठ ने हज़ारों छात्र छात्राओं को इसका प्रशिक्षण दिया। पश्चिम बंगाल के रानाघाट के सांसद जगन्नाथ सरकार ने अपने संबोधन में कहा कि न्यूरोथैरेपी को सीजीएचएस तथा और इन्श्योरेन्स मैं भी लाने से सरकारी कर्मचारियों को अधिक लाभ मिल सकेगा। आरोग्य पीठ के प्रयास की सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि एक प्राचीन विज्ञान को अनौपचारिक से अब ऑपचारिक विज्ञान के रूप में प्रस्तुत करना मानवता के लिए किया गया महान प्रयास है। आरोग्य पीठ के संस्थापक आचार्य दीक्षित ने कहा कि हमें डॉ लाजपत राय मेहरा के सपनों का भारत बनाना है । आचार्य जी ने कहा डिस-ईज़ एवं डिस-ऑर्डर का कारण शरीर में अर्धनारीश्वर का डिस बैलेंस है इसी डिस-बैलेंस को डायग्नोज करने वाली पुस्तक पञ्चविधि निदान के संबंध में बोलते हुए कहा कि इस पुस्तक में निदान के पाँच प्रकार दर्शन, स्पर्शन, श्रवणन, घ्राणन एवं अनुमानन का वर्णन किया है। आचार्य दीक्षित ने कहा वैलनेस न्यूरोथैरेपी में दुनिया की तीसरी बड़ी चिकित्सा पद्धति बनाने का सामर्थ्य हैं । एलोपैथ एवं होम्योपैथी के बाद यही विज्ञान दुनिया के आरोग्य का साधन बनेगा। कार्यक्रम में पश्चिमी दिल्ली की सांसद कमलजीत सहरावत, राज्य सभा के

कार्यालय ग्राम पंचायत सकट, पंचायत समिति राजगढ़ (अलवर)

क्रमांक : निविदा/2024-25 /123 दिनांक : 22-08-2024

ई-निविदा सूचना

सांसद स्थानीय क्षेत्र विकास योजनान्तर्गत, माननीय श्रीमती जसकौर मीना (सांसद) द्वारा स्वीकृत कार्य एक हॉल मय लाइब्रेरी निर्माण रा. उ. मा. विद्यालय, ग्राम पंचायत सकट हेतु उपयुक्त श्रेणी में सार्वजनिक निर्माण विभाग राजस्थान में पंजीकृत संवेदको एवं केन्द्रीय राज्य सरकार व उनके अधिकृत संगठनो केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग द्वाक एवं दूर संचार विभाग रेल्वे इत्यादि में पंजीकृत संवेदको, जो कि राजस्थान सरकार के उपयुक्त श्रेणी के संवेदकों के समकदा हो, से निर्धारित प्रपत्र में ई-टेण्डरिंग प्रकिया हेतु ऑन लाईन निविदाये आमन्त्रित की जाती है।

निविदा शुल्क/बैंकर्स चैंक द्वारा जो की ग्राम पंचायत सकट के नाम तथा ई निविदा प्रक्रिया शुल्क MD, RISL, Payable at Jaipur के नाम, निविदा फॉर्म निर्धारित दिनांक को दोपहर 02 बजे तक ग्राम पंचायत सकट में भौतिक रूप से जमा करवाया जाना आवश्यक है।

क्र. सं.	कार्य का विवरण	अनुमानित लागत (लाखों में)	अमानत राशि (रूपयो में)	निविदा शुल्क (रूपयो में)	शुल्क प्रोसेसिंग (रूपयो में)	निविदा डाउनलोड एवं अपलोड करने की तिथि एवं समय	हार्ड कोपी जमा करवाने की अन्तिम तिथि व समय	निविदा खोलने की दिनांक व समय
1	2	3	4	5	6	7	8	9
1	ग्राम पंचायत सकट, पंचायत समिति राजगढ़ (अलवर) में सांसद स्थानीय क्षेत्र विकास योजनान्तर्गत, माननीय श्रीमती जसकौर मीना (सांसद) द्वारा स्वीकृत कार्य एक हॉल मय लाइब्रेरी निर्माण रा. उ. मा. विद्यालय, संकट	10.00	20000	500/-	500/-	23.08.2024 सांय 05 बजे से 02.09.2024 सांय 06 बजे तक	03.09.2024 दोपहर 02 बजे तक	03.09.2024 सांय 03 बजे तक

विस्तृत जानकारी http://sppp.rajasthan.gov.in/www.eproc.rajasthan.gov.in पर देखी व डाउनलोड कर प्राप्त की जा सकती है। संवेदक के द्वारा निविदा दर अपलोड करते समय डीडी/बैंकर्स चैक भी साथ ही अपलोड करना होगा। UBN No.-ZAL2425WSOB00816

सरपंच ग्राम पंचायत संकट पं.स. राजगढ (अलवर)

ग्राम विकस अधिकारी ग्राम पंचायत संकट पं.स. राजगढ (अलवर)

सम्पादक की कलम से....

सम्पादकीय

कैंसर: कारण, लक्षण और निदान

'कैंसर' एक ऐसा शब्द है, जिसे अपने किसी परिजन के लिए डॉक्टर के मुंह से सुनते ही परिवार के तमाम सदस्यों के पैरों तले की जमीन खिसक जाती है। दरअसल परिजनों को अपने परिवार के उस सदस्य को हमेशा के लिए खो देने का डर सताने लगता है। बढ़ते प्रदूषण तथा पोषक खानपान के अभाव में यह बीमारी एक महामारी के रूप में तेजी से फैल रही है। कैंसर के संबंध में यह जान लेना बेहद जरूरी है कि यह बीमारी किसी भी व्यक्ति को किसी भी उम्र में हो सकती है लेकिन अगर इसका सही समय पर पता लगा लिया जाए तो उपचार संभव है। विश्व स्वास्थ्य संगठन का मानना है कि हमारे देश में पिछले बीस वर्षों के दौरान कैंसर के मरीजों की संख्या दोगुनी हो गई है। प्रतिवर्ष कैंसर से पीड़ित लाखों मरीज मौत के मुंह में समा जाते हैं और माना जा रहा है कि वर्ष 2020 तक कैंसर के मरीजों की संख्या एक करोड़ की संख्या को भी पार कर जाएगी। हालांकि कुछ वर्ष पूर्व तक कैंसर को एक असाध्य अर्थात लाइलाज रोग के रूप में जाना जाता था लेकिन पिछले कुछ वर्षों में कैंसर के उपचार की दिशा में क्रांतिकारी खोजें हुई हैं और अब अगर समय रहते कैंसर की पहचान कर ली जाए तो उसका उपचार किया जाना काफी हद तक संभव हो जाता है। दुनियाभर में कैंसर के मामलों को कम करने के लिए कैंसर तथा उसके कारणों के प्रति लोगों को जागरूक किए जाने की आवश्यकता महसूस की जा रही है ताकि वे इस बीमारी, इसके लक्षणों और इसके भयावह खतरे के प्रति जागरूक रहें। दरअसल कैंसर के करीब दो तिहाई मामलों का बहुत देर से पता चलता है और कई बार तब तक बहुत देर हो चुकी होती है। इसी उद्देश्य से दुनियाभर में लोगों को कैंसर होने के संभावित कारणों के प्रति जागरूक करने, प्राथमिक स्तर पर कैंसर की पहचान करने और इसके शीघ्र निदान तथा रोकथाम के प्रति लोगों में जागरूकता फैलाने के लिए प्रतिवर्ष 4 फरवरी को 'विश्व कैंसर दिवस' मनाया जाता है। दरअसल कैंसर आज न केवल भारत में बल्कि पूरे विश्व में एक ऐसी भयानक बीमारी बन चुका है कि तमाम प्रयासों के बावजूद इसके मरीजों की संख्या में कोई कमी नहीं आ रही है तथा लाखों लोग हर साल इस बीमारी के कारण बेमौत मारे जा रहे हैं। इसी वजह से वर्ष 2005 में विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिवर्ष 4 फरवरी को 'विश्व कैंसर दिवस' मनाने का निर्णय लिया गया ताकि लोगों को इस भयानक बीमारी से होने वाले नुकसान के बारे में बताया जा सके और ज्यादा से ज्यादा जागरूक किया जा सके।

दरअसल कैंसर से लड़ने का सबसे बेहतर और मजबूत तरीका यही है कि लोगों में इसके बारे में जागरूकता हो, जिसके चलते जल्द से जल्द इस बीमारी की पहचान हो सके और शुरूआती चरण में ही इस बीमारी का इलाज संभव हो। यदि कैंसर का पता शीघ्र ही लगा लिया जाए तो उसके उपचार पर होने वाला खर्च बहुत कम हो जाता है लेकिन इसकी पहचान अगर विकसित दशा में होती है तो उपचार की लागत कई गुना बढ़ जाती है। कैंसर के तीसरे या चौथे चरण में पहुंच जाने की स्थिति में मरीज का इलाज मुश्किल हो जाता है और खर्च भी अपेक्षाकृत काफी बढ़ जाता है। ऐसे मरीजों के लंबा जीवन जीने की उम्मीदें भी कम हो जाती है। यही वजह है कि जागरूकता के जरिये इस बीमारी को शुरूआती दौर में ही पहचान लेना बेहद जरूरी माना गया है क्योंकि ऐसे मरीजों के इलाज के बाद उनके स्वस्थ एवं सामान्य जीवन जीने की संभावनाएं काफी ज्यादा होती हैं। हालांकि देश में कैंसर के इलाज की तमाम सुविधाओं के बावजूद अगर हम इस बीमारी पर लगाम लगाने में सफल नहीं हो पा रहे हैं तो इसके पीछे इस बीमारी का इलाज महंगा होना एक बहुत बड़ी समस्या है। वैसे देश में जांच सुविधाओं का अभाव भी कैंसर के इलाज में एक बड़ी बाधा है, जो बहुत से मामलों में इस बीमारी के देर से पता चलने का एक अहम कारण होता है। आधुनिक जीवनशैली, नियमित व्यायाम न करना, भोजन की शुद्धता पर ध्यान न देना, प्रदूषित वातावरण इत्यादि कई ऐसे अहम कारण हैं, जो शरीर में कैंसर विकसित होने के प्रमुख कारक हो सकते हैं। कैंसर के संबंध में यह जान लेना बेहद जरूरी है कि आखिर यह है क्या? हमारे शरीर की कोशिकाएं जब अनियंत्रित होकर अपने आप तेजी से बढ़ने लगती हैं तो कोशिकाओं के समूह की उस अनियंत्रित वृद्धि को ही कैंसर कहते हैं। जब ये कोशिकाएं टिश्यू को प्रभावित करती हैं तो कैंसर शरीर के अन्य हिस्सों में फैल जाता है और ऐसी स्थिति में कैंसर काफी घातक हो जाता है। वैसे तो कैंसर के सौ से भी ज्यादा प्रकार हैं लेकिन ब्रेन कैंसर के अलावा पुरूषों में मुख्यतः मुंह व जबड़ों का कैंसर, फ़ेफड़े का कैंसर, पित्त की थैली का कैंसर, पेट का कैंसर, लीवर कैंसर, प्रोस्टेट कैंसर होता है जबकि महिलाओं में होने वाले कैंसर में स्तन तथा ओवेरियन कैंसर प्रमुख हैं। दुनिया भर में कैंसर से लड़ने और इस पर विजय पाने के चिकित्सीय उपाय हो रहे हैं और चिकित्सा के क्षेत्र में शोधकर्ताओं के प्रयासों के चलते कैंसर का प्रारम्भिक स्टेज में इलाज अब संभव है। यही कारण है कि 1990 के बाद से कैंसर से मरने वालों की संख्या में करीब 15 फीसदी की कमी आई है। वैसे तो कैंसर कई प्रकार का होता है और हर प्रकार के कैंसर के होने के कारण भी अलग-अलग होते हैं किन्तु इस बीमारी के कुछ ऐसे मुख्य कारक होते हैं।

आज का राशिफल

यह राशिफल जन्म राशि पर आधारित है। व्यक्ति के जन्म के समय चंद्रमा जिस राशि पर थे, वही उसकी जन्म राशि होती है। यदि राशि की जानकारी आपको नहीं है तो अपने नामाक्षर से राशिफल देखें।

मेष (चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ) : आज भाग्य से कोई नया प्रस्ताव मिल सकता है। सरकारी काम आसानी से बन जाएंगे। अधिकारी सहयोग करेंगे। किसी चैरिटी आदि में धन खर्च करेंगे। मित्रों के साथ पार्टी में जा सकते हैं।

वृषभ (ई,उ,ए,ओ,वा,वी,वू,वे,वो) : सुख-सुविधाओं पर खर्च होगा। व्यक्तिगत मामलों में गलतफहमी को जन्म देने वाली कोई बात हो सकती है। परिवार के साथ पार्टी में जा सकते हैं। कोई नया प्रस्ताव यदि आज मिलता है।

मिथुन (क,की,कू,घ,ङ, छ, के,को, ह) : कार्यों को मन लगाकर पूरा करेंगे। आपकी बढ़ते प्रभाव से कुछ लोगों को परेशानी हो सकती है। आज की गई मेहनत का पूरा फल नहीं मिलेगा। व्यक्तिगत मामलों को सावधानी से हल करें।

कर्क (ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो) : किसी योजना का क्रियान्वयन हो जाएगा। अधूरे काम भी किसी न किसी सहयोग से आज पूरे हो जाएंगे। धैर्यपूर्वक निर्णय लेने पड़ेंगे। भाग-दौड़ बनी रहेगी, परंतु यात्रा करना आज ठीक नहीं रहेगा।

सिंह (मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे) : परिवार के बड़े सदस्यों की आज्ञा मान कर चलेंगे तो फायदे में रहेंगे। लाभ के एक से अधिक अवसर सामने होंगे। चाहा गया सहयोग नहीं मिलने से काम खुद ही पूरे करने पड़ेंगे। बड़े भाई से लाभ होगा।

कन्या (टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो) : आज घर और बाहर दोनों जगह आपके काम की सराहना होगी। काम के घंटे बढ़ जाएंगे अतः पिछले छूटे कामों को पहले पूरा कर लें। अधिकारी वर्ग प्रसन्न रहेगा। विद्यार्थी वर्ग लाभ में रहेगा।

तुला (रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते) : आज काम बनने में थोड़ी असुविधा हो सकती है। विरोधियों से सावधान रहना होगा। प्रोपर्टी के खरीदने या बेचने से संबंधी बात हो सकती है। पुराने मित्रों से मुलाकात होने की संभावना है।

वृश्चिक (तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू) : व्यावसायिक कार्यों का विस्तार करने के लिए अतिरिक्त परिश्रम करना पड़ेगा। सहयोग मिल जाने से थोड़ी आसानी हो जाएगी। व्यक्तिगत संबंधों में सौहार्द्र की भावना बढ़ने से मन प्रसन्न होगा।

धनु (ये, यो, भ, भी, भू, धा, फा, ढा, भे) : आज का दिन महत्वपूर्ण काम करने के लिए नहीं है। निजी समस्याओं को अपने ऊपर हावी न होने दें। परिवार के साथ समय बिताना आवश्यक है, चाहें तो कहीं आउटिंग के लिए जा सकते हैं।

मकर (भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, ग, गी) : आज स्वास्थ्य का ध्यान रखना होगा, परंतु काम फिर भी आसानी से बन जाएंगे। लाभ की कोई नई योजना बनाकर उस पर अमल करेंगे। मित्र विशेष सहयोगी बनकर सामने आएंगे।

कुंभ (गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा) : आज घर की बुजुर्ग स्त्री की सलाह काम आएगी, महत्वपूर्ण निर्णय लेते समय उसको नजरअंदाज ना करें। यात्रा करना हित में नहीं रहेगा, बहुत जरूरी हो तो पहले मंदिर जाएं फिर यात्रा करें।

मीन (दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची) : आज योग्यता दिखाने का उचित अवसर मिलेगा। लाभ देने वाली छोटी यात्रा की संभावना है। बडी प्रतिस्पर्धा में भी विजयी होंगे। वाहन धीमी गति में चलाएं, अन्य कामों में भी जल्दबाजी ना करें।

बिहार में पुलिस दमन मानों प्रजातंत्र न हो सज़ातंत्र हो

बिहार में फिर जंगलराज शुरु हो गया है। नई सरकार बनते ही पुलिस बर्बरता देखने को मिल रही है। लीडरशीप भ्रष्ट हो तो पुलिस-प्रशासन कैसे ईमानदार एवं अनुशासित होगा? कल ही छोटे परदे पर तब यह देख कर मन को गहरा असन्तोष हुआ जब एक एडीएम तिरंगा लिए गिरे पड़े एक बेरोजगार युवक को रोजगार की मांग करने पर बेरहमी से पीट रहे थे। देश की सेवक, जनता की रक्षक, अपराधियों को सजा दिलाने वाली, कानून व्यवस्था को बनाये रखने वाली पुलिस की इस तरह की बर्बर, क्रूर एवं खौफनाक छवि कोई नयी बात नहीं है। यह खाकी एवं खादी की मिलीभगत का परिणाम है, इसी खाकी के बल पर खादी वाले घौंसपट्टी जमाते हैं और इसी खादी के बल पर खाकी वाले आपराधिक कृत्यों, घालमेल, आर्थिक अनियमितताओं, कमजोरों पर अत्याचार, दमन, लाठीचार्ज और जमीन से लेकर हर तरह के सौदों में हेरफ़ेर को अंजाम देते हैं। लोकतंत्र के मुखपृष्ठ पर ऐसे बहुत धब्बे हैं, अंधेरे हैं, वहां मुखौटे हैं, गलत तत्त्व हैं, खुला आकाश नहीं है। मानो प्रजातंत्र न होकर सज़ातंत्र हो गया। क्या यही उन शहीदों का स्वप्न था, जो फांसी पर झूल गये थे? व्यवस्था और सोच में व्यापक परिवर्तन हो ताकि अब कोई बेरोजगार रोजगार की मांग करने पर डंडें ना खाये। पूरी दुनिया में शायद कहीं ऐसी बर्बर, दमनकारी एवं हिंसक पुलिस नहीं होगी, जैसी भारत में है। किसी आंदोलन, धरना-प्रदर्शन से निपटने का उसे एक ही तरीका पता है- दमन और डंडे का। यह हिंसक एवं अत्याचारी प्रवृत्ति बढ़ती ही जा रही है। जहां भी कोई आंदोलन सिर उठाता है, पुलिस अपनी लाठी-बंदूक उठा लेती है। बिहार में शिक्षक भर्ती अभ्यर्थियों पर उसका 'शौर्य प्रदर्शन' इसका काला उदाहरण है। सब जानते हैं कि वहां शिक्षक भर्ती प्रक्रिया में लंबे समय से टालमटोल का रवैया बना हुआ है। राज्य के वर्तमान उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव जब विपक्ष में थे तो वे यह दावा करते नहीं थकते थे कि अगर उनकी सरकार होगी, तो शिक्षकों की भर्ती प्रक्रिया को तत्काल शुरू करेगी, ताकि राज्य की शिक्षा-व्यवस्था बेहतर हो सके। फिर यह अत्याचार क्यों? पुलिस इतनी निरंकुश बिना राजनीतिक दिशा-निर्देश एवं संरक्षण के हो नहीं सकती कि वो ऐसा कहर बरपाये। रोज-रोज की घटनाओं में आज एक आम आदमी भी अपने अनुभव से जानता है कि ये जनता के रक्षक नहीं बल्कि भक्षक हैं, वर्दीधारी गुण्डे हैं।

बात किसी एक दल या उसकी सरकार की नहीं है, पुलिस की ज्यादतियां हर दल की सरकारों की त्रासद निष्पत्तियां हैं। ज्यादा दिन नहीं हुए, जब उत्तर प्रदेश के प्रयागराज में इसी तरह टेट परीक्षा में गड़बड़ी को लेकर छात्र आंदोलन पर उतरे थे और पुलिस ने बेलगाम अपनी ताकत का प्रदर्शन किया था। उसकी घोर निंदा हुई थी। मगर बिहार पुलिस ने उससे सबक लेना जरूरी नहीं समझा। ठीक वैसा ही बल प्रयोग पटना में किया गया। सरकार

विचार बिन्दु

ललित गर्ग

हमारे लिए हमारे साथ होने का दम भरने वाली पुलिस द्वारा कानून-व्यवस्था का नाम लेकर आम सीधे-साधे, भोले-भाले नागरिकों पर आतंक एवं क्रूरता का जंगलराज कायम किया जाता है। जुल्म और अन्याय के ख़िलाफ आवाज उठाने वालों को पुलिस दमन का शिकार होना पड़ता है। लेकिन सोचने की बात यह भी है कि क्या पुलिसकर्मी इतने दरिन्दे और वहशी जन्मजात होते हैं या उन्हें वैसा बनाया जाता है। यह व्यवस्था उन्हें वैसा बनाती है, ताकि आम जनता में भय और दहशत फैलाकर निरंकुश पूँजीवादी लूट एवं राजनीतिक अपराधों को बरकरार रखा जा सके।

अगर कानून-व्यवस्था को लेकर लोकतांत्रिक तौर-तरीका अपनाना चाहती, तो पुलिस इस तरह मध्ययुगीन बर्बरता का खुला प्रदर्शन नहीं करने पाती। आजादी का अमृत महोत्सव मनाने के बाद भी भारत में बेरोजगारी और भुखमरी की स्थिति विस्फोटक है। सन् 1946 में पांच करोड़ टन अनाज पैदा होता था और आज लगभग 36 करोड़ टन पैदा करके भी हम देशवासियों का पेट नहीं भर पा रहे हैं। दुनिया की आर्थिक महाशक्ति बनने की अग्रसर देश अपने बेरोजगार युवकों को रोजगार नहीं दे पा रहा है। औद्योगिक नीति से धुआं उगलने वाले कारखानों की चिमनियों में वृद्धि हुई है पर गरीब के चूल्हे की चिमनी में धुआं नहीं है। भवनों की मंजिलें और बढ़ गईं पर झोंपड़ियों पर छतें नहीं हैं। अन्तराल बढ़ा है, यह सच्चाई है। इससे बड़ी सचाई यह है कि इस देश का मजबूर, गरीब एवं बेसहारा आदमी ही पुलिस की बर्बरता का शिकार होता है? लेकिन कब तक? गौरतलब तथ्य यह भी है कि पुलिस हिरासत में अक्सर गरीब लोग ही मारे जाते हैं। उन्हीं को शारीरिक एवं मानसिक यन्त्रणाएँ देकर मारा जाता है। अमीरों के लिए तो जेल में भी सुविधा की सैरगाह है। विकासशील देशों में महंगाई बढ़ती है, मुद्रास्फीति बढ़ती है, यह अर्थशास्त्रियों की मान्यता है। पर बेरोजगारी क्यों बढ़ती है? पुलिस की बर्बरता क्यों बढ़ती है? एक और प्रश्न आम आदमी के दिमाग को झकझोरता है कि तब फिर विकास से कौन-सी समस्या घटती है?क्यों गरीब एवं जरूरतमंद की आवाज को ही दबाया जाता है? किससे छिपा है कि पुलिस सरकारों के इशारों पर काम करती है। अगर सरकार आंदोलनकारी छात्रों-अभ्यर्थियों की समस्या सुनने और उसका समाधान निकालने की इच्छुक होती, तो उनसे बातचीत के रास्ते खोलती। मगर अब तो सरकारों ने जैसे मान लिया है कि लोगों की आवाज दबाने का एक ही तरीका है दमन, डंडा एवं बर्बरता। जैसे ही कोई आंदोलन उठे, उसे लाठी-डंडे के बल पर रोक दो।

दरअसल, हमने पुलिस-व्यवस्था अंग्रेजों के समय की ही अपना ली है। उस समय अंग्रेजी सरकार इन्हीं पुलिस-बल के सहारे हिन्दुस्तानी लोगों को कुचलती, उन पर बर्बरता करती, अत्याचार करती। उन्हें देश का नागरिक ना समझकर दुश्मन मानती थी। अब तो हम आजादी भारत के निवासी है, हम पर वो ही बर्बरता क्यों? जरूरत है पुलिस के समुचित प्रशिक्षण का। किसी भी लोकतंत्र में नागरिकों को अपने हक के लिए आवाज उठाने का अधिकार है और उसे सुनना सरकारों का दायित्व। पुलिस को कोई अधिकार नहीं कि इस तरह आंदोलनकारियों पर बल प्रयोग करे। उनके साथ हिंसक व्यवहार करे। अगर कहीं, किसी वजह से भीड़ बेकाबू हो जाए, तो हवा में गोली चलाने, आंसू गैस के गोले दागने, पानी की बौछार करने आदि का नियम है। लेकिन ऐसा नहीं होना दुर्भाग्यपूर्ण है, विरोधाभासी है। प्रश्न तो यह भी है कि लाठी से पीट कर अधमरा कर देने का अधिकार पुलिस को किसने दिया है। यह अधिकार उसे सरकारें देती हैं। उन्हीं के इशारे पर आंदोलनकारियों के साथ ऐसा व्यवहार किया जाता है। इस मामले में बिहार सरकार अपनी जवाबदेही से पल्ला नहीं झाड़ सकती। जिस पुलिस अफसर ने अभ्यर्थियों पर लाठियां बरसाईं, उसे कठोर दंड मिलना चाहिए और साथ ही पुलिस को स्पष्ट निर्देश होना चाहिए कि किसी भी आंदोलन से निपटने का क्या तरीका होगा। लोकतंत्र लाठी के बल पर जिंदा नहीं रह सकता। जब पटना की घटना की तस्वीरें तेजी से प्रसारित होनी शुरू हुईं, तो पहले सरकार ने घटना से अनजान होने का नाटक किया, फिर इसकी जांच के लिए एक समिति गठित कर दी। सरकारों का यह तरीका अब बहुत घिस-पिट चुका है।

हमारे लिए हमारे साथ होने का दम भरने वाली पुलिस द्वारा कानून-व्यवस्था का नाम लेकर आम सीधे-साधे, भोले-भाले नागरिकों पर आतंक एवं क्रूरता का जंगलराज कायम किया जाता है। जुल्म और अन्याय के ख़िलाफ आवाज उठाने वालों को पुलिस दमन का शिकार होना पड़ता है। लेकिन सोचने की बात यह भी है कि क्या पुलिसकर्मी इतने दरिन्दे और वहशी जन्मजात होते हैं या उन्हें वैसा बनाया जाता है। यह व्यवस्था उन्हें वैसा बनाती है, ताकि आम जनता में भय और दहशत फैलाकर निरंकुश पूँजीवादी लूट एवं राजनीतिक अपराधों को बरकरार रखा जा सके। जिस तरह से समाज में आम बेरोजगारों की फौज खड़ी है, उन्हीं में से वेतनभोगियों की नियुक्ति की जाती है और अनुभवी घाघ नौकरशाहों की देखरेख में उन्हें समाज से पूरी तरह काटकर उनका अमानवीकरण कर दिया कर जाता है और इस व्यवस्था रूपी मशीन का नट-बोल्ट बना दिया जाता है। जेलों में कैदियों के साथ अमानवीय बर्ताव, झूठे मामलों में लोगों को फँसा देना, हिरासत में उत्पीड़न की इन्तहा से लोगों की जान ले लेना, ये आम बातें हैं।

यह है भूल भुलैय्या वाला शिव मंदिर, मन्नत पूरी करनी हो तो जरूर आएं यहां

मध्यप्रदेश के रतलाम में देश ही नहीं दुनिया का सबसे अनोखा शिव मंदिर है, जिस भूल भुलैय्या वाले शिव मंदिर के नाम से जाना जाता है। प्राचीन शिव मंदिरों के बारे में तो आपने कई किवदंतियां सुनी होंगी। रतलाम। मध्य प्रदेश के रतलाम में देश ही नहीं दुनिया का सबसे अनोखा शिव मंदिर है, जिस भूल भुलैय्या वाले शिव मंदिर के नाम से जाना जाता है।

प्राचीन शिव मंदिरों के बारे में तो आपने कई किवदंतियां सुनी होंगी लेकिन रतलाम के बिलपांक गांव में एक शिव मंदिर ऐसा भी है जिसे भूल भुलैय्या वाला शिव मंदिर कहा जाता है। जी हां इसका नाम है विरूपाक्ष महादेव मंदिर। इस मंदिर की स्थापना मध्ययुग से पहले, परमार राजाओं ने की थी और भगवान भोले नाथ के ग्यारह रुद्र अवतारों में से पांचवें रूद्र अवतार के नाम पर, इस मंदिर का नाम विरूपाक्ष महादेव मंदिर रखा गया। इस मंदिर के चारों कोनों में चार मंडप भी बनाये गए हैं जिसमें भगवान गणेश, मां पार्वती और भगवान सूर्य की प्रतिमा को स्थापित किया गया है।

इस मंदिर को भूल भुलैय्या वाला शिव मंदिर भी कहा जाता है क्योंकि इस मंदिर में लगे खंभों की एक बार में सही गिनती करना किसी के बस की बात नहीं है। इस मंदिर के सभी 64 खंभों पर की गई नक्काशी देखने योग्य है। इस प्राचीन विरूपाक्ष महादेव मंदिर के अंदर 34 खंभों का एक मंडप है और सभी चारों कोनों पर, खंभों की गिनती 14-14 बनती है जबकि 8 खंभे अंदर गर्भगृह में हैं। ऐसे में एक बार में इन खंभों की सही गिनती करना मुश्किल है। जिसके चलते लोग इस मंदिर को भूल भुलैय्या वाला शिव मंदिर भी कहते हैं।

महाशिवरात्रि के मौके पर हर साल यहां मेला लगता है और भगवान विरूपाक्ष के दर्शन के लिए श्रद्धालु दूर दूर से यहां पहुंचते हैं। मान्यता है कि बाबा भोले नाथ के दर से कोई भी भक्त खाली हाथ नहीं जाता। खास बात यह है कि इस मंदिर में आयोजित हवन के बाद बंटने वाले खीर के प्रसाद से, माँओं की सूनी गोद भी भरती है जिसके लिए दूर दूर से, बड़ी संख्या में महिलाएं विरूपाक्ष महादेव के दर्शन के लिए आती हैं। बीते 64 सालों से हर साल यहां इस महायज्ञ का आयोजन किया जा रहा है जिसमें खीर की प्रसादी के लिए लोग प्रदेश और देश के कोने कोने से आते हैं। गोद भरने पर यहां बच्चों को मिठाईयों से भी तौला जाता है।

प्रशासन ने रतलाम के समीर बिलपांक का विरूपाक्ष मंदिर भी संरक्षित घोषित किया हुआ है। स्थापत्य कला की दृष्टि से ऊन व उदयेश्वर के शिव मंदिर व इसमें काफी साम्यता है। यहां 5.20 वर्गमीटर के गर्भगृह में पीतल की चद्दर से आच्छादित 4.14 मीटर परिधि वाली जलाधारी व 90 सेमी ऊंचा शिवलिंग स्थापित है। 64 स्तंभ वाले सभागृह में एक स्तंभ मौर्यकालीन भी है। यहां 75 वर्षों से हर शिवरात्रि पर महारुद्र यज्ञ होता है जिसमें खीर का प्रसाद ग्रहण करने दूर-दूर से बड़ी संख्या में निःसंतान दंपति आते हैं।

मंदिर में 64 खंभे, गर्भगृह, सभा मंडप व चारों और चार सहायक मंदिर हैं। सभा मंडल में नृत्य करती हुईं अप्सराएं वाद्य यंत्रों के साथ हैं। मुख्य मंदिर के आसपास सहायक मंदिर भी मौजूद हैं। पूर्व सहायक मंदिर के उत्तर में हनुमानजी की ध्यानस्थ प्रतिमा, पूर्व दक्षिण में जलाधारी व शिव पिंड, पश्चिम के उत्तर में विष्णु भगवान गरुड़ पर विराजमान हैं। पश्चिम में दांयीं सूंड वाले गणेशजी की प्रतिमा है। मंदिर में शिवरात्रि पर लाखों लोग महादेव के दर्शन के लिए आते हैं।

25 अगस्त की महत्त्वपूर्ण घटनाएँ

1620	हंगरी के प्रिंस बेथलेन और रोम के सम्राट फर्डीनेंड द्वितीय के बीच शांति समझौते पर हस्ताक्षर किये गये।
1783	इटली के कैलब्रिया में आये भीषण भूकंप में 50 हजार लोग मारे गये।
1797	इक्वाडोर की राजधानी क्वीटो में आये विनाशकारी भूकंप में 41 हजार से अधिक लोग मारे गये।
1847	मैरीलैंड में अमेरिका की पहली टेलीग्राफ कंपनी की स्थापना की गयी।
1881	लोकमान्य तिलक के संपादन में दैनिक समाचार पत्र 'केसरी' का पहला अंक आया था।
1895	अमेरिका के शिकागो में पहले रोलिंग लिफ्ट पुल का उद्घाटन हुआ।
1920	लंदन से दक्षिण अफ्रीका के बीच पहली विमान सेवा शुरू।
1924	महात्मा गाँधी को उनका ख़राब स्वास्थ्य होने के कारण समय से पहले ही जेल से रिहा कर दिया गया।
1932	न्यूयार्क के लेक प्लेसिड में तीसरे शीतकालीन ओलंपिक का शुभारंभ।
1948	श्रीलंका को ब्रिटिश शासन से मुक्ति मिली।
1965	अमेरिका ने नेवादा में परमाणु परीक्षण किया।
1976	अमेरिकी देशों ग्वाटेमाला और होंडुरस में आये भीषण भूकंप में 22000 लोगों की मौत।
1978	जूलियस जयवर्धने द्वारा श्रीलंका के प्रथम राष्ट्रपति के रूप में शपथ ग्रहण।

कश्मीर में जम्हूरियत की नई भोर

विचार बिन्दु

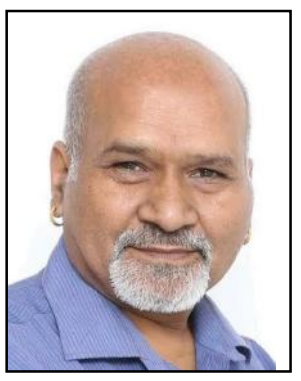

श्याम सुंदर भाटिया

भारत के लिए थाईलैंड और वियतनाम सरीखे देशों के बीच वह सेतु के मानिंद भी है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी सरकार के पड़ोसी पहले की नीति के तहत तत्कालीन विदेश मंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज ने 2014 में म्यांमार की यात्रा की थी।

केंद्र सरकार ने जम्मू - कश्मीर के लाखों गैर कश्मीरियों को अमृत महोत्सव का अनमोल तोहफा दिया है। अनुच्छेद 370 और 35ए की विदाई के बाद लोकतांत्रिक तौर पर बड़ा क्रांतिकारी बदलाव होने जा रहा है। केंद्र शासित इस सूबे में परिसीमन के बाद नॉन कश्मीरियों को वोटिंग का हक़ मिलने जा रहा है। नए वोटर्स लिस्टेड होने के बाद घाटी में तकरीबन 25 लाख मतदाताओं का इज़ाफा हो जाएगा। मौजूदा वोटर्स में करीब एक तिहाई मतदाता और बढ़ जाएंगे. वोटर्स का यह आंकड़ा करीब एक करोड़ या इससे से अधिक हो जाएगा। उम्मीद है, नए चुनाव के बाद केंद्र शासित सूबे की सियासी तस्वीर बिल्कुल जुदा होने का अनुमान है, लेकिन गैर कश्मीरियों को वोटिंग देने का अधिकार इस सूबे के सियासीदानों को एकदम हज़म नहीं हो रहा है। प्रमुख दलों के नेताओं ने तीखी प्रतिक्रिया जाहिर की है। लद्दाख पहली बार नहीं होगा कश्मीर इलेक्शन का हिस्सा आर्टिकल 370 की समाप्ति के बाद लद्दाख अब इस केंद्र शासित प्रदेश में होने वाले चुनाव का हिस्सा नहीं होगा,क्योंकि केंद्र सरकार ने 05 अगस्त,2019 को जे एंड के के राज्य की हैसियत खत्म करके जम्मू कश्मीर और लद्दाख को अलग-अलग केंद्र शासित प्रदेशों का दर्ज़ा दे दिया था। कश्मीर में रह रहे गैर कश्मीरियों में स्टुडेंट्स,प्रवासी मजदूर आदि को अब वोटिंग का अधिकार मिल जाएगा। साथ ही सुरक्षा बलों के अफसर और जवान भी इस परिधि में शामिल हैं। बाहरी कश्मीरियों को निवास पत्र दिखाने की भी दरकार नहीं है। यदि कोई किरायेदार भी है तो वह भी अपने मताधिकार का उपयोग कर सकता है। पलायन कर गए कश्मीरी पंडितों को मतदान की विशेष पॉवर पहले से ही मिली है। 15 सितंबर को समग्र मतदाता सूचियों का मसौदे का प्रकाशन होगा। 15 से 25 सितंबर तक आपत्तियां और दावे दर्ज किए जाएंगे। दस नवंबर तक दावों और आपत्तियों का निराकरण किया जाएगा। 25 नवंबर, 202 2 को नई मतदाता सूचियों का अंतिम प्रकाशन हो जाएगा। करीब चार बरस के बाद मतदाता सूचियों में विशेष संशोधन करने की मंजूरी चुनाव आयोग की तरफ से दी गई है। यह बड़ा ऐलान मुख्य चुनाव अधिकारी श्री हृदेश कुमार सिंह ने प्रेस वार्ता में किया। रोहिंग्या मुस्लिम नहीं, किराएदार होंगे वोटर्स सूची में शामिल अनुच्छेद-370 के निरस्त होने के बाद बहुतेरे बाशिंदें मतदाता के रूप में सूचीबद्ध नहीं थे, लेकिन वे अब मतदान करने के पात्र हैं। आधार संख्या को वोटर्स लिस्ट्स के आंकड़ों से जोड़ने के लिए संशोधित पंजीकरण प्रपत्रों में प्रावधान किया गया है। निर्वाचन आयोग नए मतदाता पहचान पत्र जारी करेगा, जिसमें नई सुरक्षा विशेषताएं होंगी। कश्मीरी पंडित प्रवासी अपने गृह निर्वाचन क्षेत्रों में मतदाता के रूप में पंजीकृत हैं। नए मतदाताओं के पंजीकरण के लिए विशेष शिविर आयोजित किए जा रहे हैं, जिनमें उन सभी को मतदाता पहचान पत्र दिए जाएंगे। जम्मू-कश्मीर में शरण लेने वाले रोहिंग्या मुसलमानों को मतदाता सूची में शामिल नहीं किया जाएगा। मुख्य निर्वाचन अधिकारी श्री हृदेश कुमार ने बताया, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि कोई जम्मू कश्मीर में कितने समय से रह रहा है। गैर स्थानीय जम्मू कश्मीर में रह रहा है या नहीं, इस पर अंतिम फैसला ईआरओ करेगा। यहां किराए पर रहने वाले भी मतदान कर सकते हैं। इसके अलावा सामान्य रूप से रह रहे लोग भी जन अधिनियम के प्रतिनिधित्व के प्रावधानों के अनुसार मतदाता के रूप में सूचीबद्ध होने के अवसर का फायदा उठा सकते हैं। ज़मीन खिसकती देखकर विपक्षी दलों के लीडर्स तिलमिलाए बाहरी कश्मीरी वोटरों के जुड़ने के प्रस्ताव से विपक्ष दलों ने तल्ख कमेंट्स किए हैं। पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी की अध्यक्ष और पूर्व सीएम महबूबा मुफ्ती ने कहा,इसका मतलब कि बीजेपी यहां के चुनाव परिणामों को प्रभावित करना चाह रही है। वह चाहती है, यहां के पुराने बाशिंदे कमजोर पड़ जाएं। पूर्व मुख्यमंत्री और नेशनल कांफ्रेंस के उपाध्यक्ष उमर अब्दुल्ला ने कहा कि क्या बीजेपी अब इतना असुरक्षित महसूस कर रही है कि उसे वोटों के लिए बाहर से आयात करना पड़ रहा है। परिसीमन के बाद सात सीटों में इजाफा हुआ है। 83 सीटों से बढ़कर 90 हो गई हैं। इनमें जम्मू की 6, जबकि कश्मीर की एक सीट शुमार है। कुल 90 सीटों की बात करें तो इसमें कश्मीर की 47, जबकि जम्मू की 43 सीटें हैं। इनमें से दो सीटें कश्मीरी पंडितों के लिए रिजर्व रखी गई हैं। पहली बार एसटी कोटे के लिए 9 सीटों को रिजर्व रखा गया है। इसके साथ ही पीओके से विस्थापित शरणार्थियों लिए भी रिजर्वेशन का प्रस्ताव है। 370 की विदाई से बदली - बदली तस्वीर जम्मू-कश्मीर के नागरिकों के पास दोहरी नागरिकता होती थी। इस राज्य का अपना झंडा भी था।

कम हो तनाव तो केश रहे लाजवाब

चिंता चिता के समान होता है, जितनी जल्दी जला दें अच्छा है। यहां तो चिंताओं के बीच ही लोग जीवन-यापन के तौर-तरीके सीखते हैं। किसी की जेब में पैसे नहीं है तो किसी को नौकरी की चिंता सता रही है। इसी चिंता की चिता में नौजवानों के बाल जल रहे हैं। केशों का टूटना या यों कहें कि गंजापन की अंधी दौर चल पड़ी है। जिसमें बहुत कम ही लोग सुरक्षित हैं। ऐसे में भी डॉक्टर मानते हैं कि बाल गिरना एक चिकित्सकीय बीमारी है, जिसका निदान संभव है। हेयर ट्रांसप्लांट व त्वचा रोग विशेषज्ञ डॉ. सुमित शर्मा कहते हैं कि बाल कम होने के अनेकों कारण है। पैसों की कमी के बीच भी जीवन तनाव मुक्त जीया जा सकता है। खानपान का भी केश पर बहुत बड़ा प्रभाव पड़ता है। डॉक्टर मानते हैं कि शुरू से ही कुछ चीजों का खयाल रखें तो गंजेपन की समस्या से बचा जा सकता है। बाल गिरने की रोकथाम करने और उपचार के लिए एक कारगर व सुरक्षित विकल्प के लिए डॉक्टर की सला ले सकते हैं।

रुसी या सिकरी है झड़ने का मूल कारण

सर की त्वचा में कुपोषण या रूखेपन के कारण जड़ों की त्वचा सूख कर झड़ने लगती है। जिसे सामान्य भाषा में रुसी या सिकरी कहा जाता है। रुसी होने पर बाल झाड़ने शुरू हो सकते हैं।

सिर को साफ रखें

फंगल संक्रमणों से बचने के लिए अपने सिर को साफ रखें। अपने बालों को नियमित रूप से धोने, गंदगी को साफ करने और ज्यादा तेल की वजह से सिर की त्वचा के बंद हो जाने वाले छिद्रों को खोलने के लिए किसी हल्के शैम्पू का इस्तेमाल करें। आप अपने बालों को मुलायम बनाने और उलझने से रोकने के लिए किसी सौम्य कंडीशनर का इस्तेमाल भी कर सकते हैं। सौम्य और प्राकृतिक हेयरस्टाइल तकनीकों का चुनाव करें।

रुसी या सिकरी का उपचार

बाल धोने के आधा घटे पूर्व एक-दो नीबू काटकर बालों में मल लें तथा हल्के गरम पानी से सर धो लें। इससे रुसी का सफाया हो जाता है। दो किलो पानी में नींबू रस निचोड़कर एक सप्ताह तक प्रतिदिन अच्छी प्रकार से केश धोएं। नारियल के तेल में तेल से आधा कपूर, नीबू का रस मिलाकर जड़ों में हलकी मालिश करें और रोज मोटे दात वाले कंघे से हल्के हाथों से मालिश करें। बालों को साबुन से न धोकर रीठा से धोएं।

बाल कम होने के कारण

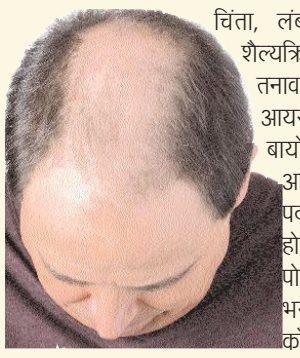

चिंता, लंबी बीमारी या शैल्यक्रिया के कारण तनाव होना। प्रोटीन, आयरन, जिंक या बायोटिन जैसे आवश्यक पोषक पदार्थो की कमी होना। लिहाजा पोषक तत्वों से भरे खाद्य पदार्थो को तरजीह दें। यौन हार्मोनों के स्तर में अचानक बदलाव आना, मसलन महिलाओं में डिलीवरी के बाद। सिर में फंगल संक्रमण होना। हेयरड्रेसिंग (केश सज्जा) तकनीकों का इस्तेमाल करना, जैसे - कसकर गूंथना, मोड़ना या बालों को अत्यधिक तापमान में रखना। ब्लीचिंग, कलरिंग और परमिंग, जैसे - प्रबल रसायनों के इस्तेमाल से बालों का उपचार करना। ये बालों की जड़ों को कमजोर करते हैं और इसके कारण बाल टूटते और झड़ते हैं। एंटीबायोटिक्स, बीटा ब्लॉकर्स और कॉर्टीसोंस जैसी औषधियां लेना। कीमोथेरेपी बालों की कोशिकाओं को नष्ट कर सकती है।

बालों का खयाल रखने के नुस्खे

हेलमेट, कंघियों, हेयरब्रशों और टोपियों को दूसरे लोगों के साथ साझा न करें। बाल गीले हों तो इन पर ब्रश या कंघी न करें। या बहुत कसकर ब्रश नहीं करें। चिंता, अवसाद और अत्यधिक उलेजना पर नियंत्रण रखें। स्वास्थ्यवर्द्धक और संतुलित आहार लें। हरी सब्जियां, नारियल, सोया, मछली, अंडे, लीवर और बादाम तथा अखरोट जैसी गिरियां आपके बालों को अच्छा पोषण प्रदान कर सकती है।

हैप्पी रहने के 9 मंत्र

- जिस जगह या स्थान में जाने पर आपके मन को सुकून मिलता हो, ऐसी जगह पर बार-बार जाएं।
- एक कहावत है कि किसी को नाराज करने में एक मिनट का भी समय नहीं लगता, लेकिन किसी को हंसाने में कई घंटे बीत जाते हैं। इसलिए दूसरों को हंसने का अवसर अवश्य प्रदान करें।
- सकारात्मक सोच से कठिन से कठिन दिखाई देने वाले काम आसानी से संपन्न हो जाते हैं। यदि आप अपने मन में सकारात्मक भाव जाग्रत करेंगी तो आपका हर काम आसानी से पूरा हो जाएगा।
- अपनी छोटी-बड़ी हर उपलब्धि का जश्न मनाएं। कभी भी इस इंतजार में छोटी उपलब्धि को दरकिनार न करें कि जब बड़ी उपलब्धि हासिल होगी तो जश्न मनाएंगी।
- तन की सुंदरता के बजाय मन की सुंदरता को महत्व दें। तन की सुंदरता तो कुछ वर्ष्षो की मेहमान है, जबकि मन की सुंदरता तो हमेशा साथ रहेगी।
- अपने आसपास के लोगों पर विश्वास करें। यदि आप हरेक को शंकालु दृष्टि से देखेंगी तो जिंदगी का आनंद उठाने से वंचित रह जाएंगी।
- कौन कैसा है इस बात पर ज्यादा दिमाग न लगाएं। इसके बजाय इस बात पर ध्यान केंद्रित करें कि आप अपने को और अच्छा कैसे बना सकती हैं।
- जो बात दिल में हो उसे कहने में संकोच न करें। कई बार हम अपने दिल की बात जुबां पर नहीं ला पाते और हमें बाद में पछताना पड़ता है।
- बिस्तर पर जाने से पहले सारी चिंताओं को अलग कर दें और बेफ्रिक होकर लेटें।

त्वचा कहे नो चिपचिप

तैलीय और चिपचिपी त्वचा चेहरे के आकर्षण को कम कर देती है, लेकिन ऐसी त्वचा की अगर सही देखभाल की जाए तो वह निखर उठेगी। इसके लिए आप यहां दिए कुदरती उपायों को अपनाएं। त्वचा का तैलीय होना सिबेशियस ग्लैंड्स के अत्यधिक सक्रिय होने का नतीजा होता है। त्वचा की कोमलता बरकरार रखने के लिए प्राकृतिक तेल जरूरी है, पर जब तैलीय ग्रंथियां अधिक तेल का सिक्रीशन करती हैं तो एक्ने और मुंहासों की समस्या शुरू हो जाती है। ऐसे में धूल-मिट्टी और प्रदूषण के कारण त्वचा के छिद्र भी बंद हो जाते हैं। अगर आप भी तैलीय त्वचा से परेशान हैं तो यहां दिए गए कुदरती उपायों को अपनाएं और पाएं साफ-सुथरी व निखरी त्वचा।

6 टिप्स हैल्दी त्वचा के लिए

- सेब को छीलकर पेस्ट बना लें। इसे चेहरे व गर्दन पर लगाएं। 20 मिनट बाद हलके गुनगुने पानी से चेहरा साफ कर लें। सेब एएचए का बेहतरीन स्रोत होता है, जो त्वचा को टोन करता है। उसे मुलायम और कांतिमय बनाता है।
- एक टी स्पून चंदन पाउडर में गुलाबजल मिलाकर पेस्ट बनाएं। फिर उसे चेहरे पर लगाएं। सूखने पर पानी से धो लें। इससे त्वचा के दाग-धब्बे और एक्ने भी दूर होंगे।
- 1 टी स्पून बेसन में चुटकी भर हल्दी पाउडर, आधा नीबू का रस मिलाकर पेस्ट बनाएं। अगर आपको नीबू सूट नहीं करता है तो उसकी जगह पर दही मिला सकती हैं। आंखों के आसपास का हिस्सा छोड़कर लगाएं। सूखने पर हलके हाथों से मलते हुए छुड़ाएं। यह त्वचा का कालापन दूर करता है। हल्दी त्वचा की चमक बरकरार रखती है।
- तैलीय त्वचा को भी मॉयस्चराइजर की जरूरत होती है और इसके लिए आप शहद का इस्तेमाल कर सकती हैं। शहद एक बेहतरीन कुदरती मॉयस्चराइजर होता है। इसे चेहरे पर 15 मिनट लगाएं। फिर धो लें। यह त्वचा की जलन, मुंहासे और कालेपन को दूर करता है। साथ ही उसे कांतिमय और लचीली बनाता है।
- 1 टेबल स्पून चावल के आटे में 1 टेबल स्पून कॉर्नफ्लोर और नीबू के रस की कुछ बूंदें मिलाकर चेहरे पर लगाएं। फिर भीतर से बाहर की तरफगोलोई में हाथ घुमाते हुए कुछ देर मसाज करें। चावल का आटा डेड सेल्स हटाता है। त्वचा के छिद्र भी खोलता है, ताकि साफऑक्सीजन त्वचा के भीतर जा सके।
- 1 टेबल स्पून मुलतानी मिट्टी में अंडे की सफेदी, 1 टेबल स्पून ओट्स पाउडर, 1 टेबल स्पून कॉर्नफ्लोर और गुलाबजल मिलाकर गाढ़ा पेस्ट तैयार करें। इसे चेहरे व गर्दन पर लगाएं। 20 मिनट बाद चेहरा साफ कर लें।

खीरे से बना फेस पैक फायदेमंद

यदि आपकी त्वचा तैलीय है तो खीरे का फेस पैक आपके लिए बहुत अच्छा एक अच्छा फेस पैक है। खीरे का फेस पैक बनाने के लिए एक खीरे में एक अंडे की सफेदी, 1 चम्मच नींबू का रस और पुदीने की 5-6 पत्तियों को मिलाकर पीस लें। अब इसे 10 मिनट के लिए फ्रिज में रख दें। उसके बाद इस पैक को चेहरे पर लगाएँ और कुछ देर बाद चेहरा ठंडे पानी से धो लें।

चंदन एक फायदे अनेक

कीलमुंहासों के ठीक होने के बाद चेहरे पर किसी प्रकार के दागधब्बों को भी चंदन के लेप से साफ़ किया जा सकता है। चंदन का लेप केवल कीलमुंहासों को, ठीक नहीं करता बल्कि त्वचा को साफ़ कर नमी भी प्रदान करता है। 1 चम्मच चंदन पाउडर में आधा चम्मच पाउडर मिला कर पेस्ट बना कर चेहरे पर 20 मिनट लगाए रखने से केवल कीलमुंहासे कम नहीं हो, आप का चेहरा भी खिलाखिला प्रतीत होता है। बराबर मात्रा में चंदन पाउडर हलदी पाउडर मिला कर थोड़े दूध के साथ पेस्ट बनाएं, इस में चुटकी भर कपूर भी मिलाएं। इस लेप की चेहरे पर मालिश कर रात भर लगा रहने दें। इस से आप को ठंडक के एहसास के साथसाथ चेहरे के दागधब्बे दूर होने का फायदा भी मिलेगा।

साइड इफैक्ट नहीं

चंदन का प्रयोग प्राचीन काल से चला आ रहा है। खासकर आयुर्वेद में चंदन का प्रयोग खूब किया गया है। किसी प्रकार का घाव, फोड़ेफुंसी, कटनाछिलना आदिसभी पर चंदन के लेप से आराम मिलता है। यह एक कीमती पेड़ है, जो दक्षिण भारत में ज्यादातर पाया जाता है। चंदन का उबटन शादी से पहले नववधू लगाती है ताकि उस के चेहरे और काया की चमक बनी रहे। यह एक प्राकृतिक पदार्थ है, इसलिए इस के नियमित प्रयोग से किसी प्रकार का साइड इफेक्ट नहीं होता।

इस की खूबियाँ

चंदन में कीटाणुनाशक विशेषता होने की वजह से यह हर्बल एंटीसेप्टिक है, इसलिए किसी भी प्रकार के छोटे घाव और खरोंच को ठीक करता है। यह जलने से हुए घाव को भी ठीक कर सकता है।

शरीर के किसी भाग पर खुजली होने पर चंदन पाउडर में हल्दी और एक चम्मच नीबू का रस मिला कर लगाने से खुजली तो दूर होगी ही, साथ में त्वचा की लालिमा भी कम होगी। चंदन का तेल सूखी त्वचा के लिए गुणकारी होता है। यह सूखी त्वचा को नमी प्रदान करता है।

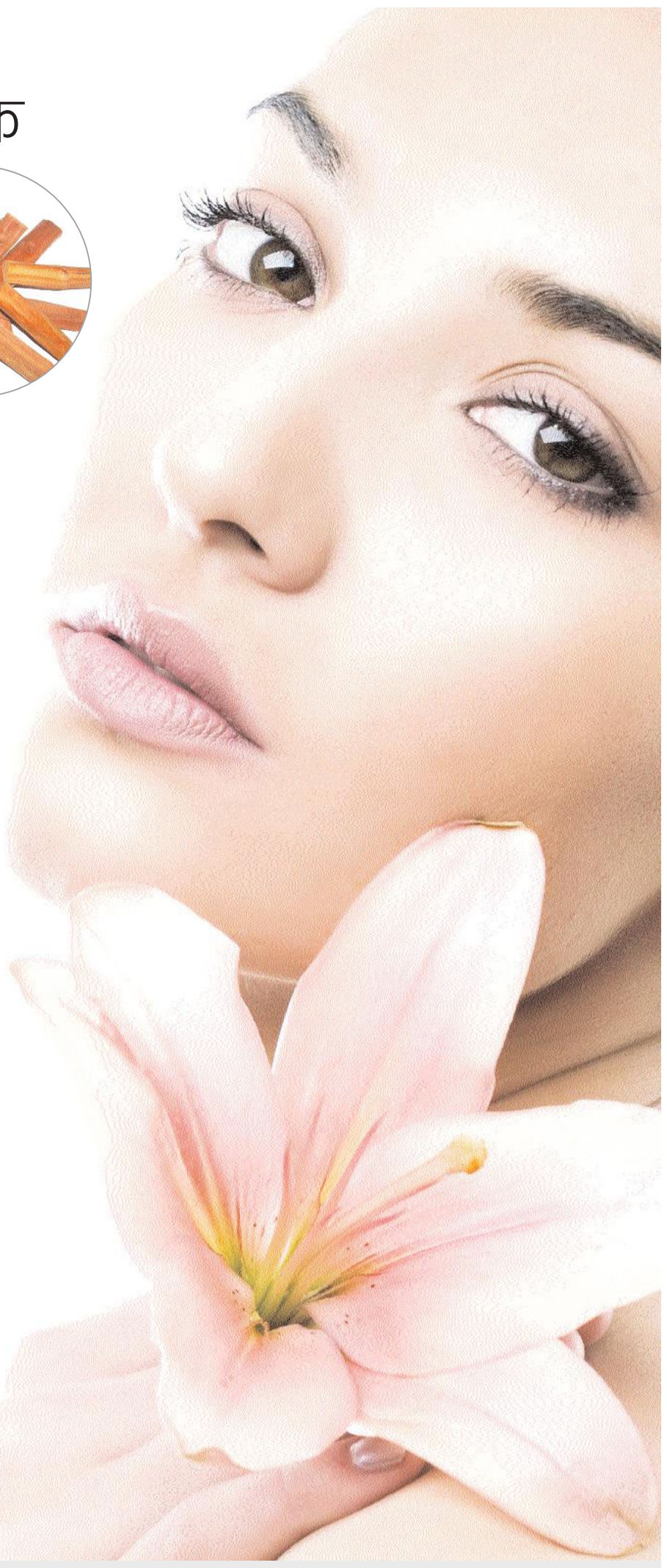

पथरी से सावधान

पेशाब की पथरी पेशाब में उपस्थित लवणों व खनिजों के जमाव से बनते हैं। ये आमतौर पर मध्य आयु यानि की चालीस साल या उसके बाद पता लगने शुरू होते है। जब लवणों और खनिजों की परतें विभिन्न जगहों पर जमा होती जाती हैं तो इन पत्थरों का आकार बढ़ता जाता है। ये पत्थर आमतौर पर कैल्शियम के फास्फेट और ऑक्जेलेट होते हैं। ये सभी लवण और खनिज खाने की चीजो व पानी से शरीर में आए होते है। कुछ सब्ज़ियाँ जैसे पालक, अरबी के पत्ते और टमाटरों में बहुत अधिक लवण होते हैं। जमीनी पानी में भी काफी सारे लवण होते हैं। कुएँ या बोरवेल का पानी यह भी पथरी बनने का कारण होता है। ये लवण धीरे-धीरे करके शरीर में जमा हो जाते हैं और पत्थर बना लेते हैं। पेशाब के पत्थर आकृति और आकार में अलग-अलग होते हैं। आमतौर पर ये उसी जगह का आकार ले लेते हैं जिसमें ये बनते हैं। इसलिए मूत्रवाहिनी के पत्थर लम्बे होते हैं और मूत्राशय में बने पत्थर गोल होते हैं। गुर्दे में बने पत्थर या तो कीप के आकार के होते हैं या अनियमित आकार के जैसे कि हिरण के सींग। फोस्फेट और कॉर्बोनेट के पत्थरों की सतह मुलायम होती है और ऑक्सेलेट के पत्थरों की खुरदुरी। इस कारण से ऑक्सेलेट के पत्थरों के कारण खून भी निकल सकता है। कुपोषित बच्चों के मूत्राशय में कभी कभी बड़े-बड़े पत्थर बन जाते हैं। ये कुपोषण के कारण शरीर के प्रोटीन के टूट जाने के कारण बनते है। जिसमें पेशाब में फालतू पदार्थ का जमाव हो जाता है। ये कण लवणों के और जमाव के लिए केन्द्रक के रूप में काम करते हैं। पत्थर नींबू समान बड़े भी हो सकते हैं।

गुर्दे की कीप में पत्थर

गुर्दे की कीप में पत्थर कई सालों तक महसूस हुए बिना शरीर में पड़े रह सकते हैं। अक्सर उस व्यक्ति को पता लगने से कही पहले गुर्दे खराब हो चुके होते हैं। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि यह बीमारी काफी धीमी होती है और एक गुर्दे के खराब होने पर दूसरा उसका काम चला लेता है। कुछ मामलों में थोड़ी सी बेआरामी हो सकती है। यह गुर्दे के क्षेत्र तक ही सीमित होती है। और यह हल्का दर्द पीठ के तरफ ज़्यादा महसूस होता है। कभी-कभी कीप के क्षेत्र में पेशाब के इकट्ठे हो जाने के कारण गुर्दे सूज भी जाते हैं। कभी-कभी ऐसा बड़ा गुर्दा एक गांठ जैसे की हाथ से ही महसूस हो जाता है। कभी-कभी यह समस्या गुर्दे में संक्रमण के रूप में सामने आती है। कभी-कभी गुर्दे की पेशियाँ पत्थर को कीप से नीचे मूत्रवाहिनी की और धकेलती है। ऐसे में एक खास तरह का तेज पेट दर्द नीचे की ओर जाता हुए महसूस होता है। यह दर्द लहरों के रूप में उठता है।

दर्द

मूत्रवाहिनी शूल (दर्द) एक खास तरह का दर्द है जो इस तरह की पथरी से होता है। दर्द पेट में मूत्रतंत्र तक सीमित होता है। यह पेट की मध्यरेषा के दायें या बाएँ ओर होता है। रोगी दर्द से कराहता है। वो या तो उस क्षेत्र को दबाकर या फिर एक तरफ को लेटकर दर्द को दबाने की कोशिश करता है। दर्द मूत्रमार्ग की ओर बढ़ता है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि मूत्रनलिका और मूत्रवाहिनी की तंत्रिकाओं की जुड़ी समान होती हैं।

मूत्राशय में पथरी

पेशाब करना थोडा मुश्किल होता है। ये पत्थर मुख्यत: मूत्रवाहिनी से आते है। कभी-कभी सीधे मूत्राशय में भी पत्थर बन सकता है। कुपोषित बच्चों में ऐसा होता है। इसके लक्षणों में मुख्यत: मूत्राशय शोथ या पेशाब अटकना शामिल है। मूत्राशय शोथ में खास तरह की जलन, और ऐठन वाला दर्द, बुखार, पेशाब में गन्दलापन और बार-बार पेशाब करने की इच्छा होती है। मूत्राशय में हुए पत्थरों से कुछ रोगियों के पेशाब में रक्त स्त्राव दिखाई देता है। मूत्राशय के पत्थरों के कारण पेशाब रूकने की एक खास विशेषता है रोगी की स्थिति से इसका सम्बन्ध। जब रोगी खड़ा होता है या पेशाब करने के लिए बैठा होता है उस समय ये पत्थर मूत्राशय के निकास मुँह पर गेंद की तरह पड़ा रहता है रोगी जितना ज़्यादा जोर लगाता है उतना ही ज़्यादा रोक लगती है। परन्तु अगर रोगी लेटे लेटे पीठ के बल या करवट से पेशाब करने की कोशिश करे तो पत्थर मूत्राशय के निकास मुँह से लुढ़क जाता है। इससे पेशाब बाहर निकल सकती है। कभी-कभी छोटे पत्थर या कंकड़ बड़े पत्थरों के छोटे-छोटे टुकड़े मूत्रमार्ग में से निकल जाते हैं।

मुल्तानी मिट्टी जरूर इस्तेमाल करें

अगर आप महंगे-महंगे ब्यूटी प्रोडक्ट, शैम्पू, ऑलिव ऑयल का इस्तेमाल करते हुए थक चुकी हैं, फिर भी आपको कोई फ़ायदा नहीं हुआ है तो एक बार मुल्तानी मिट्टी ज़रूर इस्तेमाल करके देखें। जानी-मानी सौन्दर्य विशेषज्ञ भारती तनेजा का कहना है कि मुल्तानी मिट्टी सौन्दर्य का ख़ज़ाना है। ये नेचुरल कंडीशनर भी है और ब्लीच भी। ये सौन्दर्य निखारने का सबसे सस्ता और आयुर्वेदिक नुस्खा है। साथ-ही मुल्तानी मिट्टी सभी फेस पैक का बेस होती है। चेहरे पर मुल्तानी मिट्टी का लेप लगाने से रंगत निखरती है और बालों में लगाने से वे घने, मुलायम और काले हो जाते हैं। मुहांसों की समस्या से परेशान लोगों के लिए तो मुल्तानी मिट्टी सबसे कारगर इलाज है, क्योंकि मुल्तानी मिट्टी चेहरे का तेल सोख लेती है, जिससे मुहांसे सूख जाते हैं। तैलीय त्वचा के लिए मुल्तानी मिट्टी में दही और पुदीने की पत्तियों का पाउडर मिला कर उसे आधे घंटे तक रखा रहने दें, फिर अच्छे से मिला कर चेहरे और गर्दन पर लगाएं। सूखने पर हल्के गर्म पानी से धो दें। ये तैलीय त्वचा को चिकनाई रहित रखने का कारगर नुस्खा है। एक चम्मच मुल्तानी मिट्टी पाउडर में एक अंडे का सफेद भाग और पुदीने की पत्तियों को पीसकर पेस्ट बना लें। ये पैक हफ्ते में तीन बार लगाएं।

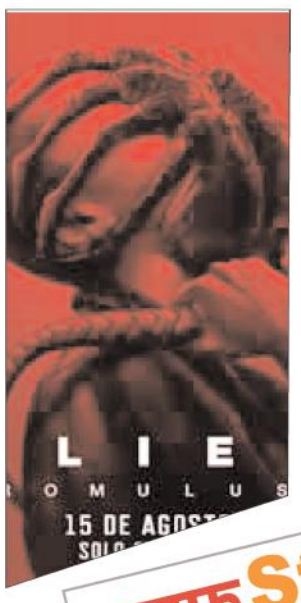

सरकटा से सौ गुना ज्यादा डरावना एलियन

मुंबई। चुस्त पटकथा पर शानदार तरीके से फिल्माई गई फिल्म 'एलियन रोमूलस' बनाने में इसके निर्देशक अपनी तकनीकी टीम खासतौर से इसके सिनेमैटोग्राफर गालो ओलिवारेस और संगीतकार बेंजामिन वालफिश से बढ़िया मदद मिली है। फिल्म 'एलियन रोमूलस' अमेरिका में बीते हफ्ते ही सिनेमाघरों मे रिलीज हो चुकी है। वहां इसे मिली शानदार ओपनिंग को देखते हुए लगता तो यही है कि ये फिल्म श्रद्धा कपूर की फिल्म 'स्त्री 2' के कारोबार पर असर डालेगी। 'स्त्री 2' का सरकटा अगर आपको डराने में कामयाब रहा है तो 'एलियन रोमूलस' उससे सौ गुना ज्यादा डरावना है।

लाइफ Style

रानी

मर्दानी 3 में भी आएंगी नजर

एजेंसी ▶▶ नई दिल्ली

यशराज फिल्म्स ने मर्दानी सीरीज की 3 फिल्म का ऐलान कर दिया है। 22 अगस्त को मर्दानी फिल्म को 10 साल पूरे हुए हैं। इस तरह रानी मुखर्जी को एक बार फिर मुंबई क्राइम ब्रांच की सीनियर इंस्पेक्टर शिवाजी रॉय के किरदार में देखा जा सकेगा।

वाईआरएफ ने इस मौके पर एक वीडियो भी शेयर किया है। मर्दानी हिंदी सिनेमा की सबसे सफल महिला-प्रधान फ्रेंचाइजी है, और इस लोकप्रिय पुलिस फ्रेंचाइजी की 10वीं वर्षगांठ पर, कंपनी ने इसके अगले अध्याय की झलक पेश की है। मर्दानी का पहला भाग 2014 में रिलीज़ हुआ था, और 2019 में इसका सीक्वल भी आया। दोनों फिल्में बॉक्स ऑफिस पर बड़ी हिट रहीं और इनका एक बड़ा फैन बेस है। रानी मुखर्जी ने इस फ्रेंचाइजी में शिवानी शिवाजी रॉय की भूमिका निभाई है, जो एक निडर और साहसी पुलिस अधिकारी हैं, जो हमेशा सही के लिए खड़ी होती हैं और बहुत साहस के साथ न्याय दिलाती हैं। मर्दानी लिंग मान्यताओं को तोड़ते हुए दिखाती है कि एक महिला पुरुष-प्रधान पेशे में सबसे आगे रहकर कैसे नेतृत्व कर सकती है और चाहे हालात कितने भी कठिन क्यों न हों, जरूरतमंदों की रक्षा के लिए वह आगे आती है। यशराज फिल्म्स ने 'मर्दानी' के 10 साल पूरे होने का जश्न खास अंदाज में मनाते हुए एक वीडियो जारी किया, जिसमें 'मर्दानी' और 'मर्दानी 2' फिल्म से रानी मुखर्जी के कुछ सीन दिखाए गए हैं। इसमें उनके कुछ दमदार डायलॉग भी सुनने को मिले, खासकर वो जिसमें, रानी कहती हैं, 'अपने पप्पा को मेरा नाम ठीक से बोल।

हॉलीवुड मसाला

धमकी मिलने से डर गई थीं...

लॉस एंजिल्स। मशहूर गायिका टेलर स्विफ्ट हाल ही में, अपने वियना में होने वाले म्यूजिक कंसर्ट को लेकर उस चर्चा में आ गई, जब इस शो पर आतंकी हमले की साजिश की बात सामने आई। इसके बाद उनके तीन संगीत कार्यक्रमों को रद्द कर दिया गया। अब इस पूरे मामले पर टेलर स्विफ्ट की ओर से जवाब आ गया है। टेलर स्विफ्ट ने अपने इंस्टाग्राम हैंडल पर एक पोस्ट साझा करते हुए लिखा कि उनके वियना में होने वाले शो का रद्द होना दिल दहलाने वाला था।

ट्रेलर के बहाने फ्रांसिस ने क्रिटिक्स पर साधा निशाना

लॉस एंजिल्स। फ्रांसिस फोर्ड कोपोला की आगामी फिल्म 'मेगापोलिस' है। हाल ही में इसका पोस्टर रिलीज हुआ और इसका ट्रेलर भी सामने आ चुका है। लेकिन, ट्रेलर की शुरुआत जरा अनोखे अंदाज में हुई है। इसमें सीधे फिल्म पर बात करने की बजाय फ्रांसिस फोर्ड की पिछली फिल्मों के नेगेटिव रिव्यू के फुटेज दिखाए गए हैं। इनमें 'गॉडफादर', 'एपोकैलिप्स' और 'ड्रैकुला' जैसी फिल्में शामिल हैं, जिनका निर्देशन फ्रांसिस ने किया और बाद में इन्हें काफी चर्चा मिली। ट्रेलर की शुरुआत इस अंदाज में करके शायद फ्रांसिस फोर्ड ने दर्शकों को यह संदेश देना चाहा है कि वे उनकी आगामी फिल्म के संदर्भ में भी क्रिटिक्स की प्रतिक्रिया को तवज्जो न दें। इसके अलावा कान में प्रीमियर के बाद भी 'मेगापोलिस' को काफी आलोचनाओं का सामना करना पड़ा है।

'डॉन-3' में करेंगी आइटम सॉन्ग

नई दिल्ली। शोभिता धुलिपाला के हाथ बॉलीवुड की हिट फिल्म डॉन की तीसरी कड़ी यानी डॉन 3 लगी है। इस फिल्म को लेकर पहले ही खबर आ चुकी है कि रणवीर सिंह, शाहरुख खान को रिप्लेस कर रहे हैं। इस बात की जानकारी खुद फरहान अख्तर ने दी थी कि डॉन 3 में रणवीर सिंह लीड रोल प्ले करेंगे। ऐसे में अब डॉन 3 में नागार्जुन की बहू शोभिता धुलिपाला के एंट्री की खबरें भी सामने आ रही हैं। शोभिता धुलिपाला से फरहान अख्तर की फिल्म में एक आइटम सॉन्ग के लिए संपर्क किया गया है। फरहान का मानना है कि शोभिता डॉन 3 के आइटम सॉन्ग में चार चांद लगा देंगी। फिलहाल इसको लेकर शोभिता से बात चल रही है। अभी तक उनकी तरफ से कोई फाइनल जवाब सामने नहीं आया है। डॉन 3 के निर्माताओं ने हाल ही में इंस्टाग्राम पर एक वीडियो शेयर किया था।

'कांतारा-2' के लिए कर रहे खास तैयारी

मुंबई। ऋषभ शेट्टी की फिल्म 'कांतारा' को खास तौर पर पसंद आई थी। इस साल फिल्म ने नेशनल अवॉर्ड भी जीता है। कम बजट में बनी इस फिल्म ने अपनी कहानी के दम पर बॉक्स ऑफिस पर अच्छी कमाई की और ब्लॉकबस्टर साबित हुई। फिल्म के हिट होने के बाद ही ऋषभ ने इसके अगले भाग की घोषणा कर दी थी, जो वास्तव में इस फिल्म का प्रीक्वल होगा। ऋषभ फिल्म के प्रीक्वल के लिए काफी तैयारियां कर रहे हैं। इसी बीच ऋषभ शेट्टी ने एक नई फोटो पोस्ट की है। पोस्ट की गई तस्वीर में वह कलारीपयट्टू का अभ्यास करते दिख रहे हैं। इस फोटो में हम देख सकते हैं कि उन्होंने काला बरगद पहना हुआ है, मैरून रंग का दुपट्टा बांध रखा है, बालों का जूड़ा बनाया हुआ है और तलवार और ढाल पकड़ रखी है।

टीवी मसाला

तारक मेहता के 'अब्दुल' ने 16 साल बाद छोड़ा शो?

नई दिल्ली। तारक मेहता का उल्टा चश्मा एक ऐसा फैमिली शो है जिसे लगभग हर कोई पसंद करता है। पिछले 16 सालों से दर्शकों को हंसा रहा ये शो कई बार विवादों में भी आया, लेकिन इस शो के फैंस का प्यार शो के लिए नहीं बदला। हालांकि, शो से कुछ पुराने एक्टर्स ने विदा जरूर ले ली है। शो से विदा लेने वाले एक्टर के तौर पर शरद संकला का नाम सामने आ रहा है। शरद संकला शो में अब्दुल का किरदार निभाते हैं। अब्दुल शो के पहले एपिसोड से ही दर्शकों के साथ जुड़े हुए हैं। शो में अब्दुल गोकुलधाम सोसाइटी के बाहर ही एक किराना शॉप चलाते हैं। साथ ही, वो सोसाइटी के भी छोटे-मोटे काम किया करते हैं। ओटीटी प्ले की रिपोर्ट के मुताबिक, शरद संकला ने मई 2024 को कुछ कारणों के चलते शो को छोड़ दिया था। शो के लेटेस्ट एपिसोड्स से शरद संकला की गैरमौजूदगी के चलते ये अफवाहें तेज हो गई हैं कि एक्टर ने शो छोड़ दिया है। हालांकि, शरद की तरफ से या शो के मेकर्स की तरफ से इन खबरों की पुष्टि नहीं की गई है।

नरेशी के ब्रेन ट्यूमर के इलाज में मदद करेंगे अमिताभ

नई दिल्ली। केबीसी 16 के लेटेस्ट एपिसोड में विष्णु अच्युत के बाद अमिताभ बच्चन के साथ हॉट सीट पर राजस्थान की नरेशी मीणा को खेलने का मौका मिला। प्रोमो में दिखाया जा चुका है कि नरेशी को ब्रेन ट्यूमर जैसी गंभीर बीमारी है। उनका हौसला देख बिग भी इमोशनल हो गए। नरेशी ने बताया कि उन्हें इलाज के लिए काफी पैसों की जरूरत है। बिग बी ने उनसे वादा किया कि वह नरेशी की मदद करेंगे। कौन बनेगा करोड़पति 16 की 27 साल की कंटेस्टेंट नरेशी ने जब ब्रेन ट्यूमर होने की बात बताई तो हर कोई शॉक्ड रह गया। नरेशी ने अमिताभ बच्चन को बताया, 'सर मुझे साल 2018 में ब्रेन ट्यूमर का पता चला था। 2019 में मेरी सर्जरी भी हो गई, इसके लिए मेरी मां को अपने गहने बेचने पड़े। सर्जरी के बाद भी डॉक्टर पूरा ट्यूमर नहीं निकाल पाए। यह क्रिटिकल जगह पर है जिसके लिए दोबारा सर्जरी करनी पड़ेगी।

दिमाग हिला देगा 'सिकंदर' का एक्शन

तीन बड़ी फाइट और हवाई एक्शन सीन की चल रही तैयारी

नई दिल्ली। टाइगर 3 के बाद सलमान खान एआर मुरुगदास की फिल्म सिकंदर में नजर आने वाले हैं। इस फिल्म की घोषणा के बाद से ही फैंस काफी ज्यादा उत्साहित हैं। माना जा रहा है कि सिकंदर में अपने एक्शन से सलमान अपने प्रसंशकों पर अमिट छाप छोड़ेंगे। यही वजह है कि इस महत्वाकांक्षी प्रोजेक्ट के एक्शन दृश्यों को सावधानीपूर्वक योजनाबद्ध तरीके से तैयार किया जा रहा है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक सिकंदर के अगले शेड्यूल में सलमान कथित तौर पर तीन जबर्दस्त फाइट सीन और एक हवाई एक्शन सीन की शूटिंग करेंगे। 26 अगस्त को मुंबई के चित्रकूट मैदान में शुरू होने वाले इस महत्वपूर्ण शेड्यूल में बड़े पैमाने पर खतरनाक स्टंट शूट किए जाएंगे। फिल्म का निर्माण साजिद नाडियाडवाला कर रहे हैं। सिकंदर को ईद 2025 पर रिलीज करने की तैयारी चल रही है। सलमान ने इस साल ईद के दौरान इंस्टाग्राम पर इस फिल्म की घोषणा की थी। गजनी जैसी ब्लॉकबस्टर फिल्म बना चुके एआर मुरुगदास के साथ यह उनका पहला प्रोजेक्ट है। फिल्म में सलमान के साथ रश्मिका मंदाना भी हैं। वहीं, सुनील शेट्टी और प्रतीक बब्बर भी इस फिल्म में महत्वपूर्ण भूमिकाएं निभाएंगे।

इस एक्ट्रेस ने सुंदर दिखने के लिए करवाई थीं 29 सर्जरी

पुरानी तस्वीर देखकर पहचान नहीं पाएंगे कौन थी ये हसीना

नई दिल्ली। बॉलीवुड एक्ट्रेसेज अपनी फिटनेस और खूबसूरती का खास ध्यान रखती हैं। वो चाहती हैं कि उनके चेहरे की चमक हमेशा बनी रहे और वो कभी उम्रदराज ना दिखें। बॉलीवुड की एक ऐसी ही एक्ट्रेस से आज हम आपको रूबरू कराने जा रहे हैं जिन्होंने खूबसूरत दिखने के लिए 29 सर्जरी करवाई थीं। इतना ही नहीं जब उनकी मौत हुई उससे पहले भी उन्होंने एक सर्जरी करवाई थी जो गलत हो गई थी। फिलहाल इस एक्ट्रेस की सर्जरी से पहले ही फोटो वायरल हो रही है। इस तस्वीर में उनका लुक इतना अलग है कि आप पहचान नहीं पाएंगे।

बॉलीवुड की पहली फीमेल सुपरस्टार : अगर अभी आप नहीं पहचान पाए हैं तो कोई बात नहीं हम आपको बता देते हैं कि आखिर ये एक्ट्रेस हैं कौन। ये एक्ट्रेस कोई और नहीं, बल्कि श्रीदेवी हैं। बताया जाता है कि श्रीदेवी ने कई सर्जरी करवाई थीं। दरअसल इन दिनों सोशल मीडिया पर श्रीदेवी की एक थ्रोबैक तस्वीर तेजी से वायरल हो रही है। इसमें उन्हें पहचान पाना थोड़ा मुश्किल होगा। फैंस भी इस फोटो पर कमेंट कर रहे हैं। एक फैन ने लिखा- श्रीदेवी जी, यंग वन. वहीं दूसरे ने लिखा- पहचानना मुश्किल हो रहा है।

चाहती थीं कि वो हमेशा जवान दिखें

श्रीदेवी अपनी खूबसूरती को लेकर बहुत कॉन्शियस रहती थीं। वो चाहती थीं कि वो हमेशा जवान दिखें, इसलिए वो सर्जरी करवाती रहती थीं। रिपोर्ट्स की मानें तो उन्होंने 29 सर्जरी करवाई थीं। इनमें लेजर स्किन सर्जरी, सिलिकॉन ब्रेस्ट करेक्शन, बोटोक्स, बॉडी टकिंग, फेस लिफ्ट अप्स जसी कई सर्जरी शामिल थीं। मौत से कुछ दिनों पहले भी उन्होंने लिप्स सर्जरी करवाई थी। जिसकी वजह से उनकी होठों की शेप बिगड़ गई थी। सर्जरी बिगड़ने के बाद डॉक्टर ने उन्हें मेडिसिन के हाई डोज दिए थे। श्रीदेवी 24 फरवरी 2018 को इस दुनिया को अलविदा कहकर चली गई थीं। आज भी उनका परिवार उनकी मौत के सदमे में है। उनकी दोनों बेटियां मां के जन्मदिन और डेथ एनिवर्सरी पर मां को याद करके सोशल मीडिया पर पोस्ट शेयर करती हैं। जाह्नवी मां के लिए प्रार्थना करने के लिए तिरुपति बालाजी भी जाती हैं।

सूची में स्त्री 2 वाले अमर कौशिक भी शामिल

इन निर्देशकों ने अपनी फिल्म में निभाई विशिष्ट भूमिका

मुंबई। *स्त्री 2 बॉक्स ऑफिस पर इन दिनों धुआंधार कमाई कर रही है। भारतीय बॉक्स ऑफिस पर जल्द ही यह फिल्म 300 करोड़ के क्लब में पहुंचने वाली है। श्रद्धा कपूर की अदाकारी के साथ लोग फिल्म के निर्देशक अमर कौशिक की भी जमकर तारीफ कर रहे हैं। स्त्री 2 के निर्देशन के साथ फिल्म में अमर की झलक भी लोगों को नजर आई। 'आज की रात' गाने में वह तमन्ना भाटिया के साथ थिरकते हुए नजर आए हैं। लोगों को उनका यह अंदाज काफी पसंद आ रहा है। इससे पहले भी कई निर्देशक अपनी ही फिल्मों में कुछ समय के लिए दिखाई दे चुके हैं।*

एटली : तमिल सिनेमा के सुपरहिट निर्देशक एटली कुमार ने हाल ही में फिल्म जवान बनाई थी। इस फिल्म में शाहरुख खान डबल रोल में नजर आए थे। बॉक्स ऑफिस पर फिल्म ने कमाई के कई रिकॉर्ड अपने नाम कर डाले थे। हिंदी सिनेमा के इतिहास की सबसे अधिक कमाई करने वाली इस फिल्म के गाने 'जिंदा बंदा' में एटली भी थिरकते हुए नजर आए थे।

प्रभुदेवा : बहुमुखी प्रतिभा के धनी प्रभुदेवा का नाम भी इस सूची में शामिल है। डांस के साथ अभिनय और निर्देशन में भी उन्होंने खूब कामयाबी हासिल की है। फिल्म वॉन्टेड के 'जलवा' और राउडी राठौर के गाने 'चिंता ता ता' में वह भी थिरकते हुए नजर आ चुके हैं। फैंस को यह दोनों ही गाने खूब पसंद आए थे।

अयान मुखर्जी : अयान मुखर्जी अब तक कई हिट फिल्मों का निर्देशन कर चुके हैं। फिल्म ये जवानी है दीवानी उनके करियर की सबसे यादगार फिल्मों में से एक है। बॉक्स ऑफिस पर यह फिल्म ब्लॉकबस्टर साबित हुई थी। इस फिल्म के बदतमीज दिल में अयान की झलक देखने को मिली थी।

अनुराग कश्यप : अनुराग कश्यप को हिंदी फिल्म इंडस्ट्री के सबसे काबिल निर्देशकों में से एक माना जाता है। हाल ही में रिलीज हुई फिल्म महाराजा में लोगों को उनकी एक्टिंग खूब पसंद आई। अनुराग भी अपनी फिल्म में कैमियो कर चुके हैं। फिल्म देव डी में उनकी एक झलक लोगों को देखने को मिली थी।

भारतीय क्रिकेट के 'गब्बर' शिखर धवन ने की क्रिकेट से संन्यास की घोषणा

एजेंसी ▸▸ नई दिल्ली

भारत के अनुभवी सलामी बल्लेबाज शिखर धवन ने क्रिकेट के सभी प्रारूपों से संन्यास की घोषणा की है। दो साल पहले देश के लिए अपना अंतिम मैच खेलने वाले इस वामहस्त बल्लेबाज ने कहा कि वह तीनों प्रारूपों में देश का प्रतिनिधित्व करने के बाद एक संतुष्ट इंसान के तौर पर इस खेल को अलविदा कह रहे हैं।

इस 38 साल के खिलाड़ी ने 2010 में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ विशाखापट्टनम में एकदिवसीय मैच के साथ अपने अंतरराष्ट्रीय करियर को शुरू किया था। उन्होंने देश के लिए अपना आखिरी मैच 2022 में बांग्लादेश के खिलाफ खेला। धवन ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर लिखा, 'मैं अपनी क्रिकेट यात्रा का यह अध्याय समाप्त कर रहा हूं लेकिन मेरे साथ अनगिनत यादें हैं और मैं बहुत आभारी हूं। प्यार और समर्थन के लिए धन्यवाद। जय हिंद।'

मेरे दिल में सुकून : धवन

वीडियो पोस्ट में धवन ने कहा, 'नमस्कार सभी को, आज मैं एक ऐसे मोड़ पर खड़ा हूं जहां से पीछे देखने पर सिर्फ यादें ही नजर आती हैं और आगे देखने पर पूरी दुनिया। मेरी हमेशा से सिर्फ एक ही मंजिल थी भारत के लिए खेलना और वो हुआ भी जिसके लिए मैं कई लोगों का शुक्रगुजार हूं। वो कहते हैं ना कहानी में आगे बढ़ने के लिए पन्ने पलटना जरूरी है, बस मैं भी ऐसा ही करने जा रहा हूं। मैं अंतरराष्ट्रीय और घरेलू क्रिकेट से अपने संन्यास की घोषणा करता हूं। और अब जब मैं अपनी क्रिकेट यात्रा को अलविदा कर रहा हूं तो मेरे दिल में सुकून है कि मैं अपने देश के लिए बहुत खेला।'

बीसीसीआई का शुक्रिया

धवन ने कहा, 'मैं बहुत शुक्रगुजार हूं, बीसीसीआई और डीडीसीए का, जिन्होंने मुझे मौका दिया और सारे फैन्स का जिन्होंने मुझे इतना सारा प्यार दिया। मैं खुद से यही बात कहता हूं कि तू इस बात से दुखी मत हो कि तू अपने देश के लिए फिर नहीं खेलेगा, पर इस बात की खुशी अपने पास रख कि तू देश के लिए खेला और यही मेरे लिए सबसे बड़ी बात है।'

शिखर धवन के कारनामे

- अंडर 19 विश्व कप 2004 में प्लेयर ऑफ द टूर्नामेंट
- चैंपियंस ट्रॉफी 2013 विजेता
- चैंपियंस ट्रॉफी 2013 में भारत के लिए सबसे ज़्यादा रन
- चैंपियंस ट्रॉफी 2013 में प्लेयर ऑफ द टूर्नामेंट
- एशिया कप 2014 में भारत के लिए सबसे ज़्यादा रन
- वर्ल्ड कप 2015 में भारत के लिए सबसे ज़्यादा रन
- चैंपियंस ट्रॉफी 2017 में भारत के लिए सबसे ज़्यादा रन
- निदहा ट्रॉफी 2018 में भारत के लिए सबसे ज़्यादा रन
- एशिया कप 2018 में भारत के लिए सबसे ज़्यादा रन
- एशिया कप 2018 में प्लेयर ऑफ द टूर्नामेंट
- SENA देशों में वनडे शतक बनाने वाले एकमात्र भारतीय ओपनर
- आईसीसी वनडे टूर्नामेंट में सबसे ज़्यादा एवरेज

शिखर का इंटरनेशनल रिकॉर्ड

प्रारूप	मैच	रन	औसत	शतक	अर्धशतक
टी20	68	1759	27.92	00	11
वनडे	167	6793	44.11	17	39
टेस्ट	34	231	40.61	07	05
आईपीएल	222	6769	35.26	02	51

क्रिकेट जगत की शुभकामनाएं कहा-शुक्रिया गब्बर

'बधाई हो शिखर। जब से आपने मोहाली में मेरी जगह ली, आपने पीछे मुड़कर नहीं देखा और पिछले कुछ वर्षों में कुछ शानदार प्रदर्शन किए। आप मौज-मस्ती करते रहें और जिंदगी को पूरी तरह से जिएं। आपको हमेशा के लिए बहुत बहुत शुभकामनाएं।'

वीरेंद्र सहवाग

'शानदार करियर के लिए शिखर को बहुत-बहुत बधाई। मुझे शिखर के बारे में जो बात सबसे अच्छी लगी, वह यह थी कि वह एक शानदार क्रिकेटर है, इसके अलावा वह एक ऐसे व्यक्ति है जो हमेशा मिलनसार रहे हैं और हर स्थिति में सकारात्मक चीजों को देखते थे। आपको आगे की यात्रा के लिए शुभकामनाएं।'

वीवीएस लक्ष्मण

शिखर धवन अंतरराष्ट्रीय और घरेलू क्रिकेट से संन्यास ले रहे हैं, हम उन्हें आगे के लिए शुभकामनाएं देते हैं।'

बीसीसीआई

'शानदार करियर के लिए बधाई, शिखर धवन, आपको अगले अध्याय के लिए शुभकामनाएं। आपका संन्यास का जीवन शुभ हो।'

अनिल कुंबले

'शानदार करियर और अनगिनत उपलब्धियों के लिए बधाई हो धवन। आपके साथ ड्रेसिंग रूम साझा करने का अनुभव शानदार रहा। आपको भविष्य के लिए शुभकामनाएं।'

सुरेश रैना

हार्दिक पंड्या ने अपनी इंस्टाग्राम स्टोरी में लिखा, ''आपके लिए सिर्फ शुभकामनाएं शिखर पा। शानदार करियर के लिए बधाई।'

हार्दिक पंड्या

'शानदार करियर के लिए बधाई शिखर। मुझे पता है कि आप भविष्य में जो कुछ भी करेंगे उसके जरिए वही खुशी फैलाएंगे।'

गौतम गंभीर

'बधाई हो शिखर पा। भविष्य में आपके साथ जो भी हो उसके लिए शुभकामनाएं।'

श्रेयस अय्यर

'आपको कड़ी मेहनत, दृढ़ संकल्प, बेहतरीन क्रिकेट कौशल और महान इंसान के तौर पर हमेशा याद किया जाएगा। आप भविष्य में जो भी करेंगे, उसके लिए शुभकामनाएं।'

सईद अनवर

'वह बड़े टूर्नामेंटों के खिलाड़ी रहे हैं। उन्हें कभी वह प्रशंसा नहीं मिली जिसके वह हकदार थे, लेकिन जब तक टीम जीत रही थी, तब तक किसे सराहना मिली उन्होंने कभी इसकी परवाह नहीं की। एक टीम खिलाड़ी के तौर पर शानदार करियर के लिए बधाई और शुभकामनाएं।'

- वसीम जाफर

खबर संक्षेप

भारतीय निशानेबाजी दल पेरिस के लिए रवाना

नई दिल्ली। पिस्टल निशानेबाज मनीष नरवाल ने आगामी पेरिस खेलों में भारतीय निशानेबाजी दल के टोक्यो पैरालंपिक में पदक तालिका को पार करने पर भरोसा जताते हुए शनिवार को कहा कि 'कड़े' अभ्यास के बाद टीम अच्छी स्थिति में है। राइफल निशानेबाज अवनी लेखरा, मोना अग्रवाल और नरवाल सहित 10 सदस्यीय निशानेबाजी दल 30 अगस्त से पेरिस के पास शेटराउ में आयोजित होने वाले निशानेबाजी स्पर्धाओं में चुनौती पेश करेगी। भारत ने टोक्यो पैरालंपिक में दो स्वर्ण, एक रजत और दो कांस्य पदक जीते थे।

सारा-विशाल ने जीता मिश्रित युगल खिताब

मुंबई। आस्ट्रेलिया की शीर्ष रैंकिंग की महिला खिलाड़ी सारा बर ने विशाल मसंद के साथ मिलकर यहां मॉनसून पिकलबॉल चैंपियनशिप 2.0 का मिश्रित युगल ओपन खिताब जीता। फाइनल कड़ी टक्कर वाला मुकाबला रहा जिसमें ईशा लखानी और जेसन टेलर ने दबदबा बनाया लेकिन अनुभवी खिलाड़ी सारा शुक्रवार रात को नतीजे में निर्णायक रहीं जिन्होंने 2-0 से जीत दर्ज की। चैंपियनशिप के चौथे दिन छह वर्गों में विजेता रहे।

नीरज चोपड़ा फेंकेंगे 93 मीटर दूर तक भाला

नई दिल्ली। दिग्गज पैरा एथलीट देवेंद्र झाझड़िया को लगता है कि स्टार भाला फेंक एथलीट नीरज चोपड़ा के लिए 90 मीटर दूर भाला फेंकना बस समय की बात है और उन्होंने भविष्यवाणी की कि वह एक या दो साल में 93 मीटर दूर भाला फेंक सकते हैं। चोपड़ा ने इस महीने की शुरुआत में पेरिस ओलंपिक में 89.45 मीटर भाला फेंककर रजत पदक जीता था। उन्होंने गुरुवार को फिर से लुसाने डायमंड लीग में 89.49 मीटर के थ्रो के साथ दूसरा स्थान हासिल किया। झाझड़िया खुद पैरा भाला फेंक के दिग्गज हैं और जिन्होंने एफ46 श्रेणी में दो पैरालंपिक स्वर्ण पदक जीते हैं।

भारत की अंडर-17 टीम और इंडोनेशिया में जंग

नई दिल्ली। भारतीय पुरुष अंडर-17 फुटबॉल टीम रविवार और अगले मंगलवार को बाली में इंडोनेशिया के खिलाफ दो मैत्री मैच खेलने के लिए तैयारी में जुटी है। शुक्रवार की रात को टीम ने स्थानीय टीम बाली यूनाइटेड एफसी अंडर-20 के खिलाफ अभ्यास मैच खेला जो 2-2 से ड्रा रहा। भारत के लिए मोहम्मद समी और मोहम्मद अरबाश ने गोल किए। कोच इश्फाक अहमद की भारतीय अंडर-17 टीम अगले महीने भूटान में होने वाली सैफ अंडर-17 चैम्पियनशिप और उसके बाद अक्टूबर में थाईलैंड में होने वाले एएफसी अंडर-17 एशियाई कप क्वालीफायर की तैयारी में जुटी है।

टेस्ट

रहीम ने 341 गेंद में जड़ा एक छक्का और 22 चौका

मुशफिकुर दोहरे शतक से चूके बांग्लादेश ने पाक पर बनाई बढ़त

एजेंसी ▸▸ रावलपिंडी

मुशफिकुर रहीम ने 191 रन की शानदार पारी खेलने के साथ ही मेहदी हसन मिराज (77) के साथ सातवें विकेट के लिए 196 रन की रिकॉर्ड साझेदारी की। इससे बांग्लादेश ने शनिवार को पहले टेस्ट में पाकिस्तान के तेज आक्रमण को कुंद करते हुए चौथे दिन अपनी पहली पारी में 565 रन बनाए। मुशफिकुर ने अपनी साढ़े आठ घंटे से अधिक की मैराथन पारी के दौरान 341 गेंद में एक छक्का और 22 चौके जड़कर बांग्लादेश को पहली पारी में 117 रन की बड़ी बढ़त दिलाई।

यह बांग्लादेश का घर से बाहर तीसरा सबसे बड़ा स्कोर था। उसके बल्लेबाजों ने घास वाली पिच पर चार तेज गेंदबाजों के साथ उतरने की पाकिस्तान की योजना को विफल कर दिया। पिच बल्लेबाजी के लिए आसान दिख रही है। अपनी पहली पारी छह विकेट पर 448 रन पर घोषित करने वाले पाकिस्तान ने दूसरी पारी में सलामी बल्लेबाज सैम अयूब का विकेट जल्दी खो दिया और स्टंप्स के समय उसका स्कोर एक विकेट पर 24 रन था। टीम अब भी बांग्लादेश से 94 रन पीछे है। अब्दुल्ला शफीक 12 रन जबकि कप्तान शान मसूद नौ रन बनाकर क्रीज पर मौजूद है।

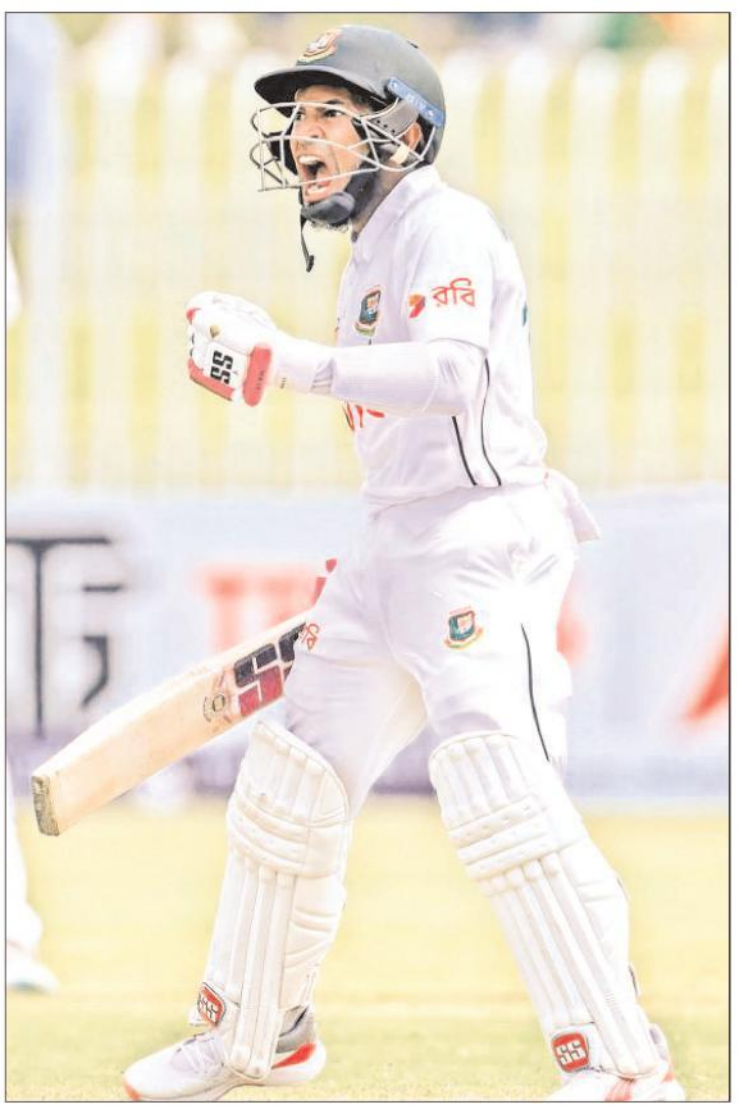

रहीम का 11वां टेस्ट शतक

मुशफिकुर ने टेस्ट करियर की अपनी 11वीं शतकीय पारी के दौरान मैदान की हर दिशा में शॉट लगाए। उनकी मैराथन पारी दिन के अंतिम सत्र में समाप्त हुई जब उन्होंने खुर्रम शहजाद की गेंद पर स्क्वायर कट के प्रयास में विकेट के पीछे कैच दे दिया। उन्होंने आठवें क्रम के बल्लेबाज मेहदी के साथ 196 रन की साझेदारी के दौरान पाकिस्तान के चारों तेज गेंदबाजों को गर्मी और नमी वाली परिस्थितियों में कड़ी मेहनत करने पर मजबूर कर दिया। यह पाकिस्तान के खिलाफ किसी टेस्ट में सातवें विकेट के लिए सबसे बड़ी साझेदारी थी। इससे पहले यह रिकॉर्ड रिचर्ड हेडली और वॉरेन लीज के नाम था। न्यूजीलैंड की इस जोड़ी ने 48 साल पहले (1976 में) कराची में पाकिस्तान के खिलाफ 186 रन की साझेदारी की थी।

चौथे टेस्ट में मेंडिस का तीसरा शतक

मैनचेस्टर। अपना चौथा टेस्ट मैच खेल रहे कामिंदु मेंडिस की तीसरी शतकीय पारी से श्रीलंका ने तीन मैचों की श्रृंखला की शुरुआती टेस्ट के चौथे दिन लंच तक इंग्लैंड पर 169 रनों की बढ़त बनाकर अपनी स्थिति मजबूत कर ली। लंच के विश्राम के समय श्रीलंका ने छह विकेट पर 291 रन बना लिए थे। मेंडिस (नाबाद 101) के अनुभवी दिनेश चांदीमल (नाबाद 62) क्रीज पर मौजूद है। दोनों ने सातवें विकेट के लिए अब तक 87 रन की साझेदारी कर ली है। मेंडिस ने मार्च में बांग्लादेश के खिलाफ टेस्ट श्रृंखला में दो शतक और नाबाद 92 रन बनाए थे। इंग्लैंड के खिलाफ उन्होंने अपनी लय जारी रखी। श्रीलंका की टीम पहली पारी में 122 रन से पीछे थी।

बैडमिंटन

तन्वी अंडर-15 एकल फाइनल में, जी दत्तू ने जीता कांस्य पदक

एजेंसी ▸▸ नई दिल्ली

भारत की शीर्ष जूनियर शटलर तन्वी पत्री ने शनिवार को चीन के चेंग्दू में 'बैडमिंटन एशिया अंडर-17 और अंडर-15 जूनियर चैंपियनशिप' में अंडर-15 लड़कियों के एकल वर्ग में थाईलैंड की कुंगकेव काकानिक पर शानदार जीत के साथ फाइनल में अपनी जगह पक्की की।

शीर्ष वरीयता प्राप्त तन्वी को शुरुआती गेम में कड़ी टक्कर मिली लेकिन उन्होंने दूसरे गेम में अपनी प्रतिद्वंद्वी को कोई मौका नहीं दिया और 31 मिनट में 21-19, 21-10 से जीत दर्ज की। फाइनल में तन्वी का मुकाबला दूसरी वरीयता प्राप्त वियतनाम की गुयेन थी थू हुइगेन से होगा, जिन्होंने दूसरे सेमीफाइनल में चीन की लियू यू टोंग को 21-18, 17-21, 21-19 से हराया।

इससे पहले सामिया इमाद फारुकी ने 2017 में अंडर-15 लड़कियों के एकल वर्ग का खिताब अपने नाम करने में सफल रही थी और तस्नीम मीर 2019 में उसी वर्ग में विजयी रही थीं। लड़कों के अंडर-17 वर्ग में हालांकि जी दत्तू को सेमीफाइनल में इंडोनेशिया का रादित्या बायु वर्धन से हार का सामना करना पड़ा। वह कांस्य पदक के साथ देश लौटेंगे।

नोस्कोवा और सुन में होगी खिताबी भिड़ंत

मॉन्टेरी। चेक गणराज्य की छठी वरीय लिंडा नोस्कोवा ने शुक्रवार रात अमेरिका की दूसरी वरीयता प्राप्त एम्मा नवारो को 7-6 (7), 7-5 से हराकर मॉन्टेरी ओपन टेनिस टूर्नामेंट के फाइनल में प्रवेश किया। अब 19 वर्षीय नोस्कोवा का सामना न्यूजीलैंड की लुलु सन से होगा। दोनों खिलाड़ी अपना पहला डब्ल्यूटीए टूर खिताब हासिल करने की कोशिश करेंगी। सुन ने पहले सेमीफाइनल में रूस की इकैटरीना एलेक्सांद्रोवा को 7-5, 3-6, 7-6 (6) से शिकस्त देकर फाइनल में जगह बनायी। पिछले हफ्ते सुन ने सिनसिनाटी ओपन में नोस्कोवा को राउंड 64 में 6-4, 7-6 (4) से पराजित किया था।

सिर्फ 30 मिनट साथ में ट्रेनिंग से ओलंपिक में जीते कांस्य पदक

एजेंसी ▸▸ बेंगलुरु

मनु भाकर के साथ मिलकर भारत को मिश्रित निशानेबाजी स्पर्धा में पहला ओलंपिक पदक दिलाने वाले सरबजोत सिंह ने शनिवार को कहा कि उन्हें अपनी स्पर्धा से पहले एक साथ ट्रेनिंग करने का बमुश्किल ही मौका मिला था। मनु और सरबजोत ने पेरिस ओलंपिक की 10 मीटर एयर पिस्टल मिश्रित टीम निशानेबाजी स्पर्धा में कांस्य पदक जीतकर इतिहास रच दिया।

सरबजोत ने कहा, 'मेरी ट्रेनिंग नौ बजे होनी थी और उसको 12 बजे। दोनों की ट्रेनिंग अलग अलग। मिश्रित ट्रेनिंग सत्र 30 मिनट तक रहा जिसके पहले वह

अलग से ट्रेनिंग करती थीं और मैं अलग से। हमारी बातचीत आमतौर पर संक्षिप्त रही जिसमें बातें 'अपना शत प्रतिशत देना है' बस यहीं तक सीमित रहती। कभी कभी मैं उसका मजाक उड़ाता था तो कभी कभी वह मेरा मजाक उड़ाती थी।'

मप्र कयाकिंग अकादमी की खिलाड़ी दीपा राजपूत पहुंचीं फाइनल में

आज खेला जाएगा फाइनल मुकाबला

हरिभूमि न्यूज ▸▸ भोपाल

सीनियर वर्ल्ड केनो चैम्पियनशिप 2024 का आयोजन उज्बेकिस्तान में किया जा रहा है। 23 से 25 अगस्त तक आयोजित अंतर्राष्ट्रीय स्तर की इस केनो चैम्पियनशिप में खेल अकादमी के 7 खिलाड़ी और 3 प्रशिक्षक सहित कुल 10 सदस्यीय दल उज्बेकिस्तान गया हुआ है।

खेल अकादमी की कयाकिंग केनोइंग खिलाड़ी दीपा राजपूत ने विश्व चैम्पियनशिप के फाइनल मुकाबले में अपनी जगह बना ली है।

दीपा राजपूत सी-1 500 मी. में फायनल खेलेंगी। फाइनल मुकाबला रविवार 25 अगस्त को है। दीपा की इस उपलब्धि पर खेल मंत्री विश्वास सारंग ने उनका उत्साहवर्धन करते हुये शुभकामनाएं प्रेषित की हैं। इसके साथ ही खेल संचालक मप्र डॉ. रवि गुप्ता ने भी दीपा को अपनी शुभकामनाएं दी हैं।

सीसीएन इवेंट्रिंग प्रतियोगिता 21 से 24 अगस्त तक जयपुर में की गई आयोजित

मप्र खेल अकादमी के खिलाड़ियों ने जीते 4 पदक

हरिभूमि न्यूज ▸▸ भोपाल

सीसीएन इवेंटिंग प्रतियोगिता 2024 का आयोजन जयपुर (राजस्थान) में 21 से 24 अगस्त तक किया गया। इस प्रतियोगिता में मप्र राज्य घुड़सवारी अकादमी के खिलाड़ियों ने घुड़सवारी खेल का बेहतर प्रदर्शन कर 2 स्वर्ण, 1 रजत और 1 कांस्य सहित कुल 4 पदक अर्जित किए।

राष्ट्रीय इवेंटिंग प्रतियोगिता के फाइनल मुकाबले में खेल अकादमी के खिलाड़ी फराज खान ने प्रतियोगिता की दोनों कैटैगरी नोवाइस एवं प्री नोवाइस इवेंटिंग में अपने घोड़े आकर्न प्ले पर क्लीयर राउंड इन टाइम फिनिश किया। वहीं, खेल अकादमी के खिलाड़ी हमजा ने मारूति घोड़े और लक्खा सिंह ने आइजान घोड़े पर निर्धारित समय पर अपना राउंड पूर्ण किया। खेल अकादमी के

खिलाड़ी फराज खान नोवाइस इवेंटिंग के व्यक्तिगत स्पर्धा में शानदार प्रदर्शन कर प्रथम स्थान पर, हमजा अकेल प्री इवेंटिंग के व्यक्तिगत स्पर्धा द्वितीय स्थान एवं प्री नॉवाईस इवेंटिंग व्यक्तिगत स्पर्धा में पीबीजी के दफेदार राणा तृतीय स्थान पर रहे। प्रतियोगिता में अकादमी के खिलाड़ी फराज खान ने व्यक्तिगत स्पर्धा में 1 स्वर्ण और फराज खन और लक्खा सिंह की जोड़ी ने टीम इवेन्ट में 1 कांस्य पदक अर्जित किया। हमजा ने भी व्यक्तिगत स्वर्धा ने बेहतर खेल प्रदर्शन कर 1 स्वर्ण और 1 रजत के साथ 2 पदक अर्जित कियर। उल्लेखनीय है अकादमी के खिलाड़ियों ने आर्मी के खिलाड़ियों के बीच यह शानदार प्रदर्शन किया है। सभी खेल अकादमी के पदक विजेता खिलाड़ी खेल अकादमी के मुख्य प्रशिक्षक केप्टन भागीरथ के मार्गदर्शन में प्रशिक्षणरत हैं।

खेल मंत्री सारंग ने दी विजेता खिलाड़ियों को बधाई

मंत्री विश्वास कैलाश सारंग ने जयपुर में आयोजित घुड़सवारी प्रतियोगिता में अपने खेल का श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले पदक विजेता खिलाड़ियों के खेल की प्रशंसा कर अपनी शुभकामनाएं दी हैं।

घोष की बढ़ी मुश्किलें : हाईकोर्ट के आदेश पर पूर्व प्रिंसिपल पर सीबीआई ने दर्ज की एफआईआर

पूर्व प्रिंसिपल घोष समेत 7 का पॉलीग्राफ टेस्ट, खुलेंगी 'परतें'

इस टेस्ट में सवालों के जवाब के दौरान ब्लड प्रेशर, सांस की गति, त्वचा की संवेदनशीलता आदि का भी अध्ययन किया जाता है

सीबीआई जांच में कोलकाता रेप व मर्डर केस में कोई नया तथ्य नहीं निकाला है। शक की सुई घोष व आरोपी रॉय पर ही घूमी है। अब नए टेस्ट से नए राज खुल सकते हैं

पॉलीग्राफ टेस्ट के लिए विशेषज्ञों की एक टीम नई दिल्ली स्थित सेंट्रल फोरेंसिक साइंस लेबोरेट्री से कोलकाता पहुंची थी

शनिवार को ही कलकत्ता हाई कोर्ट के आदेश का पालन करते हुए केस की जांच के लिए गठित एसआईटी ने सीबीआई को केस से जुड़े सभी डॉक्यूमेंट्स सौंपे

एजेंसी ▶▶ कोलकाता

कोलकाता के आरजी कर मेडिकल कॉलेज में महिला डॉक्टर की दुष्कर्म के बाद हत्या के मामले पूर्व प्रिंसिपल संदीप घोष समेत कुल सात लोगों का पॉलीग्राफ टेस्ट शनिवार को कराया गया। संदीप के अलावा दुष्कर्म के आरोपी संजय रॉय और मेडिकल कॉलेज के चार अन्य डॉक्टर्स का भी पॉलीग्राफ टेस्ट कराया गया।

साथ ही अस्पताल के एक सिविल वॉलंटियर का भी पॉलीग्राफ टेस्ट हुआ। उधर, हाईकोर्ट के आदेश पर पूर्व प्रिंसिपल संदीप घोष पर सीबीआई ने एफआईआर दर्ज की है। इस एफआईआर की एक

संदीप घोष संजय रॉय

कॉपी पहले ही अलीपुर सीजेएम कोर्ट में जमा कर दी गई है। गौर हो कि पॉलीग्राफ टेस्ट के लिए विशेषज्ञों की एक टीम नई दिल्ली स्थित सेंट्रल फोरेंसिक साइंस लेबोरेट्री से कोलकाता पहुंची थी। शनिवार को ही कलकत्ता हाई कोर्ट के आदेश का पालन करते हुए केस की जांच के लिए गठित एसआईटी ने सीबीआई को केस से जुड़े सभी डॉक्यूमेंट्स सौंपे।साथ ही सुप्रीम कोर्ट ने भी अपनी सुनवाई के दौरान संदीप घोष की भूमिका को लेकर गंभीर सवाल उठाए थे।

यही वजह है कि संदीप घोष सीबीआई की जांच के रडार पर हैं। सीबीआई ने अदालत में अर्जी देकर संदीप घोष, आरोपी संजय रॉय और चार अन्य डॉक्टर्स और एक सिविल वॉलंटियर का पॉलीग्राफ टेस्ट कराने की मंजूरी मांगी थी, जिसे अदालत ने मंजूर कर लिया था।

क्या होता है पॉलीग्राफ टेस्ट?

पॉलीग्राफ टेस्ट को लाई डिटेक्टर टेस्ट भी कहा जाता है। इस टेस्ट में कई साइकोलॉजिकल जांच की जाती हैं। साथ ही सवालों के जवाब के दौरान ब्लड प्रेशर, सांस की गति, त्वचा की संवेदनशीलता आदि का भी अध्ययन किया जाता है।

रॉय का जेल में ही कराया गया पॉलीग्राफ टेस्ट

अदालत की मंजूरी के बाद शनिवार को सभी का पॉलीग्राफ टेस्ट कराया गया। गौरतलब है कि संदीप घोष के अलावा जिन चार अन्य डॉक्टर्स का पॉलीग्राफ टेस्ट कराया जा रहा है, उन्होंने ही मृतका के साथ घटना वाली रात डिनर किया था। आरोपी संजय रॉय का जेल में ही पॉलीग्राफ टेस्ट कराया गया। बाकी अन्य का पॉलीग्राफ टेस्ट सीबीआई कार्यालय में कराया गया। पॉलीग्राफ टेस्ट के लिए विशेषज्ञों की एक टीम नई दिल्ली स्थित सेंट्रल फोरेंसिक साइंस लेबोरेट्री से कोलकाता पहुंची

खबर संक्षेप

पीएम मोदी आज महाराष्ट्र राजस्थान का करेंगे दौरा

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी रविवार को महाराष्ट्र और राजस्थान का दौरा करेंगे। महाराष्ट्र में वे11 लाख नई लखपति दीदियों को प्रमाणपत्र वितरित करेंगे। राजस्थान में वे उच्च न्यायालय की प्लेटिनम जुबली के समापन समारोह को संबोधित करेंगे। प्रधानमंत्री 25 अगस्त को पूर्वाह्न करीब 11:15 बजे जलगांव में लखपति दीदी सम्मेलन में भाग लेंगे।

नागार्जुन के कन्वेंशन हॉल पर चला बुलडोजर

हैदराबाद। तेलंगाना में मशहूर तेलुगू अभिनेता नागार्जुन पर हैदराबाद आपदा प्रबंधन एवं संपत्ति संरक्षण एजेंसी ने बड़ी कार्रवाई की है। हाइड्रा ने नागार्जुन के कन्वेंशन हॉल पर बुलडोजर चला दिया है। कन्वेंशन हॉल को जमींदोज कर दिया गया। यह हॉल रंगारेड्डी जिले के शिल्परामम के पास स्थित था। यह भूमि एफटीएल जोन के अंतर्गत आती है।

कोबरा ने डंसा तो उसे डिब्बे में बंद किया

लखीमपुर खीरी। यूपी के लखीमपुर खीरी जिले में एक शख्स को कोबरा ने डंसा तो उसने गजब का काम कर डाला। वह सांप को पकड़कर डिब्बे में बंद कर दिया। डिब्बे में बंद सांप को लेकर ये शख्स अस्पताल पहुंच गया जहां हर कोई उसे इस हाल में देखकर हैरान रह गया। डिब्बे के अंदर सांप फन निकाले बैठा था। उसे देखकर अस्पताल में हड़कंप मच गया।

जम्मू-कश्मीर में कांग्रेस के 6 उम्मीदवार तय

नई दिल्ली। जम्मू-कश्मीर में 10 साल बाद विधानसभा चुनाव होने जा रहे हैं। ऐसे में कांग्रेस और नेशनल कॉन्फ्रेंस मिलकर चुनाव लड़ने जा रही हैं। नेशनल कॉन्फ्रेंस 52 और कांग्रेस 38 सीटों पर चुनाव लड़ सकती है। हालांकि, नेशनल कॉन्फ्रेंस और कांग्रेस के बीच सीटों का बंटवारा नहीं हुआ है। कांग्रेस ने छह उम्मीदवारों के नाम फाइनल कर लिए हैं।

बिभव कुमार की 13 तक बढ़ी न्यायिक हिरासत

नई दिल्ली। दिल्ली केसीएम अरविंद केजरीवाल के करीबी सहयोगी बिभव कुमार की मुसीबतें कम होने का नाम नहीं ले रही हैं। बिभव को अभी तिहाड़ जेल में ही रहना होगा। तीस हजारी कोर्ट ने आप सांसद स्वाति मालीवाल मारपीट मामले में शनिवार को बिभव कुमार की न्यायिक हिरासत 13 सितंबर तक बढ़ा दी। उस पर कई धाराओं में मामला दर्ज किया गया है।

असम और महाराष्ट्र में गैंग रेप व हत्या के मामले पर फूटा गुस्सा

नगांव गैंगरेप का मुख्य आरोपी क्राइम सीन पर ले जाते समय तालाब में कूदा, हुई मौत

एजेंसी ▶▶ नगांव

असम के नगांव में नाबालिग लड़की से रेप के मुख्य आरोपी की मौत हो गई है। पुलिस आरोपी तफ्फजुल इस्लाम को शनिवार सुबह 3.30 बजे क्राइम सीन पर ले जा रही थी। वह हिरासत से भागते हुए नगांव के ही धींग में तालाब में कूद गया।

पुलिस ने उसकी तलाशी के लिए तालाब में गोताखोर भेजे, करीब दो घंटे बाद उसका शव बरामद किया गया। तफ्फजुल पर 14 साल की लड़की से रेप का आरोप था। आरोपी की मौत पर नागांव एसपी स्वप्ननील डेका ने कहा कि उससे पूछताछ करने और अपराध स्थल पर ले जाने के बाद उसने हमारी हिरासत से भागने का प्रयास किया।

भागने की कोशिश करते समय, वह एक तालाब में गिर गया। हमने इलाके की घेराबंदी की और तुरंत एसडीआरएफ को बुलाया। इस दौरान हमारा एक पुलिस कांस्टेबल घायल हो गया। हम दो आरोपियों की तलाश कर रहे हैं और जल्द ही उन्हें गिरफ्तार कर लेंगे।

क्राइम सीन रीक्रिएट कर रही थी पुलिस

तफ्फजुल हिरासत से भागते हुए नगांव के ही धींग में तालाब में डूब गया

ग्रामीणों का बड़ा फैसला- रेपिस्ट को कब्रिस्तान में 2 गज जमीन तक नहीं देंगे

मुख्य आरोपी की मौत के बाद उसके ही गांववालों ने उसको बेदखल कर दिया है। ग्रामीणों ने फैसला किया है कि रेप जैसा घिनौना अपराध करने वाले के जनाजे में कोई भी शामिल नहीं होगा। उसको गांव के कब्रिस्तान में दो गज जमीन भी नहीं मिलेगी। आरोपी के इस कृत्य से पूरा गांव शर्मसार है।

जाने माने वकील निकम ने कहा

अब लोगों में कानून का डर नहीं रहा

आतंकी अजमल कसाब को फांसी दिलाने वाले जाने माने वकील उज्जवल निकम ने कहा कि यौन उत्पीड़न की इस प्रकार की बढ़ती घटनाओं के पीछे कारण तो कई हैं। लोगों में कानून का डर खत्म सा हो गया है। संस्कार का ह्रास होना भी ऐसी घटनाओं के पीछे एक बड़ा कारण है। आज अच्छा क्या है, बुरा क्या है, इसे समझाने वाली लक्ष्मण रेखा मिट सी गई लगती है। कानूनी लड़ाई में सबूत का सवाल सबसे अहम होता है। मैं ये नहीं कहूंगा कि किसी पर आरोप लगा, तो उसे फांसी या आजीवन कारावास हो ही जाना चाहिए। लेकिन आरोप लगा है, तो उसकी जड़ तक जाना चाहिए।

बदलापुर कांड में एमवीए का प्रदर्शन

एमवीए ने खोला मोर्चा, धरने पर बैठे पवार

महाराष्ट्र में राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (शरदचंद्र पवार), कांग्रेस और शिवसेना (यूबीटी) ने बदलापुर के स्कूल में बच्चियों के साथ हुए यौन उत्पीड़न के मामले में सरकार के खिलाफ मोर्चा खोल दिया है। एमवीए ने महाराष्ट्र बंद बुलाया था। हालांकि इस पर रोक थी। इसके बाद एमवीएने पुणे में धरना दिया। शरद पवार पार्टी के नेताओं और कार्यकर्ताओं के साथ काली पट्टी बांधकर धरने पर बैठे। शरद ने कहा कि महाराष्ट्र में ऐसा कोई दिन नहीं है, जब महिलाओं के खिलाफ अत्याचार की खबर न आती हो। देश में महाराष्ट्र की छवि खराब हुई है। राज्य सरकार पर आरोप लगाया कि वह यह भूल गई है कि महिलाओं की सुरक्षा उसकी जिम्मेदारी है। सरकार को इस घटना को गंभीरता से लेना चाहिए। सरकार असंवेदनशील है। मामले में सुप्रिया सुले ने कहा कि राज्य में महिलाओं के खिलाफ अत्याचार की घटनाएं बढ़ रही हैं। लोगों में पुलिस का कोई डर नहीं है। मैं सरकार की निंदा करती हूं।

कांग्रेस ने कहा- कानून व्यवस्था ठीक नहीं

विपक्ष के नेता कांग्रेस विधायक विजय वडेट्टीवार ने कहा कि राज्य में कानून-व्यवस्था की स्थिति नहीं है। हम सरकार के खिलाफ प्रदर्शन कर रहे हैं और महिलाओं के खिलाफ हो रही घटनाओं की ओर सरकार का ध्यान आकर्षित करने की कोशिश कर रहे हैं। राज्य में अपराध पर कोई नियंत्रण नहीं है। अपराधियों में कोई डर नहीं है।

मुंबई में उद्धव के नेतृत्व में प्रदर्शन

उद्धव ठाकरे ने मुंबई में पार्टी कार्यकर्ताओं के साथ प्रदर्शन किया। बदलापुर घटना पर उद्धव ठाकरे ने कहा कि महाराष्ट्र सरकार दोषियों के खिलाफ कार्रवाई करने के बजाय उनके साथ खड़ी है। प्रियंका चतुर्वेदी ने कहा कि महिलाओं, बेटियों के खिलाफ जो अत्याचार हो रहे हैं, 10 दिन में 12 घटनाएं हो गई हैं।

ईडी के छापे में उड़ गए होश

प्रिंटिंग हाउस में नोट गिनते थके अफसर, 34 करोड़ जब्त

एजेंसी ▶▶ नई दिल्ली

मनी लॉन्ड्रिंग और फाइनेंशियल फ्रॉड से जुड़े मामले में ईडी की टीम ने छापेमारी कर करोड़ों रुपए जब्त किए हैं। असम सरकार के कंस्ट्रक्शन वर्कर्स के वेलफेयर के लिए तय फंड का गबन करने के मामले में ईडी ने कार्रवाई करते हुए 34 करोड़ रुपए से ज्यादा की राशि को जब्त किया है।

बैंक और फिक्स्ड डिपोजिट को सीज किया गया है। यह मामला असम भवन एवं अन्य निर्माण श्रमिक कल्याण बोर्ड द्वारा 2013-16 के दौरान 118 करोड़ के ठेकों को धोखाधड़ी से पूर्वश्री प्रिंटिंग हाउस नामक कंपनी को दिए जाने से संबंधित है। इसका स्वामित्व प्रियांशु बोइरागी के पास है। ईडी ने कहा कि यह कंस्ट्रक्शन वर्कर्स के कल्याण के लिए उपकर के रूप में इकट्ठा फंड के दुरुपयोग का मामला है। छापेमारी में कई आपत्तिजनक दस्तावेज और अन्य सामग्रियां भी जब्त की गई हैं।

अपराध से प्राप्त आय पर शिकंजा

ईडी के अनुसार अपराध से प्राप्त आय के तौर पर बैंक और फिक्स्ड डिपोजिट के रूप में 34.03 करोड़ रुपए जब्त किए गए हैं। मनी लॉन्ड्रिंग का यह मामला मुख्यमंत्री के स्पेशल विजिलेंस सेल द्वारा दर्ज की गई प्राथमिकी और आईएएस एवं पूर्व लेबर कमिश्नर सह एबीओसीडब्ल्यूडब्ल्यूबी सदस्य सचिव चौहान डोले, बोइरागी, बोर्ड के पूर्व अध्यक्ष गौतम बरुआ और पूर्व प्रशासनिक अधिकारी नागेन्द्र नाथ चौधरी के खिलाफ पुलिस द्वारा दाखिल चार्जशीट के बाद सामने आया है।

जाली ठेका दिया गया

ईडी ने आरोप लगाया कि नागेंद्र नाथ चौधरी ने धोखाधड़ी और जाली ठेका प्रक्रियाओं के माध्यम से एबीओसीडब्ल्यूडब्ल्यूबी से असंगत रूप से ज्यादा कीकत के प्रिंटिंग कॉन्ट्रैक्ट हासिल किए। ईडी ने दावा किया कि बोइरागी ने सरकारी धन से अर्जित 118 करोड़ रुपए (अपराध से अर्जित आय) को अपने नाम पर फिक्स करवा दिया और बाकी की राशि को अपने विभिन्न बैंक खातों में ट्रांसफर कर दिया। ईडी ने प्रारंभिक जांच करने के बाद छापा मारा और बैंक अकाउंट को फ्रीज करते हुए राशि को जब्त कर ली।

नीट यूजी काउंसलिंग प्रोविजनल रिजल्ट

सीट आवंटन के परिणाम में संशोधन, 43 का नाम हटा

एजेंसी ▶▶ नई दिल्ली

मेडिकल काउंसलिंग कमेटी ने नीट यूजी काउंसलिंग के पहले दौर के लिए सीट आवंटन परिणाम को संशोधित किया है, क्योंकि 43 उम्मीदवारों को प्रतिबंधित कर दिया है। संशोधित नीट यूजी काउंसलिंग राउंड 1 का परिणाम आधिकारिक वेबसाइट पर उपलब्ध है।

बताया गया है कि प्रवेश के पहले दौर के माध्यम से 26,109 उम्मीदवारों ने एमबीबीएस, बीडीएस सीटें हासिल की हैं। प्रोविजनल रिजल्ट घोषित होने के

बाद 43 नीट यूजी उम्मीदवारों को बाहर कर दिया था। संशोधित प्रोविजनल रिजल्ट-2 अब उपरोक्त 43 उम्मीदवारों को बाहर करने के बाद नए सिरे से घोषित किया गया है। किसी भी विसंगति के लिए प्रतिभागी रविवार सुबह 11 बजे से पहले ईमेल के माध्यम से समिति को सूचित कर सकते हैं।

बड़ा रेल हादसा टला

फर्रुखाबाद एक्स. चालक की सूझबूझ से डिरेल होने से बची

एजेंसी ▶▶ फर्रुखाबाद

उत्तर प्रदेश के फर्रुखाबाद में एक बड़ा रेल हादसा होने से टल गया। ट्रेन चालक की सूझबूझ से बड़ा हादसा होने से बच गया।

आशंका है कि अराजक तत्वों ने कासगंज फर्रुखाबाद एक्सप्रेस ट्रेन को बोटा रखकर डिरेल कराने का प्रयास किया था। मामला फर्रुखाबाद जनपद की भटासा रेलवे स्टेशन के पास का है। बीती रात कासगंज से फर्रुखाबाद जा रही एक्सप्रेस ट्रेन संख्या 05389 कायमगंज रेलवे स्टेशन से 11:18 पर रवाना हुई थी।

अराजक तत्वों ने रेलवे ट्रैक पर लकड़ी का भारी टुकड़ा रख दिया था। इंजन के अगले हिस्से में लकड़ी का टुकड़ा फंसने से करीब 25 मिनट ट्रेन घटना स्थल पर ही खड़ी रही। रेलवे कर्मियों ने रेलवे ट्रैक पर रखे लकड़ी के टुकड़े को हटाया। रात्रि 12:04 पर ट्रेन शमशाबाद रेलवे स्टेशन पर पहुंची।

महिला श्रम बल भागीदारी दर को दोगुना करना होगा

भारत को विकसित बनाने कार्यबल में 40 करोड़ महिलाओं को जोड़ना होगा

गैर-लाभकारी संगठन द नज इंस्टीट्यूट की रिपोर्ट

एजेंसी ▶▶ नई दिल्ली

गैर-लाभकारी संगठन द नज इंस्टीट्यूट की नई रिपोर्ट के अनुसार भारत को अपनी अर्थव्यवस्था में 14 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर का योगदान देने के लिए कार्यबल में अतिरिक्त 40 करोड़ महिलाओं को जोड़ने की जरूरत है।

इसके लिए वित्त वर्ष 2047 तक मौजूदा महिला श्रम बल भागीदारी दर को लगभग दोगुना करके 37 प्रतिशत से 70 प्रतिशत करना पड़ेगा। गैर-लाभकारी संगठन द नज इंस्टीट्यूट नें. इस तथ्य के बारे में बताते हुए नई रिपोर्ट 'लेबर फोर्स पार्टिसिपेशन डिस्टिलेशन रिपोर्ट' प्रकाशित की है। यह रिपोर्ट रिपोर्ट पिछले कुछ वर्षों के आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण पर आधारित है।

भारत का 2047 तक 30 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने का लक्ष्य

भारत का लक्ष्य 2047 तक 30 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर की अर्थव्यवस्था बनना है, ऐसे में इस उपलब्धि को हासिल करने के लिए इसे अपनी महिला श्रम बल भागीदारी में पर्याप्त वृद्धि करने की जरूरत है। 2047 तक भारत को महिला श्रम बल भागीदारी दर को दोगुना कर 70 प्रतिशत तक पहुंचाना होगा।

लोग लंबे वीक एंड पर चले जाएंगे बाहर, मतदान घटेगा

चुनाव आयोग हरियाणा चुनाव की तारीख में करे फेरबदल

एजेंसी ▶▶ चंडीगढ़

हरियाणा विधानसभा चुनाव की तारीख में बदलाव करने के लिए भाजपा ने केंद्रीय चुनाव आयोग को पत्र लिखा। हरियाणा भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मोहन लाल बडोली ने आयोग को यह पत्र लिखा है। बडोली ने लिखा कि हरियाणा विधानसभा चुनावों के लिए 1 अक्टूबर को वोट डाले जाएंगे।

28 सितंबर (शनिवार) और 29 सितंबर (रविवार) है, इसलिए प्रदेश के सभी सरकारी एवं निजी संस्थानों में साप्ताहिक अवकाश रहेगा। 1 अक्टूबर को वोटिंग होने के कारण सभी सरकारी एवं निजी संस्थान बंद रहेंगे और 2 अक्टूबर को गांधी जयंती पर राष्ट्रीय अवकाश रहेगा। ऐसे में लोग 30 सितंबर को एक दिन का अवकाश लेकर 5 दिन के अवकाश पर बाहर जा सकते हैं और मतदान प्रतिशत में भारी कमी आएगी।

30 सितंबर से 5 दिन की छुट्टी

भाजपा ने लिखा चुनाव आयोग को पत्र

मोहन लाल बडोली

एक अक्टूबर को बीकानेर में मेला

बडोली ने कहा कि 2 अक्टूबर को आसोज की अमावस्या होने के कारण बीकानेर की नोखा तहसील के मुकाम गांव में हर वर्ष की तरह लगने वाले मेले में भाग लेने के लिए हरियाणा के बिश्नोई समाज के अधिकांश लोग 1 अक्टूबर को ही बीकानेर के लिए रवाना होंगे, जिससे मतदान में कमी आएगी।

चुनाव आयोग जल्द फैसला ले

बडोली ने कहा कि चुनाव आयोग का प्रयास रहा है कि लोकतंत्र को मजबूती देने के लिए अधिक से अधिक मतदाता मतदान में भाग लें। इसलिए उचित होगा कि हरियाणा विधानसभा चुनाव के मतदान के लिए निर्धारित तिथि को आगे बढ़ाया जाए। उन्होंने चुनाव आयोग से अपील की कि इस बात का ध्यान रखा जाए कि मतदान की तारीख से एक दिन पहले और अगले दिन कोई अवकाश न हो। उन्होंने लिखा कि हम आशा करते हैं कि आप इस सुझाव पर जल्द सकारात्मक फैसला लेंगे।

कांग्रेस बोली- भाजपा में घबराहट बढ़ी

बडोली के इस लेटर को लेकर कांग्रेस ने निशाना साधा है। दीपेंदर सिंह हुड्डा ने कहा कि हरियाणा भाजपा ने चुनाव आयोग को चुनाव टालने के लिए पत्र लिखा है, जो यह दर्शाता है कि भाजपा चुनाव से किस कदर घबराई हुई है। अपनी हार सामने देख सत्ताधारी पार्टी द्वारा बचकाने तर्क दिए जा रहे हैं।

ई कॉमर्स वेबसाइट को हटाने के निर्देश

ए 1 और ए 2 लेबल से बाजार में नहीं बिकेगा दूध और दही

एजेंसी ▶▶ नई दिल्ली

खाद्य सुरक्षा नियामक एफएसएसएआई ने गुरुवार को ई-कॉमर्स सहित खाद्य कंपनियों को पैकेट से 'ए-वन' और 'ए-टू' प्रकार के दूध और दूध उत्पादों के दावों को हटाने का निर्देश दिया।

नियामक ने ऐसे 'लेबल' को भ्रामक बताया है। भारतीय खाद्य सुरक्षा और मानक प्राधिकरण ने कहा कि ये दावे खाद्य सुरक्षा और मानक अधिनियमके अनुरूप नहीं हैं। एफएसएसएआई ने कहा कि ए-1 या ए-2 दूध उत्पाद श्रेणी कभी अस्तित्व में नहीं थी और वैश्विक

स्तर पर भी यह प्रवृत्ति खत्म हो रही है। उसने जांच की है और पाया है कि ए-वन और ए-टू का अंतर दूध में बीटा-केसीन प्रोटीन की संरचना से जुड़ा हुआ है। खाद्य व्यवसाय परिचालकों का जिक्र करते हुए नियामक ने कहा कि एफबीओ को अपने उत्पादों से ऐसे दावों को हटाने का निर्देश दिया गया है।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक राजेश मीणा द्वारा अम्बर ऑफसेट प्रा. लि., डी एल टॉवर, 3-ए, विद्याआश्रम संस्थानिक क्षेत्र, जेएलएन मार्ग, जयपुर से मुद्रित एवं बी-66, कुसुम विहार, जगतपुरा, मालवीया नगर, जयपुर से प्रकाशित।
सम्पादक-राजेश मीणा, Email : sanjeevnitoday@gmail.com मो: 8094811115, (पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के चयन के लिए उत्तरदायी)